परिणय

वैवाहिक विषेशांक

द्वितीय अंक

प्रकाशक

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा
गुवाहाटी

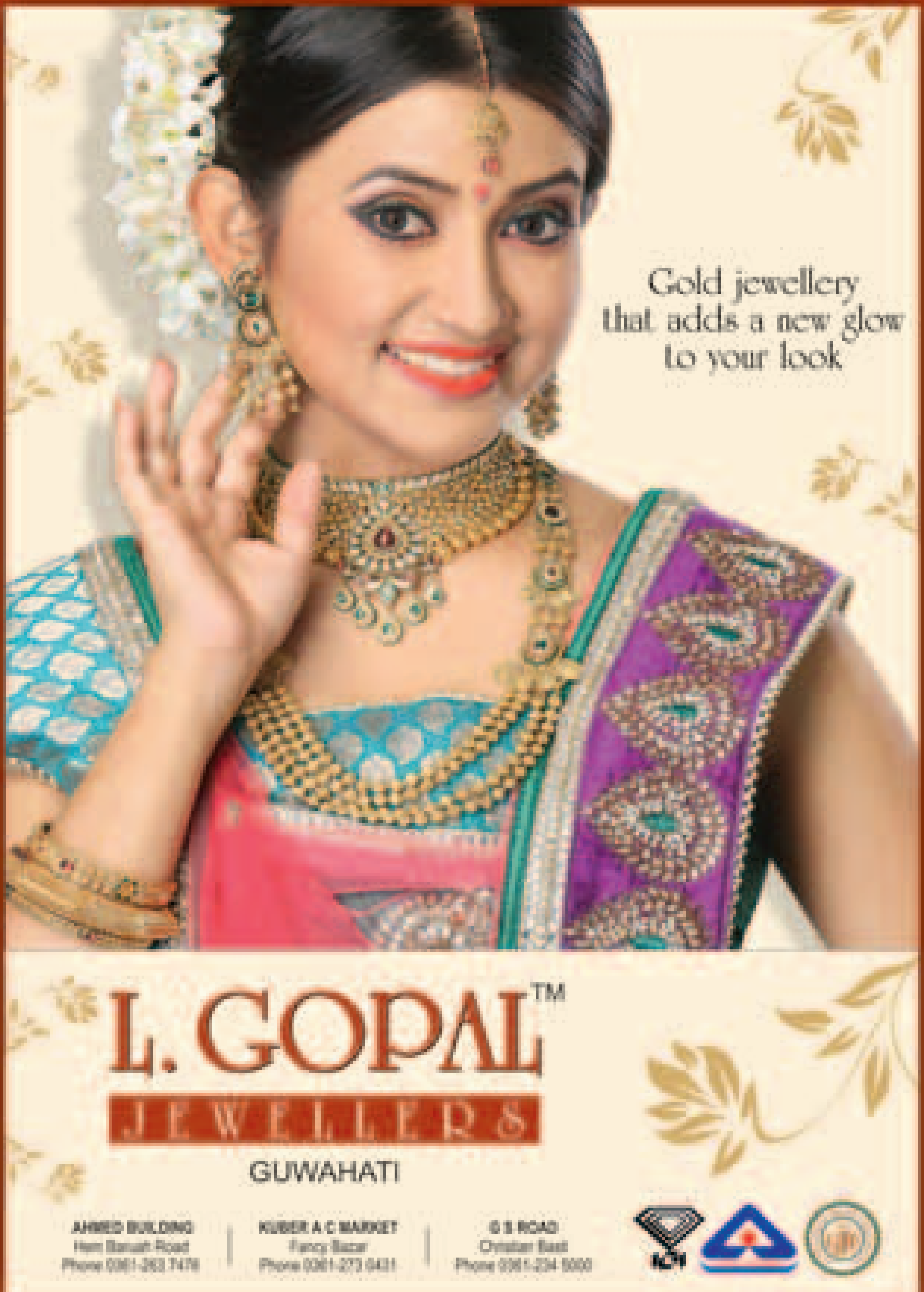
Gold jewellery
that adds a new glow
to your look
L. GOPAL™
JEWELLERS
GUWAHATI
AHMED BUILDING
Hem Baruah Road
KUBER A C MARKET
Fancy Bazar
G S ROAD
Christian Basti

परिणय

वैवाह्कि विषेशांक

द्वितीय अंक

:: सम्पादक ::

[illegible]

[illegible]

:: प्रकाशक ::

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा
गुवाहाटी

विषय-सूची

विवाह	13
पाणिग्रहण संस्कार (विवाह)	13
योग्य वर-वधु की तलाश में.....	14
शादियों में आडंबर : चिंतन चालू आहे	17
विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान है	19
विलुप्ती के कगार पर वैवाहिक परंपराएं	21
सम्भावित आधुनिक भारतीय समाज	24
टूटते वैवाहिक रिश्ते	27
शाखा की गतिविधियां - कैमरे की नजर से...	30-41
Shakha in NEWS	42-43
जैन विवाह विधि	44-53
विवाह समारोह संबंधित संपर्क सूत्र	54-58
चिरंजीव की पत्नी ही सौभाग्यवती क्यों होती है	61
वैदिक विवाह पद्धति राजस्थानी पृष्ठभूमि से	63-90
समाज के विवाह से जुड़ी कुछ नेग की परंपराएं	91
शादी-विवाह संबंधी कुछ रोचक जिज्ञासाएँ - विवाह एक पवित्र संस्कार क्यों ?	92
वैवाहिक की तैयारी में विशेष ध्यान देने योग्य बातें	95
शादी-ब्याह के अवसर पर गाये जाने वाले कुछ लोकगीत...	96-118

शुभकामना संदेश

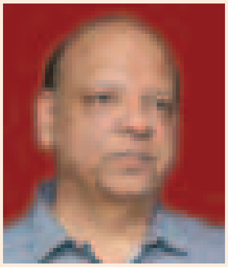

यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि मारवाड़ी सम्मेलन, कामरुप शाखा वैवाहिक रीति-रिवाज से सम्बंधित स्मणरिका परिणय का प्रकाशन करने जा रही है।

कामरुप शाखा जिसकी स्थापना विगत 2 वर्ष पूर्व ही हुई थी, नित्य नए आयाम स्थापित कर रही है। आरंभ काल से ही शाखा द्वारा समाज के योग्य वर-वधु के संबंध तय करवाने के उद्देश्य से किय जा रहे कार्य की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। आज समाज के लोगों को इस समस्या का उचित समाधान सम्मेलन के मार्फत ही नजर आ रहा है, जिसके लिए कामरूप शाखा अभिनंदन की अधिकारी है। साथ ही विगत दिनों शाखा ने अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का सफल आयोजन कर, न केवल अपनी सक्रियता का परिचय दिया है बल्कि प्रांत की श्रेष्ठ शाखाओं में अपना स्थान बना पाने में सफल रही है। इस हेतु शाखा के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को बधाई व हार्दिक शुभ कामनाएँ।

सम्मेलन की कामरूप शाखा प्रगति के पथ पर इसी प्रकार निरंतर अग्रसर रहे इसी शुभकामनाओं के साथ......

आप सभी का अपना
मधुसूदन सीकरिया
प्रांतीय अध्यक्ष

With best compliments from :

SHANTI OFFSET

Ultimate in Printing

• OFFSET • SCREEN • FLEX • DIGITAL

B. R. Phookan Road, Kumarpara, Near Panchali
Guwahati - 781009 (Assam)
Ph. : 0361-2480239, 2487698
E-mail : shanti.offset.guwahati@gmail.com

Associates :

Shanti EDUCATIONAL FOUNDATION

SHANTI junior

BLJ Publications

KIDZEE

शुभकामना संदेश

सर्व प्रथम मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा को सम्मेलन की पंचदशम अधिवेशन के आयोजन में सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

परिणय बंधन में आ रही समस्याओं के निवारण में कामरूप शाखा का प्रचार सराहनीय है तथा मैं उनकों आस्वस्त करता हूँ गुवाहाटी शाखा उनकों अपना सहयोग देती रहेगी।

'परिणय' के द्वितीय अंक में प्रकाशित होने वाली रचनाओं से समाज लाभान्वित होगा ऐसा मेरा विश्वास है। मैं संपादक मंडल को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हुँ।

राज कुमार रिंगानिया
अध्यक्ष
मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी शाखा

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि 'मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ' वैवाहिक रीति- रिवाज संबंधित स्मारिका प्रकाशित करने जा रही है।

आज के युग में इसकी अत्यन्त आवश्यकता, जरूरत महसुस होने लगी है, क्योंकि हम अपने त्योहार रीतिरिवाज, सगाई, शादी, गृह प्रवेश आदि अवसरों को पारंपरिक रूप से मनाना भूलते जा रहे हैं। हर अवसर पर यही कोशिश रहती है कि पूराने नियमों परंपराओं और तौर तरीकों को पूर्ण रूप से निभाया जाए। शादी-विवाह पर अगर पूजन इत्यादी संपूर्ण रूप से धार्मिक पद्धतियों के साथ सम्पन्न हो तो आनंद दुगुना और मन प्रफुल्लित हो जाता है।

युग परिवर्तन के साथ-साथ नव पीढ़ी को इन रीति रिवाजों और धार्मिक पद्धतियों का ज्ञान कम रह गया है तथा योग्य पंडितजनों का अभाव बड़ी परेशानी में डाल देता है, तब याद आती है वृद्ध माता बहनों की सलाह, जिनके सुझाव और सलाह के आधार पर ही रीति रिवाज संम्पन्न कराये जाते है। आज इन योग्य सलाह न मिलने का अभाव तथा अनेक उलझनों का सामना करना पड़ता है।

इन सब सुविधाओं और मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए आपने जो यह कदम उठाया है यह बहुत ही सराहनिय है। मेरी यही शुभकामना है कि भविष्य में यह पुस्तक एक ध्रुवतारे के समान समाज का पथ प्रदर्शन करें।

मंजू पाटनी
अध्यक्ष
मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा

अध्यक्ष की कलम से

समाज बंधुओं,

मैंने अपने कार्यकाल का लगभग एक साल पूरा कर लिया है। पिछले एक वर्ष में मेरी शाखा ने कई कार्यक्रम समाज और शाखा के हित में किए। कुछ कार्यक्रम मुझे विरासत में मिले, जिनमें से प्रमुख कार्यक्रम था ''परिणय बंधन'' जो मेरे भी दिल के करीब है।

इस प्रकल्प को नया आयाम प्रदान करने को लिए हम कटिबद्ध है और दूर-दराज तक यह प्रकल्प पहुंचे ऐसी व्यवस्था की जा रही है। छोटे शहरों और गांवों से ''परिणय बंधन'' जुड़े इसका प्रयास चल रहा है। ''परिणय बंधन'' संगोष्ठी 05-11-2017 को की गई जिससे इस मुहीम को नया बल मिलेगा और इस क्षेत्र के अनुभवी लोग जुड़ेंगे। शाखा की वेवसाइट भी चालु हो चुकी है ताकि जो समाज बंधु ''परिणय बंधन'' से जुड़ना चाहते है वे इस वेवसाइट के द्वारा जुड़ सकते है।

शाखा की नई कार्यकारिणी की जिम्मेदारी लेने के साथ साथ सर्वप्रथम हमारे समाज के लिये 7 दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया जो आज वृहद समाज के लिये एक नियमित योग केन्द्र में तब्दील होकर सुचारू रूप से चल रहा है। इस केन्द्र को चलाने हेतु श्री महेश योग समिति के योगाचार्य एवं योगाभ्याशी नियमित रूप से उपस्थित होकर योगा केन्द्र में योग प्रशिक्षण करवाते हैं। मैं उनका आभारी हुँ।

हम मारवाड़ी लोग मलूत: व्यापार से जुड़े होते हैं और जीएसटी एक ज्वलंत विषय है। मेरी कार्यकारिणी ने इस विषय पर भी अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए एक संगोष्ठी 17 जून 2017 को आयोजित की, जिसमें लगभग 700 लोगों ने हिस्सा लिया।

मसला प्राकृतिक आपदा का हो या शिक्षा की दीर्घकालिक समस्या का। मारवाड़ी सम्मेलन कामरूप शाखा ने अपनी छाप छोड़ी है। इस साल असम में बाढ़ की विभिषिका अन्य वर्षों से अधिक थी। शाखा ने मोरीगांव जिले में जाकर राहत सामग्री वितरित की।

शाखा ने गौहाटी गौशाला के पास चाबिपूल के निकट आठगांव चाबिपूल प्राथमिक विद्यालय को गोद लिया और लगभग तीन लाख से अधिक की राशि खर्च कर पानी, शौचालय, बाउंड्री, हरियाली हेतु पौधे, विद्यालय भवन में रंग-रोगन आदि की व्यवस्था की तथा अलमारी, कुर्सी, टेबल आदि वस्तुएं प्रदान की। शाखा स्वाधीनता दिवस एवं गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम इसी स्कूल के बच्चों के साथ प्रांतीय पदाधीकारीयों की मौजुदगी में जोर-शोर से मनाया करता है।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के पंचदशम् प्रांतीय अधिवेशन के दौरान शाखा को विभिन्न सामाजिक कार्य हेतु 4 प्रांतीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

शाखा सचिव श्री निरंजनजी सीकरिया का अद्वितीय सहयोग मुझमें नयी ऊर्जा को जन्म देता है। अन्य सभी सदस्यों का सहयोग मेरी शक्ति है। आप सबका मार्गदर्शन, मुझे आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने में सहायक सिद्ध होगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

आपका

पवन जाजोदिया

अध्यक्ष, मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा

संपादकीय

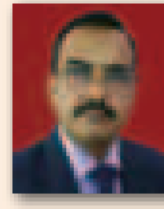

'परिणय' का द्वितीय अंक आपके हाथों में है। 05-11-2017 को 'परिणय बंधन' पर संगोष्ठी में पूर्वोत्तर के विभिन्न भागों से आए लोगों सहित गुवाहाटी के गणमान्य महानुभावों ने अपने विचार रखे, उसी दिन शाखा की वेबसाइट www.sammelankamrupsakha.com भी लांच की गई थी।

वैवाहिक संबंधों के मायनों में विवाह में आ रही दिक्कतों के समाधान में अपनी भूमिका को स्वीकार करते हुए मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ने अपने गठन के प्रथम वर्ष से ही अपने प्रयास आरंभ कर दिए थे। श्री प्रदीप जैन सहित अन्य चार श्री विमल कांकरा, श्री मनोज खेमका, श्री अशोक अग्रवाल (सीए) एवं श्री प्रदीप जाजोदिया ने 'परिणय बंधन समिति' में संयोजक के दायित्व का निर्वहन किया और इस आंदोलन को इस मुकाम तक पहुंचाया। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के पंचदशक अधिवेशन में श्री प्रदीप जैन को उनके उत्तम काम के लिए पुरस्कृत किया गया। प्रदीपजी को बधाई। शाखा ने अन्य चार और भी पुरस्कार उक्त प्रांतीय अधिवेशन में अर्जित किए जिसके लिए शाखा के सभी पदाधिकारी, कार्यकारिणी, विभिन्न प्रकल्पों के संयोजक और सभी कर्मठ सदस्यगण बधाई के पात्र है। वर्तमान में परिणय बंधन समिति में बदलाव हुए है, नई समिति को पूर्ण विश्वास है कि पुराने अनुभवी लोगों का मार्गदर्शन उनकों मिलता रहेगा और यह प्रकल्प नई ऊंचाइयों को छुएगा।

उपरोक्त वर्णित वेबसाइट के द्वारा, मामूली तकनीकी शर्तों के साथ, वेबसाइट पर विवाह योग्य उम्मीदवारों के बायोडाटा और फोटो अपलोड किए जा सकते हैं, यह प्रयास नया-नया है अत: मूल-भ्रांति हो सकती है। सुझावों और आलोचनाओं का स्वागत है।

संपादक मंडल इस अंक में छपी किसी भी रचना, उसमें लिखे विचार, आंकड़े, रीति-रिवाज की प्रस्तुति में किसी कमी-वेसी के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। संपादक मंडल रचनाकारों, संकलनकर्ताओं, विज्ञापन दाताओं, प्रिंटर, डिजाइनर सहित उन सभी के प्रति अपना आभार प्रकट करता है, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से 'परिणय' के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है।

भरपूर कोशिश की गई है कि कोई त्रुटि न रहे परंतु मनुष्य भूलों का पुतला है। जाने-अनजाने रही भूलों के लिए क्षमा याचना सहित आग्रह है की गलतियों को हम तक पहुंचावें ताकि भविष्य में उनकी पुनरावृति न हो।

आपके

विनोद कुमार लोहिया, संपादक

रतन कुमार अग्रवाल, सह-संपादक

Executive Committees

Pawan Jajodia
President

Sampat Mishra
Immediate Past President

Vinod Kumar Lohia
Vice President

Bijay Bhimsaria
Vice President

Niranjan Sikaria
Secretary

Dinesh Gupta
Treasurer

Anuj Choudhury
Joint Secretary

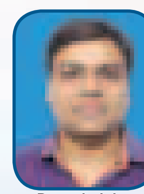

Deepak Jain
Joint Secretary

Ajit Kumar Sharma
Member

Bimal Agarwalla
Member

Dilip Agarwal
Member

Niraj Jain
Member

Prabhu Dayal Jain
Member

Punit Agarwal
Member

Rajiv Agarwal
Member

Ratan Kumar Agarwala
Member

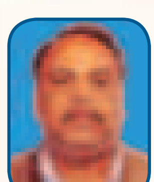

Sanjay Kumar Khetan
Member

Vijay Kumar Poddar
Member

Other Committees

Sadashyata Vikash Samiti	Shri Shankar Lal Bhajanka
	Shri Rajiv Agarwal
Juthan Virodhi Abhiyan Samiti	Shri Prabhu Dayal Jain
	Shri Shankar Lal Bhajanka
	Shri Bharat Jain
Bandhutva Vikash Samiti	Shri Ratan Kumar Agarwala
	Shri Niraj Jain
Parinay Bandhan Samiti	Shri Pradip Jajodia
	Shri Manoj Khemka
	Shri Vinod Kumar Lohia
	Shri Mrinal Jajodia
	Shri Anuj Choudhury
Yog Samiti	Shri Dinesh Gupta
	Shri Sanjay Kumar Khetan

पं. कल्याण सहाय बजरंगलाल दाधीच
मो.: 98640-61074, 94351-18627

TOPCEM®
CEMENT
Mazbooti ka bharosa...hamesha

RAJASTHAN LIME UDYOG
CERAMIC STUDIO
All kinds of:
Tiles
Sanitary Ware
Bath Fittings
Rain Showers
Shower Panels
Shower Enclosures
Bath Accessories
Whirlpools & Bathtubs
CPVC, UPVC Pipes & Fittings
PVC Water Storage Tanks
SWR & Plumbing Pipes
Agricultural Pipes
All Variety Doors
Plywood & Blockboards
Facebook
www.facebook.com/RajasthanLimeUdyog.Official
Instagram
www.instagram.com/rajasthanlimeudyog
Display 1:
Display 2:
Head Office

"विवाह"

विवाह के लिए आवश्यक है श्रद्धा, विश्वास, स्नेह। जहां ये तोनों गुण है, वहां सहनशीलता तो आ ही जाएगी। विभिन्न जातियों में विवाह के नियमों में थोड़ा बहुत ही अंतर होता है और इन नियमों का पालन करना कोई बड़ी बात नहीं और पालन भी करना चाहिए, ताकि अपने अपने समाज को संस्कृति एवं संस्कार बने रहे।

सर्वप्रथम इस तथ्य को स्वीकार करना परम आवश्यक है कि विवाह दो-आत्माओं का मिलन है न कि शरीर का मिलन।

पहले शादी विवाह के नाम से आनंद की अनुभूति होती थी और ज्यों-ज्यों लड़के-लड़की घर में बड़े होते थे तो माता-पिता योग्य वर-कन्या की चयन की तैयारी के उत्सवपूर्वक लगते थे - क्योंकि यह मांगलिक उत्सव एवं पूर्णता-प्रदान करने की जिम्मेदारी का पर्व था। आजकल भय का वातावरण बन जाता है, क्योंकि सहनशीलता के अभाव में श्रद्धा विश्वास स्नेह छू-मंतर हो जाता है और रिश्ते निभते नहीं है।

अत: माता-पिता को बेटी को बचपन से ही इन गुणों के सिंचन का कार्य करना चाहिए। समाज परिवार एवं राष्ट्र की व्यवस्था में महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। सामाजिक संस्थाओं में भी विभिन्न कार्यक्रम के अलावा महिलाओं को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता के शिविर भी लगाने चाहिए। बच्चों के संस्कारों के प्रति जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। पाश्चात् संस्कृति ने भारतीय संस्कारों को जड़ से उखार फैंकने का प्रयास किया है, जो हमारे लिए घातक है। मोबाइल से होने वाले दुस्प्रभाव नें जीना दूर्भर कर दिया है। सामाजिक संस्थाएं अपनी जिम्मेदारी का शत-प्रतिशत निर्वहन करें तो वैवाहिक जीवन को व्यवस्थित एवं खुशहाल बनाने में अहम् भूमिका निभा सकती हैं।

"पाणिग्रहण संस्कार" (विवाह)

मन समझो दो जिस्में का मिलन
बल्कि दो आत्माओं का मिलन हैं-
विवाह
शब्द उच्चारण मात्र से
लगता है मानो करना पड़ेगा निर्वाह (नि:+वाह)
वाह! वाह! दोनों शब्दों में है-
कैसे ?
विवाह के बाद
अपने सम जाना दूजे को
तो आई-समता
किया प्रेम तो हुआ समर्पण
पाई प्रभुता
तो हुई वाह! वाह! विवाह से।
फिर
गृहस्थ धर्म में हुए अवतरित
करने को निर्वाह
जब सफल हुए चारों वर्णाश्रम
तब पाओगें निर्वाण चूंकि
सफल हुआ निर्वाह
तो फिर वाह ! वाह! हुई निर्वाह से।
लगती है एक ही चाबी
दोनों तालों में (विवाह, निर्वाह)
दोनो तालों की चाबी है-
प्रेम और विश्वास
मन समझो दो जिस्मों का मिलन
दो आत्माओं का मिलन है विवाह
जिसमें
ले गीता का सार
करना है निर्वाह

प्रेमलता खंडेलवाल

परिणय बंधन की सफलता का श्रेय मारवाड़ी सम्मेलन को, योग्य वर-वधु की तलाश में परेशान अभिभावक

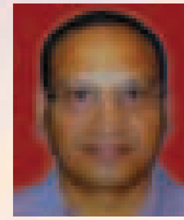

रवि अजितसरिया
गुवाहाटी

भारतीय संस्कृति और विचारधारा में शादी जैसे रिश्ते को पवित्र और एक पाक माना गया है। दम्पत्य जीवन के अपने सूत्र, अपने दर्शन और अपने तर्क होतें है, जिन्हें शब्दों में बयां करना उतना ही मुश्किल है, जितना पानी को मुट्ठी में बंधना। हर तरह के द्वंद्व, आत्मसमर्पण और जीवन की राह में बहने वाली अनगिनत लहरें, जिसके उपर चढ़ कर एक दम्पति पूरी जिंदगी गुजार देते हैं। एक शादी के सिद्धांतों की बात करें, तब पाएंगे कि भारतीय विचारधारा इस बात को गहराई से मानता है की वर-वधु के चुनाव में 36 गुणों को मिलाने की परंपरा है, जिससे भविष्य काल में दांपत्य जीवन में कोई परेशानियां नहीं आये। इसलिए दो जनों को मिलाने के लिए जन्म कुंडली मिलाने की प्रथा आज भी बदस्तूर जारी है। गण, ग्रहमैत्री, नाड़ी, वैश्य, वर्ण, योनी, तारा और भकूट, इत्यादि, कुंडली में इन सभी को मिलाकर कुल 36 गुण होते हैं। इनमे से जितने अधिक गूण लड़के और लड़की के मिलते हैं, कहते है कि उन दोनों की शादी उतनी ही सफल होती हैं। सफेद घोड़े पर सवार राजकुमार का सपना देखते अभिभावक, कुंडली मिलाने के अलावा, लड़कों में परिवार, खानदान और चाल-चलन जैसे गुण भी देखतें है। शादियों पर आधुनिकता का तड़का लगने से अब गुण मिलना ही काफी नहीं है। अभिभावक हर तरह से संतुष्ट होने के बाद ही अपने बच्चों की शादी एक अनजान से करते है। इतना ही नही शिक्षा के प्रचार -प्रसार के बाद, अब शिक्षित बच्चें, अपनी पसंद के साथी ढुंढ़ने में लगे हुए है। इसमें कुंडली गुण, दोष सब अलग हट जातें है, और फिर पुराणी कहावत लड़का-लड़की राजी, तब क्या करेगा काजी, की तर्ज पर उनकी शादी हो जाती है। खैर, गन्धर्व विवाह आज की हमारी चर्चा का विषय नहीं है, हम बात कर रहे है आज के आधुनिक जमाने में शिक्षित बच्चों की शादी होने में आ रही दिक्कतों की। शिक्षा के महत्व को जब मारवाड़ी समाज के अभिभावकों ने समझ कर अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया, तब बच्चे बड़ी से बड़ी परीक्षा में उत्तीर्ण होकर डॉक्टर, इंजिनियर तो बन गए, पर उनके वैवाहिक संबंधों के होने में दिक्कतें आने लगी, जिससे अभिभावक परेशान होकर इधर-उधर शादी करवाने की वेबसाइटों पर नजर गड़ाने लगे। चूंकि पूर्वोत्तर के अभिभावकों को उत्तर भारत और दक्षिण के वर चुनने में थोड़ी असहजता महसूस होती है, वे अपना दायरा पूर्वोत्तर और कोलकाता तक सिमित करने लगे। इसमें उनकी दिक्कतें और बढ़ी, जब बच्चे जॉब वैगरह करने लगे। ऑल इंडिया ट्रांसफरेबल जॉब में कार्य करने की

वजह से और उनके कर्म क्षेत्र का ठिकाना सटीक नहीं होने से अभिभावकों को यह परेशानी आने लगी कि विवाह के पश्चात लड़का कहां और किस हाल में रहेगा। ऐसे अनगिनत बच्चे हैं, जिनकी तनखाह छह फिगर में है, पर उनकी विवाह सुनिश्चित होने में दिक्कतें आ रही है। हो सकता है कि यह एक आधुनिक जमाने का द्वंद्व हो, पर इससे जूझना भी आज के अभिभावकों के लिए आसन नहीं रहा है।

यह परेशानी इसलिए भी आई है, क्योंकि गांव और शहरों में समाज के लोगों का एक समय जो तंत्र था, वह चरमरा कर टूट गया है, जिसके चलते बच्चों के रिश्तों के बारे में सटीक खबरें नहीं आती। लोग मैरिज ब्यूरो की शरण भी लेने लगे हैं। फिर बड़े शहरों में रिश्ते के लिए पर्याप्त और सटीक खबरें जुगाड़ने में अभिभावकों को असुविधा आने लगी, जिसके चलते आज गांव और शहरों में बच्चें अपने योग्य साथी की तलाश में बैठें है। समय के साथ जब गांवों से शहरों की और लोगों का पलायन शुरु हुआ, तब शहरों में शिक्षा और रहन और चिकित्सा की सुविधा गावों से अधिक होने लगी सथा ही आर्थिक संपन्नता और आर्थिक विस्तार के आंकड़े भी शहर एक उचित ठिकाना लोगों को दिखाई देने लगा। इन सब के बीच, समाज की प्रतिनिधि संस्था मारवाड़ी सम्मेलन की कामरूप शाखा ने समाज के बच्चों के रिश्ते करवाने का बीड़ा उठाया है। मारवाड़ी सम्मलेन की कामरूप शाखा ने सन 2015 में संपत मिश्र की अध्यक्षता में एक वैवाहिक डाटा बैंक बनाने का निर्णय लिया था। जब डाटा बैंक कार्यक्रम सफल नहीं हो पाया, तब एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाने का निर्णय वर्ष 2016 में लिया गया। परिणय बंधन नामक इस व्हाट्सएप ग्रुप में विवाह योग्य बच्चों के बायो-डाटा और फोटो अभिभावकों की सहमती से डाले गए। इस ग्रुप में अभिभावक अपने बच्चों के बायोडाटा खुद ही डालते है, जिसके चलते, समिति का कार्य और भी आसान हो जाता है, क्योंकि बायोडाटा में डाली गयी जानकारी की जिम्मेवारी अभिभावकों की खुद की रहती है। तब से अब तक इस ग्रुप में समूचे भारतवर्ष से 500 से भी ज्यादा बायो-डाटा आ चुके हैं। दिन की समीक्षा की जाती है और व्हाट्सएप ग्रुप की अधिकतम लिमिट होने के चलते सिमित बायो-डाटा ही लिए जातें है। बचे हुए बायो-डाटा को वेटिंग लिस्ट में रखा जाता है। अगर कोई पूछे कि अब तक इस ग्रुप की सफलता के आंकड़े क्या है, तब संचालन समिति के प्रमुख सदस्य प्रदीप जैन बताते हैं कि समिति को लोगों का विपुल समर्थन प्राप्त हुआ है, जिसके चलते अब तक वे लोग अपने ग्रुप के माध्यम से 28 बच्चों का रिश्ता करवाने में सफल हो चुके हैं। यह पूछे जाने पर कि सम्मलेन का रिश्ते करवाने में क्या भूमिका है, तब वे कहते हैं कि ग्रुप के द्वारा वर-वधू दोनों पक्षों के बायो-डाटा उपलब्ध करवाए जाते हैं, और रिश्तों की शर्तें, बातचीत और संपर्क दोनों पक्ष खुद ही करते हैं। इसमें समिति मात्र एक सुविधा प्रदाता है, जहां लड़के और लड़कियों के बायो-डाटा एक ही जगह उपलब्ध करवाएं जातें है। सम्मलेन एक सीमित दायरे में रहकर या कार्य करता है। इस समिति में पांच सदस्य हैं, जिनमें प्रदीप जैन, प्रदीप जाजोदिया, विमल शर्मा, मनोज खेमका और अशोक अग्रवाल (सी.ए.) हैं। समिति के सदस्य, अभिभावकों के निवेदन पर दोनों पक्षों को एक छत पर लाने का प्रयास भी करतें हैं, जिसके बाद दोनों पक्ष, अपने निर्णय खुद लेने के लिए स्वतंत्र रहतें हैं। ग्रुप की दिक्कतों के बारे में प्रदीप

जैन बताते हैं कि शुरु-शुरु में सिर्फ लड़कों के बायो-डाटा आए और लड़कों के सत्तर बायो-डाटा आने के बाद एक लड़की का बायो-डाटा आया, जिससे भारी निराशा हाथ लगी। लड़कियों के बायो-डाटा नहीं आने का एक कारण वे बताते हैं कि समाज में अभी भी लड़कियों के बायो-डाटा देने में अभिभावक अनजान कारणों से कतराते हैं। जब समिति के सदस्यों ने समाज के प्रबुद्ध लोगों की एक सभा बुलाई, तब तीस लोगों ने एक सुर से इस ग्रुप को दुबारा से शुरू करने का वकालत की और 2016 में विजयादशमी के दिन से यह ग्रुप परिणय बंधन नामक व्हात्सप ग्रुप बन कर सामने आया, जिसको लोगों का भारी समर्थन मिला है। यहां गौरतलब है कि मारवाड़ी सम्मलेन इस ग्रुप के सदस्यों के लिए कोई फीस नहीं लेता। गौरतलब यह भी है कि व्हाट्सएप ग्रुप की एक सीमा होती है, जिसमे अधिकतम 256 सदस्य ही एक समय में ग्रुप में रह सकते हैं। समिति के पास लगातार ग्रुप से जोड़ने के लिए निवेदन आने से, अब समिति ने परिणय ग्रुप के कार्य को विस्तार और गति प्रदान करने के लिए एक एप्प बनाने का फैसला लिया है, जिसके लिए प्रांतीय इकाई ने अपने कोष से 21 हजार रुपए की सहयोग राशि भी उपलब्ध करवाई है। मारवाड़ी सम्मलेन ने यह कार्य उस समय शुरु किया है, जब पढ़े-लिखे बच्चों के अभिभावक अपने बच्चों के लिए उचित साथी ढूंढ़ने में परेशान हो रहें है। स्थितियां सकारात्मक नहीं होने से, अभिभावक, मारवाड़ी सम्मलेन के इस कदम को अंधेरे में रौशनी की तरह देख रहें है। अभिभावकों को इस बात पर संतोष है कि मारवाड़ी सम्मलेन जैसी समाज की प्रतिनिधि संस्था, पूरी जिम्मेवारी से यह कार्य कर रही है। परिणय बंधन जैसे व्हाट्सएप ग्रुप के गंभीरता से कार्य करने से व्हाट्सएप जैसी सोशल प्लेटफोर्म का एक सकारात्मक उपयोग हो रहा है। इस ग्रुप के संचालन समिति ने सामाजिकता के अपने स्वरुप को नहीं खोते हुए, ग्रुप के लिए कई दिशा-निर्देश भी जारी किये हुए है, जिसके चलते ग्रुप में अनुशासन बना हुआ है। ग्रुप से किसे जोड़ने और हटाने का अंतिम निर्णय संचालन समिति लेती है। सम्मलेन के इस प्रयास से तेज और भाग-दौड़ की इस दुनिया में एक नई आशा जगी है, जिससे अभिभावकों को अपने बच्चों के जीवन के एक कठिन निर्णय लेने में सहूलियत हो सकती है।

अब इस ग्रुप ने एक कदम आगे बढ़ते हुए समाज के बुद्धिजीवियों, सामाजिक संगठनों के सदस्यों और मारवाड़ी सम्मलेन के पदाधिकारियों को लेकर इसी विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया है, जिसमे इस व्हाट्सएप ग्रुप को एक बड़ा रूप देने पर चर्चा होगी। मारवाड़ी सम्मलेन की कामरूप शाखा के अध्यक्ष पवन कुमार जाजोदिया कहते हैं कि इस सम्मलेन से सभी लोगों की इस ग्रुप में भागीदारी बढ़ेगी और साथ ही में अगर इस ग्रुप को एक वेबसाइट की शक्ल दी जाए, तब इसके रख-रखाव और संचालन के लिए क्या-क्या नियम बनाने चाहिये, इस पर इस सम्मलेन में व्यापक चर्चा होगी। गौरतलब है कि पूर्वोत्तर में पहली बार इस तरह का सम्मलेन आयोजित किया गया है।

(लेखक गुवाहाटी में रह कर स्वतंत्र लेखन करते है।)

पता : हार्डवेयर हाउस, ५४ए, हेम बरूआ रोड, फैंसी बाजार, गुवाहाटी - ३८१०००१,

फोन : ०९४३५० १९८८३

शादियों में आडंबर : चिंतन चालू आहे

विनोद रिगांनीयाँ
गुवाहाटी (असम)

रिपोर्टिंग के दौरान अंतर्मुखी होने से काम नहीं चलता। खासकर कहीं बाहर जाने पर। इसलिए ईटानगर में उस आदी जनजाति के युवक से दोस्ती बढ़ाने की गरज से मैंने इधर-उधर की बातें शुरु की बातें शुरू की। पैसे देने के लिए उसने बटुआ निकाला तो देखा कि किसी महिला की फोटो है। मैंने पूछा- आपका वाइफ? उसने कहा, हां मेरा सबसे प्यारा वाइफ। सबसे प्यारा मतलब। उसने बताया कि उसकी चार पत्नियां है। तीन शादियां उसने पिता की इच्छा से की, और यह चौथी शादी अपनी मर्जी से की। उनकी जनजाति में किसी व्यक्ति का मान-सम्मान, रुतबा इस बात से मापा जाता है किउसके कितनी पत्नियां हैं। कहने की जरुरत नहीं कि उनके यहां बहुविवाह की इजाजत है। लगभग हर समाज में किसी समय पत्नियों और गुलामों की संख्या से आदमी का रुतबा मापा जाता था। बाईबिल और हदीस में ऐसे प्रकरण भरे पड़े हैं, जिनमें एकाधिक पत्नियों और गुलामी की संख्या के साथ आदमी की सामाजिक हैसियत जुड़ी होने के प्रसंग आए हैं। आज लगभग हर समाज में बहुविवाह और गुलाम रखने की अनुमति नहीं है।

इस प्रकरण की याद आई उड़ीसा हाई कोर्ट के अधिवक्ता रमेश अग्रवाल द्वारा शादियों में फिजूल खर्ची पर मेरे लेख की प्रतिक्रिया में फेसबुक पर लगाए गए इस सवाल के कारण कि किसी के पास पैसा है तो अपनी मर्जी से खर्च करने का भी उसे अधिकार है। बाहर से किसी को बोलने का क्या अधिकार है? मुझे अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय युवक का प्रसंग इसलिए याद आया कि हमारे अधिकांश क्रिया-कलाप पर सामाजिक नियंत्रण रहता है। लेकिन हम उसके इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हमें उस समाजिक शृंखला का अनुभव तक नहीं होता है। उल्टे हम उस सामाजिक नियंत्रण के अंदर अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं। आदी जनजाति में रुतबा दिखाने के लिए बहुविवाह की अनुमति है, इसलिए उस कबीले के धनी लोग इस अनुमति का फायदा उठाते हुए शान से एकाधिक विवाह करते हैं और समाज में छाती फुलाकर चलते हैं। क्या हमारे समाज में किसी के पास बैसा हो तो वह बहुविवाह कर सकता है? आप कहेंगे कि यह गैरकानूनी है। लेकिन कानून तो हिंदू धर्म के वर्तमान रीति-रिवाज को देखते हूए बाद में बना है। कानून न भी रहे तो क्या समाज सिर्फ इसलिए बहुविहा की अनुमति दे देगा कि किसी के पास पैसा है। इन पंक्तियों से हम सिर्फ यह दिखाना चाहते हैं कि किस तरह हमारे क्रिया-कलापों पर सामाजिक प्रतिबंध है और उन्हें धनी और गरीब

हर किसी को मानकर चलना पड़ता है। अब सवाल उठता है कि क्या शादियों के अवसर पर होने वाली फिजुलखर्ची और आडंबर समाज के लिए अहितकारी है? इस संबन्ध में कई तरह के सवाल पूछे जाते हैं।

प्रश्न 1 : आधुनिक अर्थव्यवस्था उपभोग पर निर्भर है। यदि लोगों ने शादियों में खर्च कम कर दिया तो क्या अर्थव्यवस्था धीमी पड़ जाने का खतरा नहीं है?

उत्तर : यह सही है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था उपभोग पर निर्भर है। उपभोग मध्य वर्ग या उच्च वर्ग करता है। उच्च वर्ग संख्या में सीमित है, इसलिए अर्थव्यवस्था धीमी पड़ जाने का खतरा नहीं है?

उत्तर : यह सही है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था उपभोग पर निर्भर है। उपभोग मध्य वर्ग या उच्च वर्ग करता है। उच्च वर्ग संख्या में सीमित है, इसलिए अर्थव्यवस्था का सारा उद्यम मध्य वर्ग को तरह-तरह के उपभोगों की ओर आकर्षित करने पर केंन्द्रित रहता है। आज सिर्फ अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए बाजार अनावश्यक और हानिकारक पेय पदार्थों, खाद्य पदार्थों, प्रसाधन सामग्रियों से पटा

पड़ा है। बात लोगों के जीवन को ज्यादा आरामदायक बनाने की की जाती है, लेकिन मतलब होता है सिर्फ अपने प्रोडक्ट को मार्केट में ठेलने का। आज शाही शानौ-शौकत से शादियां करवाने वाली कंपनियां बाजार में उतर गई हैं।

इस अनावश्यक उपभोग के दो पहलू हैं। एक है विकसित देशों मे होने वाला अनावश्यक उपभोग। वहां गरीब वर्ग नहीं है, या उसे राज्य द्वारा पर्याप्त मदद मिल जाती है, फिर भी अनावश्यक उपभोग प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों पर दबाव पैदा करता है, यहां तक कि पृथ्वी के आने वाली पीढ़ियों के रहने लायक नहीं रहने का खतरा पैदा हो गया है। दूसरा पहलू है, भारत जैसे देश में अनावश्यक उपभोग का। हमारे देश में भले 30 करोड़ का मध्य वर्ग पैदा हो गया है, फिर भी यहां संसाधनों की कमी है। इसलिए अर्थव्यवस्था को गति देने के नाम पर हम अनावश्यक और संसाधनों को बर्बाद करने वाले (टनों खाना नालियों में बहाया जाना) उपभोग को बढ़ावा नहीं दे सकते। हमारी अर्थव्यवस्था की मुख्य दिशा ज्यादा बचे और उस बचत के पैसे का बुनयादी ढांचे को विकसित करने और उद्योग में निवेश करने की ओर होनी चाहिए।

प्रश्न 2: क्या आज के युग में सामाजिक नियंत्रण संभव है?

उत्तर : जिन जातियों में जाति पंचायतें आज भी सक्रिय हैं, वहाँ इस तर के नियंत्रण आज भी संभव हैं। हमने पिछले सप्ताह गुर्जर पंचायत का जिक्र किया था, जिसने अपनी जाति को अंदर इस तरह के प्रतिबंध लागू किए हैं। इसके अलावा जहां आधुनिक शैली के संगठन सक्रिय है, यदि उन्हें पंचायतों जैसी मान्यता हासिल है, तो उनके माध्यम से भी इस तरह के नियंत्रण संभव हैं। याद रखना होगा किशादियों में आडंबर के विरुद्ध लड़ाई आधुनिक अर्थव्यवस्था की इस समय जो दिशा है उश दिशा के विरुद्ध लड़ाई है। यह उपभोगबाद का आक्रामक प्रचार करने में नियोदित विज्ञापन कंपनियों, विशाल कारपोरेशनों के सथा लड़ाई है। इसके लिए मानसिक तैयारी की भी पर्याप्त महत्व देना होगा। उड़ीसा को रमेश अग्रवाल ने जैसा बुनियादी सवाल पूछा है, वैसे सवाल आते रहने चाहिए ताकि हम इस मुद्दे पर अपनी वैश्विक दृष्टि को साफ रख सकें।

विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान है

कपूरचंद जैन पाटनी
गुवाहाटी

आजकल हमारे समाज में विजातीय विवाह बहुत होने लगे हैं। एक आनुमानिक आंकड़े के अनुसार जैन समाज के प्राय: २५ प्रतिशत विवाह अन्य जातियों में या जैनेरल समाज में होते हैं। समस्त समाज के लिए यह एक अति चिंतनीय विषय है। इसके अलावा एक और चिंतनीय विषय है- वह है विवाह के एक-दो वर्ष बाद ही तलाक हो जाते हैं। तलाक के पश्चात् लड़के-लड़कियां दूसरा विवाह भी कर लेते हैं। इन समस्याओं के साथ विधवा विवाह की संख्याओं में भी अभिवृद्धि हो रही है।

जब समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति जेनेतर विवाहों के बारे में या तलाक के बारे में या विधवा विवाह के बारे में आपत्त करते हैं तो यहां तक दिया जाता है कि विवाह एक सामाजिक अनुष्ठान है - यह कोई धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। जिस प्रकार समाज अपने सुविधा के अनुसार समय-समय पर लौकिक नियम बना लिया करता है, वैसे ही जिस समय जैसी आवश्यकता समझी जाती है, उसी प्रकार विवाह की पद्धति प्रचलित कर ली जाती है। इसलिए कभी कन्याओं का विवाह होता है, कभी विधवाओं का भी विवाह कहलाता है। कभी पसन्द नहीं होने पर किया हुआ विवाह रूप पति-पत्नी संबंध छोड़ा भी जा सकता है, फिर पसंदगी विवाह के लिए किसी प्रकार का कोई खास बंधन नहीं हो सकता, जब जैसी आवश्यकता दिख पड़ती है, तब वैसे नियम परिस्थिति के अनुसार बना लिए जाते है।

अब यहां पर हम इन बातों पर शास्त्राधार से विचार करते हैं। जैन सिद्धांतकारों के बताया है कि विवाह सामाजिक नहीं, किंतु वह धार्मिक संस्कार है। यदि विवाह सामाजिक पद्धति समझा जाए तो शास्त्रों में इसकी एक ही नियमित व्यवस्था नहीं मिलती। परंतु महापुराण, चारित्रार, यशस्तिलक चंपु आदि सभी ग्रंथों में विवाह का एक ही लक्षण कन्यावरण से किया गया है और विवाह की स्वरूप सामग्री सब एक रूप से ही पायी गई है।

चारित्र मोहोदय और साता वेदनीय कर्म के उदय से कन्या वरण विवाह कहलाता है, यह लक्षण श्लोकवार्तिक, राजनार्तिक, सर्वार्थसिद्धि आदि सभी सिद्धान्त ग्रंथों में बताया गया है कि विवाह सामाजिक होता तो शास्त्रों में आचार्य उसका नियमित लक्षण नहीं करते, जैसे कपड़े पहनने के कोई खास नियम ग्रंथकारों नें नही बताया है कि अंगरखा ही पहना जाए, कुर्ता, कोट, कमीज आदि नही पहनी जाए, कारण ये सब लौकिक बाते हैं। इसलिए धर्म में जिस रूप से कोई बाधा नहीं आए। उस प्रकार उन्हें परिस्थिति के अनुसार कभी गरम, कभी ठंडे वस्त्रों के रूप में बदले जाने में कुछ हानि नहीं होती, इस प्रकार विवाह का उद्देश्य नहीं हैं। उसका लक्षण सिद्धांतकारों ने एक में नियत कर दिया है, वह लक्षण कैसी भी परिस्थिति क्यूं न हो, एक ही रहेगा। यदि विवाह का लक्षण परिस्थिति के अनुसार बदला जाता है, यह माना जाएगा तो फिर ब्रह्मचर्य व्रत का लक्षण और उसके विवाहकरण आदि अतिचार भी परिस्थिति के अनुसार बदलते हुए बनाने पड़ेगें, फिर तो निरतिचार प्रतिमाओं को क्रम-विधान आदि सबका परिवर्तन हो जाएगा। क्योंकि पर विवाह करण अतिचार ब्रह्मचर्य व्रत का है, बह्मचर्य प्रतिमा का पालन तव कोटिसे निरतिचार ही होता है। इस प्रकार का विवेचन अतिचारों, नियति आदि के बिना नहीं हो सकता। इसलिए पर विवाह करण आदि में

जो विवाह शब्द हैं, उसका लक्षण एक नियत रूप में स्वीकार किये बिना श्रावक के व्रतों का कोई स्वरूप ही नहीं बन सकता। दूसरे गृहस्थ को एकदेश ब्रह्मचर्य व्रत का धारी बताया गया है। स्वदार संतोष एवं परदार निवृत्ति का एक नियत लक्षण स्वीकार किये बिना देश ब्रह्मचर्य व्रत का स्वरूप ही सिद्ध नहीं हो सकता। कारण स्वदार पदों की व्याख्या विवाह से संबंध रखती है, इसलिए विवाह का लक्षण शास्त्र विधि से नियत है, वही हो सकता है। जब शास्त्र विधि से विवाह का लक्षण सिद्धान्त रूप से नियत है तो विवाह को सामाजिक नहीं माना जा सकता। वह धार्मिक ही सिद्ध होता है।

विवाह धार्मिक है, वह धर्म विधि से ही होता है, इस बात को सागारधर्मामृत में और भी स्पष्ट कर दिया गया है, इस ग्रंथ के एक श्लोक में धर्म विधि से अर्थात् आर्टमार्ग विहित धर्म विधि से कन्या का पाणिग्रहण योग्य साधना वर के साथ कन्या का पिता कराता है, यह बात स्पष्ट की गई है। यदि विवाह लौकिक पद्धति होती तो श्रावकों के आचार ग्रंथों में उसे धर्म निचिन्त धर्म विधि से कराना ऐसा नहीं कहा जाता।

दूसरी बात यह है कि कन्यादान को विवाह कहा गया है, यह कन्या का दान किस ध्येय की बांध से किया जाता है, इस पर भी सूक्ष्म विचार करना चाहिए। इस विषय में शास्त्रों में यही कहा गया है कि गर्भादिक संस्कार, व्रत, वंश रक्षा और मोक्षमार्ग की प्रक्रिया बनी रहे, इसीलिए शुद्ध संतान की बांध से कन्या का पिता कन्या का योग्य वर के साथ परिग्रहण करता है। यदि विवाह धर्म विधि विहित अनुष्ठान नहीं होता तो कन्या के पिता द्वारा कन्या का दान विधान और उसका प्रयोजन निर्देश आचार्य नहीं करते। यदि साधारण रूप से विवाह का लक्ष्य केवल संतानोत्पत्ति ही होता, कोई धार्मिक बंधन नहीं होता अथवा शुद्ध संतानोत्पत्ति विशेष नहीं होता तो आचार्य कन्यादान का विधान गृहस्थ के लिए निरूपण नहीं करते, क्योंकि संतानोत्पत्ति लक्ष्य की सिद्ध तो विधवा के संबंध से भी हो सकती है और कन्या के संबंध से भी हो सकती है। परंतु वैसा साधारण स्त्री संबंध का नाम विवाह नहीं बताकर उन्होंने केवल कन्यादान को ही विवाह कहा है। इससे यह बात स्पष्ट रीति से सिद्ध होती है कि विवाह करने का लक्ष्य केवल संतानोत्पत्ति करके संख्या वृद्धि करना सर्वथा नहीं है, किंतु शुद्ध संतान उत्पन्न करना ही विवाह का लक्ष्य है। इसीलिए कन्यादान को विवाह बताकर वैवाहिक स्थल आदि शुद्ध सामग्री भी उसके लिए आवश्यक कारण बतायी गयी है। इस बात से और भी स्पष्ट हो जाता है कि विवाह धार्मिक सिद्धांत है-लोकिक पद्धति नहीं है।

विवाह सबसे प्रधान धार्मिक संस्कार है और मोक्ष मार्ग का मूल साधन है, इस बात को भी हम यहां संक्षेप में प्रगट करते हैं, -

यह जैन सिद्धांत के जाननेवाले सभी जानते होंगे कि विवाह संस्कार भोग-भूमिक के मनुष्यों में नहीं होता है। और देवों में भी नही होता है, केवल कर्म भूमि के मनुष्यों में ही होता है और यह भी निश्चित सिद्धांत है कि जहां से कर्म भूमि का प्रारंभ होता है, वहीं से मोक्ष मार्ग की प्रक्रिया भी प्रारंभ होती है, तथा कर्म भूमि का प्रारंभ तभी से समझा जाता है जब से कि वैवाहिक पद्धति का प्रारंभ होता है। विशेष व्रत, तप, क्रिया, शुक्ल-ध्यान आदि आत्म-गुणों की व्यक्ति उसी आत्मा में होती है, जो वैवाहिक संस्कारजनित शुद्ध संतति रूप में जन्म धारण करता है। यद्धपि कुलकर भी शुद्ध शरीर होते हैं, परन्तु मोक्ष मार्ग का प्रणयन वैवाहिक संस्कार से ही होता है। उसी संस्कार से मोक्ष मार्ग का प्रणयन वैवाहिक संस्कार से ही होता है। उसी संस्कार से मोक्ष का मार्ग बराबर प्रचलित रहता है। इसलिए विवाह संस्कार आत्म शुद्धि के लिए मूल भित्ति है, मोक्ष मार्ग का साधक धर्म है। विवाह को सामाजिक बंधन मानना जेन मागम के सर्वथा विरूद्ध है। इस कथन से यह बात भी सिद्ध हो चुकी है कि विधवा का विवाह नहीं हो सकता अथवा उसका पुनर्लग्न सर्वथा धर्म विरूद्ध मार्ग है। उससे होने वाली संतान शुद्ध संतान नहीं कहला सकती, अतएव वह मोक्षमार्ग का पात्र भी नहीं बन सकती।

विलुप्ती के कगार पर वैवाहिक परंपराएं

सम्पत मिश्र
निवर्तमान अध्यक्ष
मा. स. कामरूप शाखा

आज के आधुनिक युग में जैसे-जैसे पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे हमारी संस्कृति, नियम, रिति-रिवाज गौण होते जा रहे हैं। हमारे बुजुर्ग नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति का हस्तांतरण करने के बजाय पाश्चात्य संस्कृति को ही बढ़ावा दे रहे हैं। हम अगर अपने सबसे महत्वपूर्ण रिवाज वैवाहित, रस्मों को अगर देखें तो सिर्फ दिखावा ही रश्म के रूप में रह गया है। लग्न, मुहुर्त, शुभ शकुन से महत्वपूर्ण फोटोग्राफी सेशन जरूरी रह गया है। हम अगर एक एक नियम को अवलोकन करें तो वो काली बिल्ली की कहावत सिद्ध होती है।

एक संपन्न परिवार में अक्सर एक काली बिल्ली घूमती नजर आती थी। परिवार की बुजुर्ग महिला ने उसको दूध-दही खिलाना शुरु कर दिया। अब तो बिल्ली उस महिला के आस-पास ही घुमती रहती थी। कई वर्ष बाद महिला के बेटे की शादी हुई। शादी की रश्मों के दौरान काली बिल्ली महिला के आस-पास दूध-दही खाने के लालच में घूमने लगी तो महिला ने उसे एक कमरे में बंद करके ऊपर से एक बांस की टोकरी रख दी। हर विवाह की रश्म के दौरान वह उस बिल्ली की दूध देकर वापस कमरा बंद कर आ जाती थी। कालांतर में महिला भी मर गई और बिल्ली भी मर गई। जब उस महिला के पोते का विवाह का समय आया तो घर की बहुएं शादी की रश्म के दौरान एक काली बिल्ली को पकड़ कर कमरे में बंद कर उसको बांस की टोकरी से ढक दिया और हर रस्म के बाद उसे दूध-दही खाने को दे आती। जब उससे इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि यह हमारा घरेलु नियम है। हमारी सासुजी मेरी शादी के समय इस नियम को पालन करती थीं, इसे हम आगे भी पालन करते रहेंगे। इसी तरह घरेलु नियम के नाम पर हम कानों से सुने हुए नियमों को तो पालन कर लेते हैं पर शास्त्रों में लिखे नियम, महूर्त व शुभ शकुन का पालन करने में कई अड़चने का जाती है।

विवाह की रश्मों मं सबसे पहले विवाह हाथ और हल्द हाथ की रश्म निभाई जाती है। विवाह हाथ का मतलब विवाह के कार्यों को हाथ में लेकर उनकी शुरुआत करना। पुराने समय में दूर-दराज के मेहमानों के लिए राशन की व्यवस्था की जाती थी। शुभ शकुन को देखते हुए सर्वप्रथम हरे मूंग को खरीद कर घर लाया जाता था। जिसे घर की या गांव की महिलाएं आकर कंकड़-पत्थर निकाल कर साफ करती थी। उस समय घर का माहौल शादी के माहोल में परिवर्तित हो जाता था। मगर आज जब सारा राशन व भोजन का भार कैटरिंग वाले को दे दिया जाता है तो घर वालों या गांव वालों के लिए राशन या मूंग खरीदकर लाने का काम ही नहीं रहता। ऐसे में विवाह हाथ की रश्म का कोई औचित्य ही नहीं रहता। हल्दी हाथ में गणेश पूजन कर

उन्हे निमंत्रण पत्र देने के प्रश्चात अन्य मेहमानों को या फिर गांव वालों को शादी का निमंत्रण देने की प्रथा है। इसी समय जौ छड़ी के नाम पर जौ को मूसल से कुटा जाता था तथा नमक की क्यारियों में जाकर नमक को काटकर घर लाया जाता था। यह काम ग्यारह दिन या सात दिन पहले होता था मगर आज समयाभाव के कारण सिर्फ दो दिनों में प्रतीकात्मक रूप से ही ये कार्य हो जाता है। इतना ही नही अनुभवहीन पंडितो द्वारा हल्द हाथ ओर फेरा में शास्त्रों के नियमों का भी उल्लघंन किया जाता है। शास्त्रों में वर्णित है कि देवी-देवताओं के आसन से यजमान का आसन ऊंचा होने से दोष लगता है तथा देवी देवताओं का अपमान भी होता है। फिर भी दुल्हे का आसन देवी देताओं से काफी ऊंचा रहता है।

शुभ लग्न में फेरा का होना सुखी दांपत्य जीवन की गारन्टी है, मगर शुभ चिन्तक बनने वाले यार, दोस्त नाचने में इतना वक्त लगा देते है कि शुभ लग्न टल जाता है और सुखी जीवन की गारन्टी भी खत्म हो जाती है। घोर अपशकुन तो तब होता है जब वरमाला के समय दुल्हे के यार दोस्त उसे ऊपर उठा लेते है और दुल्हन बार-बार वरमाला को वापस नीचे लाती है। भगवान राम के विवाह के समय सीता जब राम को बरमाला पहनाने में उनके सिर तक पहुंच पाने में असमर्थ दिखी तब लक्ष्मण ने भगवान राम के चरण स्पर्श किए। जैसे ही राम लक्ष्मण को आशीर्वाद देने नीचे झुके वैसे ही सीता ने उनके गले में वरमाला डाल दी। जबकी आज के दुल्हे अपनी गर्दन पीछे टेढ़ी कर के हास्य का पात्र तो बनते ही है साथ में वरमाला का अपमान भी करते है।

अब बारी आती है सज्जन गोठ की। जिसमें साख जलेबी का दस्तूर होता है। इससे पहले पित्तरों और देवी-देवताओं की पाल निकाली जाती है। जब तक सप्तपदी और सिंदूर दान न हो जाए, तब तक बेटी को बहू का दर्जा नही मिलता और वरपक्ष को वधुपक्ष पर कोई अधिकार नहीं रहता। इन रश्मों के पश्चात ही दोनो पक्ष जीवन पर्यन्त प्रगाढ़ बंधन में बंध कर एक-दूसरे के हो जाते हैं। इसके बाद ही वधु पक्ष की मिठाइयों से वर पक्ष को पाल निकालने का अधिकार होता है मगर आजकल तो बिना अधिकार मिले ही वर पक्ष वाले वधु पक्ष पर अपना अधिकार जता कर उनकी मिठाइयों से अपने पित्तरों की पाल निकाल देते हैं। यहां एक गलत धारना शुरु हो जाती है कि बिना पाल निकाले बाराती कैसे खाना खाएंगें। ऐसी बात नहीं है, कारण कुछ ऐसी मिठाईयां जो पांपरिक है और जिन्हे बाराती को खाने के मीनू में शामिल नहीं किया जा सकता, जैसे लडडू, सुवाली, पेठा, भुजिया, आदि उन्हें बनाकर पहले से ही अलग रख दिया जाता है और फेरों के बाद ही उन्हें वर पक्ष को सौंप दिया जाता है। इसके बाद ही साख जलेबी व सज्जन गोठ की रश्म शुरु होती है। साख जलेबी में साख का मतलब गहरा रिश्ता से है। जब तक फेरों की रश्म पूरी न होकर सिन्दूर दान नहीं हो जाता, तब तक रिश्ता गहरा नहीं होता है। साख जलेबी में जलेबी को इसलिए चुना गया है कि जलेबी के हर मोड़ में हर कोने के अन्दर मीठा रस भरा होता है जो आपसी मधुर और मीठे संबंध को दर्शाता है। सज्जन गोठ की परंपरा होटल व बुफे कल्चर के चलते प्रायः लुप्त हो गई है। दो समधीयों का आपस में बैठकर मिठाई खाना और खिलाना एक सपना बन गया है। विवाह में होने वाली मिलनी की रस्म भी अपना महत्व खोते जा रही है। मिलनी का अर्थ दोनो पक्ष आपस में परिचय कर गले मिलते है। मगर अब ये सिर्फ पिता और मामा तक ही सीमित हो गई है। हल्द हाथ के समय गांववासीयों और स्वजनों द्वारा एक प्रतीकात्माक रकम भेंट कर विवाह में अपनी साझेदारी व्यक्त कर शामिल होने की परंपरा तो पूरी तरह खत्म हो गई। अब इस लेनदेन से लोग इसे अपने सम्मान का विषय बना लेते हैं। वधू की विदाई के वक्त रोने को लोग अशुभ मानते हैं। पर यह स्वाभाविक है।

उस समय माहौल इनता भावुक हो जाता है कि कभी-कभी तो फोटोग्राफर व पंडित के आंखों में भी आंसू आ जाते हैं। इस अपशकुन को दूर करने के लिए घर की दहलीज पर जल से भरा कलश रखकर वर-वधु से उसकी पूजन कराई जाती है। इससे विदाई के वक्त होने वाले अपशकुन को दूर किया जाता है।

इस तरह अगर हम देखें तो यह समझ में आएगा कि कुछ परंपराएं स्वत: ही लोप हो गई है और कुछ अपनी सुविधानुसार लोप कर दी जाती है। मगर जिन परंपरा को हमें जड़ से उखाड़ कर फेंकना होता है हम उसे ही प्रोत्साहन देते है। सड़कों पर घर की बहू-बेटीयों का भौड़ा नृत्य हमारी संस्कृति व परंपरा नहीं है। यह आजकल काफी फलफूल रहा है। रिशतेदारों और यार दोस्तो का शुभ मुहुर्त को धत्ता बताकर अशुभ लग्न में फेरा करवाकर जो जीवन में बाधा उत्पन्न करती है। उसको बढ़ावा दिया जाता है। सजावट के नाम पर सिर्फ चंद घंटों की खातिर कई लाख रुपए बरबाद कर दिये जाते हैं। खाने में असीमित आइटम मेहमानों को दौड़ा-दौड़ा कर खाने को मजबूर कर देता है। इस खाने की दौड़ में मेहमान शादी की रस्म को देखना तथा वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान करना तक भूल जाता है। फलस्वरूप शादी में उपस्थित होना महज एक औपचारिकता रह गई है, इसमें अपनापन का कहीं भी समावेश नहीं रहता।

समय और माहोल के साथ चलना इन्सान की मजबूरी रहती है। समय के साथ कदम मिलाकर चलना ही समझदारी होती है। इसका मतलब यह नहीं कि हम अपनी संस्कृति व परंपरा को नकार दें। बुजुर्गों ने जो नियम बनाए हैं अथवा शास्त्रों में जो नियम लिखें है वो हमारे भविष्य के शुभ फलों को देखते हुई रचित हुए है। फेरों में सात वचन लेना पतिव्रता धर्म और एक पत्नी धर्म के पालन में सहायक होता है।

किसी भी नियम को या तो पूर्ण रूप से पालन करें या पूर्ण लोप कर दें। सिर्फ औपचरिकता निभाने के लिए नियम पालन करना हास्यास्पद तो होता ही है साथ में नियम का मूल स्वरूप बिगाड़ कालान्तर में एक अर्थहीन नियम में बदल जाता है। जो आने वाली पीढ़ी के लिए अच्छा फल देने वाला नही होता है। शादी जैसे शुभ कार्य में हंसी का दौर चलता रहता है यह अच्छी बात है, मगर हंसी में कुछ अपशकुन भरी बातों का बोल जाना किसी के लिए बुरा भी साबित हो जाता है। जैसे शादी तो बरबादी है - यार आज हंस ले कल से तो रोना ही है - ये जुमले कभी-कभी भारी भी पड़ सकते हैं। अत: हास्य व्यंग्य सकारात्मक प्रभाव वाले होने चाहिये। मगर सकारात्मक प्रभाव वाले कुछ नियमों को हमने स्वत: ही लोप कर दिया। हल्द हाथ के समय गांव के व्यक्तियों द्वारा एक छोटी-सी राशि शकुन के रूप में देना आपसी समन्वय व भाई चारे का प्रतीक था। गांव में बिन्दोरी निकालना और स्वजन अपने घर के सामने से बिन्दोरी को गुजरते समय सूखे मेवो से झोल भरना बहुत गहरा अपनापन का प्रतीक था यह नियम। मगर समय का अभाव, आपसी प्रेमभाव की वजह से ये प्रथा पूर्ण लोप हो गई और हम गांव से अलग-थलग हो गये।

अगर ऐसे ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब आनेवाली पीढ़ी हमारी संस्कृति व पारिवारिक विरासत में मिली परंपरायें को ठेंगा दिखा कर कुछ ऐसी परंपरा की शुरुआत करेगें जो हमारी पीढ़ी को पतन की और धकेल देगी। अपनी सुविधा के लिए नियम बदलकर पूरे समाज को गुमराह करना अच्छी बात नहीं है, कारण आज के युग में देखा देखी और होड़ मे कइ नये कार्य शुरु हो जाते हैं। आज हमें विचारगतीयों और परिचर्चा के जरिये पुरानी परंपराओं पर चर्चा करनी होगी। अनेक मंथन कर पीछे रहे कारणों को तलाश करना होगा। समय चाहे कितना ही बदल जाए परंपराओं का प्रभाव यथावत ही रहेगा।

सम्भावित आधुनिक भारतीय समाज

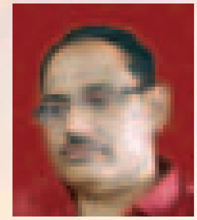

विमल काकड़ा (शर्मा)

भारतीय समाजशस्त्रियों के मतानुसार विवाह नामक संस्था के उद्धव और विकास का श्रेय मुनि उद्दालक के पुत्र, श्वेतकेतु को जाता है। ऋषि श्वेतकेतु ने तत्कालीन समाज में व्याप्त अव्यवस्था और कदाचार को दूर कर एक मर्यादित और उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित संस्था की नींव डाली। कालांतर में विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप में स्थापित हुआ तथा समाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य पर विविध आयामों में अपनी अनिवार्यता का अहसास करता रहा।

बदलते कालखंड के साथ-साथ विवाह के सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरुप में भी कई बदलाव आते चले गए। जहाँ एक ओर कुछ परिमार्जित संस्कारों ने विवाह के स्वरूप को एक दिव्य संस्कार के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया तो वहीं दुसरी ओर दहेज, जाति एवं वर्ण व्यवस्था जैसी कुरीतियों ने इसकी आत्मा को निष्प्राण कर दिया। कट्टरपंथियों ने विवाह की सामाजिक अनिवार्यता को गौण कर इसे एक जटिल धार्मिक अनुष्ठान के रूप में परिवर्तित कर दिया। समय समय पर अनेक समाज सुधारकों ने इस संस्था के मूल स्वरुप को जीवंत बनाये रखने के प्रयास किये और समाजिक सरोकारों से जोड़ने में सफल भी रहे।

वर्तमान काल में भी परिवार या विवाह जैसी समाजिक संस्थाओ में अनेक समाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं। रुढ़िवादी मानसिकताओं के प्रति विद्रोह के स्वर मुखर होते जा रहे हैं। विवाह भी इससे अछुता नहीं रहा है और इसके स्वरुप में भी अनेक बदलाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अंतरराजतीय विवाह का प्रंसग पहले भी यदा कदा उठता रहा है परन्तु विगत दो तीन दशकों से इसका चलन सामाजिक स्तर पर अधिकाधिक स्वीकार्य होता जा रहा है। अनेक जातियों और उपजातियों के जटिल चक्रव्यूह में उलझ कर भारतीय समाज अक्सर अपने सामाजिक और सांस्कृतिक दायित्वों के निर्वहन में असहाय सा अनुभव करने लगता है। अंतरजातीय विवाह इन जटिल परिस्थितिओं से अलग एक नये समाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का सृजन करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

किसी भी विचारधार के समर्थन और विरोध में स्वर उठना स्वाभाविक है परन्तु उस विचारधारा की जीवंतता और निरंतरता उसकी सामाजिक स्वीकार्यता पर निर्भर करती है। अंतरजातीय विवाह ने आधुनिक भारतीय समाज को एक नया स्वरुप प्रदान किया है जो स्वागत योग्य है। दो अलग अलग परिवेश से निकल कर आये व्यक्तित्व जब विवाह के पवित्र बंधन में बंधित हो कर एक नयी सामाजिक इकाई के रूप में विकसित होने लगते हैं, तो कई स्तरों पर जुड़ाव की

प्रक्रिया समाजिक समन्वय के नए प्रतिमान स्थापित करने लगती है। क्षेत्रीय और प्रांतीय संस्कृतियों का एक दूसरे को समझने और आत्मसात करने की प्रक्रिया एक नवीन सांस्कृतिक परिवेश का सृजन करने लगती है।

यदि इतिहास के पन्नों में अंतरजातीय विवाह के विषय में अन्वेषण किया जाय तो कई रोचक और प्रेरणादायक प्रसंग उपस्थित हो जाते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार ब्रह्मा और गायत्री का विवाह प्रसंग हो या महाराज शांतनु और सत्यवती का परिणय प्रसंग या विभिन्न प्रांतीय क्षेत्रों द्वारा स्थापित किये गए विवाह सबंन्ध, सभी दृष्टान्त अंततः समाजिक और सांस्कृतिक उन्नयन का संवाहक बने। वर्तमान समाज की जीवंतता और गत्यात्मकता में भी अंतरजातीय विवाह संबंधों ने महत्वपूर्ण रचनात्मक भूमिका निभाई है। खान पान, वस्त्र विन्यास, क्षेत्रीय और प्रांतीय प्रभावयुक्त भाषा शैली और लोक साहित्य, स्थानीय रहन सहन, लोक परम्परा एवं हस्त कला, लोक नृत्य एवं लोक गीत इत्यादि का समन्वय और सम्मिश्रण, समाज के नवीनता का अनुभव कराता है और नवीन सांस्कृतिकआयामों को जन्म देता है। अंतर जातीय प्रकृति के विवाह सबंन्ध दो पृथक समूदायों के बीच सेतु की भूमिका निभाते हैं। समाज और लोक संस्कृति को समन्वित और परिमार्जित करने के साथ साथ नए आयामों को आत्मसात करने के अवसर उपलब्ध कराते हैं। सौहाद्र और बंधुत्व की भावना बलवती होती है तथा स्थानीय एवं क्षेत्रीय परिवेश से निकल कर एक विस्तृत फलक पर 'वसुधैव कुटुम्बकम' का सुत्र प्रतिध्वनित होने लगता है।

अंतरजातीय विवाह संबन्धों के, जहाँ एक ओर सकारात्मक और धनात्मक परिणाम परिलक्षित हुए हैं वहीं कुछ नकारात्मक प्रतिफल भी दृष्टिगत हुए हैं। अनेक अवसरों पर इस तरह के संबंधों को सामाजिक विरोध और बहिष्कार का सामना भी करना पड़ा है। समुदायों के मध्य वैमनश्यता और असहिष्णुता की स्थिति का निर्माण होने लगता है। तनावयुक्त परिवेश में मानवीय संवेदनाओं और कोमल भावनाओं पर कुठाराघात, पाशविकता को सर उठाने का अनुकूल अवसर उपलब्ध करा देती है। समाज के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से प्रताड़ित युगल नकारात्मकता का शिकार हो जाते हैं और भी कभी तो आत्म हनन को उद्यत हो जाते हैं। समाजिक स्वीकार्यता का आभाव वैवाहिक दायित्वों के निर्वहन में बाधा बन जाती है और फलस्वरूप एक नवसृजित विवाह संबंध अवसान की ओर अग्रसर होने लगता है।

वर्तमान परिप्रक्ष्य में संचार माध्यमों यथा दूरदर्शन एवं एफ. एम. रेडियो, सिनेमा, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य समाजिक और सांस्कृतिक संगठनों ने अंतरजातीय विवाह संबंधो के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित मानसिकता को आत्म विवेचन के लिए बाध्य किया हैं। आधुनिक समाज इन संबंधों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपना रहा है जो भविष्य की चुनौतिओं को देखते हुए स्वागतेय है। अंतरजातीय विवाह संबंधों का संरक्षण और संवर्धन, मानव समाज को संगठित, जीवंत और कालजयी स्वरुप

प्रदान करेगा, इसमें कोई शंका नहीं होनी चाहिए।प्राचीन भारतीय स्मृतिकारों ने विवाह के जो आठ प्रकार मान्य किए थे, गंधर्व विवाह उनमें से एक हैं। इस विवाह में वर-वधू को अपने अभिभावकों की अनुमति लेने की जरुरत नहीं पड़ती थी। युवक-युवती के परस्पर राजी होने पर किसी श्रेत्रिय के घर से लाई अग्नि से हवन करने के बाद हवन कुंड के तीन फेरे परस्पर गठबंधन के साथ कर लेने मात्र से इस प्रकार का विवाह संपन्न मान लिया जाता था। इसे आधुनिक प्रेम विवाह का प्राचीन रूप भी कह सकते हैं। इस प्रकार का विवाह करने के पश्चात वर-वधू दोनों अपने अभिभावकों

को अपने विवाह की निस्संकोच सूचना दे सकते थे क्योंकि अग्नि की साक्षी मान कर किया गया विवाह भंग नहीं किया जा सकता था। अभिभावक भी इस विवाह को स्वीकार कर लेते थे। किंतू इस प्रकार का विवाह जातिगत-पूर्वानुमति या लोकभावना के विरुद्ध समझा जाता था, लोग इस प्रकार किए गए विवाह को उतावली में किया गया विवाह ही मानते थे। कुछ अर्थशास्त्रियों की धारणा थी कि इस प्रकार के विवाह का परिणाम अच्छा नहों होता। भारतीय परिप्रेक्ष्य में शंकुतला - दृश्यंत, पुरुरवा - उर्वशी, वासवदत्ता-उदयन के

विवाह गंधर्व - विवाह के प्रख्यात उदाहरण हैं।

साधारणतया विवाह विधि इस प्रकार है :- विवाह के 3 दिन, 5 दिन, 7 दिन, 9 दिन, पूर्व लग्न पत्रिका पहुंचाने के बाद वर पक्ष एवं वधू पक्ष ही अपने - अपने घरों में गणेश पूजन कर वर और वधू घी पिलाते है। इसे बाण बैठाना कहते है। ओर घर की चार स्त्रियां (अचारियां) (जिसके माता-पिता जीवित हो वर व वधू को पीठी चढ़ाती है। बाद में एक चचांचली स्त्री जिसके माता-पिता एवं सास-ससुर जीवत हो) पीठी चढाती है। बाद में स्त्रियां लगधण लेती है।- बिन्दोरी / बन्दोली की रसम, सामेला / मधूपर्क की रस्म, ढुकाव की रस्म, तौरण मारना की रस्म, पहरावणी / रंगबरी (दहेज) की रस्म, बरी पड़ला (वधू के लिए वर पक्ष द्वारा परिधान भेजना) की रस्म, मुकलावा / गैना की रस्म, बढ़ार की रस्म, कांकण डोरडा / कांकण बंधन - बन्दोली के दिन वर और वधू के दाहिने हाथ और पांव में कांकण डोरा बांधा जाता है। जान चढ़ना / निकासी की रस्म, सास द्वारा दही देना की रस्म, मंडप (चवंरी) छाना की रस्म, हथलेवा जोड़ना की रस्म, पणिग्रहण मांडा झाकणा की रस्म, कोथला (छुछक) की रस्म।

विवाह का दूसरा अर्थ समाज में प्रचलित एवं स्वीकृत विधियों द्वारा स्थापित किया जाने वाला दांपत्य संबंध और परिवारिक जीवन भी होता है। इस संबंध से पति पत्नि को अनेक प्रकार के अधिकार और कर्तव्य प्राप्त होते हैं। विवाह का अवसर समाज में अत्यतं ही महत्वपूर्ण होता है। इस कारण इसके कई विधि-विधान प्रथाऐं तथा रीतियां प्रचालित हो गई। देश, काल व जाति संबन्धी अनेक भेद अस्तित्व में आ गये। विवाह वाले घर में हर्ष व प्रसन्ता होती है अत: लोग भोज, संगीत और नृत्य आयोजन कर प्रसन्न होते थे। कोई अप्रिय घटना ना हो, भविष्य के भावों से बचने तथा नवविवाहित दम्पति का भविष्य अच्छा हो सके इसके लिए कई प्रकार की धार्मिक क्रियायें कि जाती थी। भिन्न-भिन्न प्रदेशों में वैवाहिक क्रियायें भिन्न भिन्न है। लेकिन धार्मिक ओर सामाजिक रुढ़िवाद भारत में इतना प्रवल है कि संस्कारों की मोटी रुपरेखा वैदिक युग से वर्तमान काल तक अविच्छिन रही तथा उसके साधारण तत्व समस्त देश में एक समान प्रचलित है।

लेकिन वर्तमान काल में अनेक सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिवर्तन हूए है इससे विवाह भी अछुता नही रहा है। इससे जहाँ एक ओर समाज पति पत्नि की कामसुख के उपभोग का अधिकार देता है, वहाँ दूसरी ओर पति-पत्नि तथा संतान के पालन एवं भरणपोषण के लिए बाध्य करता हैं। संस्कृत में पति का शब्दार्थ है पालन करने वाला तथा भार्या का अर्थ है भरणपोषण की जाने योग्य नारी। पति के संतान और बच्चों पर कुछ अधिकार माने जाते हैं। विवाह प्राय: समाज में नवजात प्राणियों की स्थिति का निर्धारण करता है। संपत्ति का उत्तराधिकार अधिकांश समाजों में वैध विवाहों से उत्पन्न संतान को ही दिया जाता है।

विनोद लोहिया
उपाध्यक्ष

टूटते वैवाहिक रिश्ते

विवाह एक प्रक्रिया है, जिसके तहत एक पुरुष और एक स्त्री अग्नि को साक्षी मानकर, बचनबद्ध हो कर एक-दूसरे का वरण करते हैं जिसके फलस्वरूप समाज एक दम्पति के रूप में उनको मान्यता देता है, विवाहोपरांत दोनों जीवन के सफर के हमराही बनकर परिजनों के साथ सुख दु:ख भोगते हुए अपनी जीवन यात्रा तय करते हैं, ये रिश्ता सामाजिक रूप से, धार्मिक रूप से और वैज्ञानिक रूप से हर रिश्ते के ऊपर निकल जाता है, क्योंकि इस रिश्तें में एक आत्मा का निवास दो शरीरों में माना गया है और इसीलिए दोनों एक-दूसरे के रिश्तेदारों को उसी संबोधन से पुकारते हैं जिस संबोधन से उनका जीवनसाथी संबोधित तो करता हैं, दोनों से अपेक्षा की जाती है कि वे एक-दूसरे के प्रति समर्पित होंगे, पता नहीं इस रिश्ते की शुरुआत कब और कहां हुयी।

समय के साथ समाज नें प्रगति की नारी का कद समाज के हर क्षेत्र में बढ़ने लगा। वो नित नए आयाम स्थापित करने लगी। घर-घर में लड़कियां उच्चशिक्षा प्राप्त करने लगीं। विवाहोपरांत घर की चौके-चूल्हे के जिम्मेदारी के साथ-साथ वो बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, बुजुर्गों की हारी-बीमारी और अन्य क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करने लगी। कुछ नवयुवतियां ने विवाह के पूर्व नौकरियां, व्यवसाय या पेशोवर सेवाओं में नियुक्त हो गयीं और समाज के संकुचित और पारमपरिक दायरे में उपयुक्त वर तलाशने में परेशानी बढ़ने लगी।

बीच का वो तबका गायव हो गया, जिस पर पूरे समाज को भरोसा होता था औरसमाज में जिनकी चलती थी। अब घर-घर में लड़के बैठे हैं और घर-घर में लड़कियां। लड़के ३२-३४ पार कर रहें है तो लड़कियां ३० की हो रही हैं। पहले तो विवाह होने में परेशानी होती है, मनवांछित रिश्ते मिलते नहीं हैं और मिलते हैं तो निभते नहीं हैं, धीरे-धीरे समाज में विवाह की स्थापित व्यपस्था चरमराने लगी है। रोज सुनने को मिल जाता है कि फलाने की बहू घर छोड़कर चली गयी, ढिकाने का तलाक हो गया आदि-आदि। रिश्ते दरकने लगे है, टूटने लगें है, इस समस्या की विवेचना करनी और उसके निदान की कोशिश अत्यंत जरूरी हो चली है।

विवाह टूटने या रिश्ते नहीं होने में एक कारण है कि हमने यानि समाज ने बेटी और बहू के लिए दोहरे मापदंड अपना रखें है, जो खूबी हर कोई अपनी बहू में देखना चाहता है वो संस्कार उपने अपनी बेटी को नहीं दे रखे होते हैं, बहू तो घरेलु चाहिए परंतु बेटी को स्वछंद परिवार मिले तो अच्छा है, बहू को काम क्यों करना, घर में कोई कमी थोड़े ही है, परंतु बेटी ने जब इतना पढ़ रखा है तो काम तो करेगी ही इत्यादि इत्यादि।

एक कारण हम कह सकते हैं कि इस विवाह नामक इस व्यवस्था पर भरोसा कम हो जाना। समर्पण इस रिश्ते कि नींव है और समर्पण सर्वथा तर्क से परे है। हम तर्कसंगत होकर ईश्वर कि आराधना नहीं कर सकते। तर्क वर-पक्ष और वधू पक्ष दोनों में अहम पैदा करता है। लड़कियां आज पीहर में नाजों से पत्नी बढ़ी होती है, जब कि पहले लड़कों के मुकाबले उनको कम तवज्जों दी जाती थी। बेटी का अहम तो स्वीकार्य हो गया परंतु बहू का नहीं। यह अहम एक के लिए स्वाभिमान है तो दूसरे के लिए अहंकार, विचौलिया कोई है नहीं, जो दोनों को समझा सके, फलस्वरूप

विवाह का विघटन।

एक अन्य कारण है, बेटी के ससुराल के मामलों, में पीहरवालों का गैरजरूरी हस्तक्षेप, जिस बात पर मां अपनी बेटी को कुछ कह देती होगी, उतनी ही बात अगर सास बहू को कह दे तो फिर बहु प्रताड़ना का मामला बन जाता है। पति-पत्नी के बीच के छोटे-मोटे मन मुटाव को तथा छोटे-मोटे घरेलू झगड़ों को हवा ना दी जाये तो दो घरों को, दो जिंदगियों को बर्बाद होने से बचाया जा सकता है।

कई मामलों में देखा गया की लड़कियों की अति महत्वकांक्षा, जो हकीकत से कोसों दूर होते हैं, विवाह के विघटन का कारण बन जाती है। अपनी सहेलियों से अपने जीवन की तुलना करने पर ससुराल में ढेरों कमियां दिखने लगती हैं।

शिक्षा के साथ-साथ प्रेम-विवाह का प्रचलन भी बढ़ा है। विवाह के पहले लड़का-लड़की स्वपन लोक में बिचरते हैं और विवाह के बाद ठोस हकीकत का सामना होता है, वो सतरंगी तस्वीरें तब स्याह-सफेद में तब्दील हो जाती है, जब जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पढ़ता है, कई मामलों में दिखता है कि लड़की कि शादी कहीं और हो गयी और लड़के कि शादी कहीं और, लेकिन पुराने रिश्ते दोस्ती के नाम पर पाले जाते हैं जो वैवाहिक जीवन में जहर घोलने का काम करते हैं।

आइए प्रण करें कि बहू और बेटी के अधिकारों में दोहरे मापदंड नहीं अपनाएंगे, अपनी बेटे-बेटी की उचित और अनुचित का ज्ञान देकर मार्ग-दर्शन करेंगे। वर-वधू अपने विवाह से पूर्व के प्रेम-प्रसंगों को तिलांजलि देकर अपने जीवन साथी के पार्टी समपिर्त रहें। किसी अन्य के जीवन के साथ-साथ अपने जीवन की अथवा जीवन साथी की तुलना नहीं कर अपना जीवन नकर न बनायें।

विवाह के बिगड़ते मामलों में वर और वधू, दोनो पक्षों के बुजुर्ग, किसी बुलावे के इंतजार किए बिना, हस्क्षेप करें ताकि दो परिवारों का मान सम्मान बचाया जा सके।

Sashi : 9954126712
Sirmran : 9401533606

SScreation

We make Luxury Affordable!!!

Ladies Designer Wear & Kids Apparel

Shanti Nivas, Ground Floor, Rajgarh Main Road,
Opp. Sainik Bhawan, Guwahati, Assam 781001
e-mail : sbalasharma29@gmailo.com
sarora040277@gmail.com

शाखा की गतिविधियां – कैमरे की नजर से...

Installation Ceremony on 16-04-2017

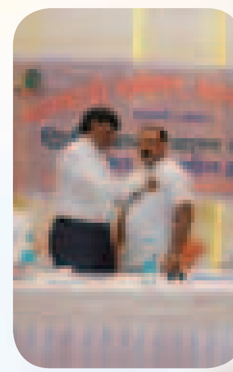

Yog Shivir from 2nd to 8th May, 2017

GST Jagriti on 17-06-2017 at ITA Center, Guwahati

GST Jagriti on 17-06-2017 at ITA Center, Guwahati

तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
के पावन अवसर पर योगाभ्यास हेतु
आपका हार्दिक स्वागत है

GST Jagriti on 25-06-2017 at Tihu

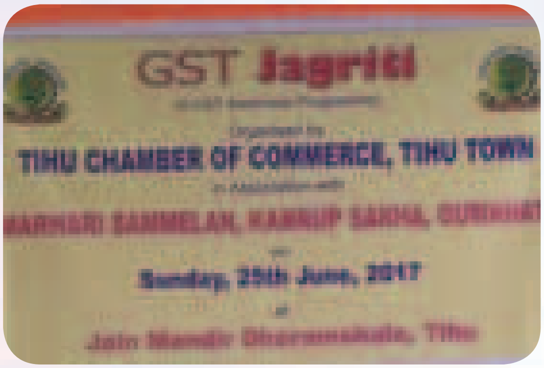

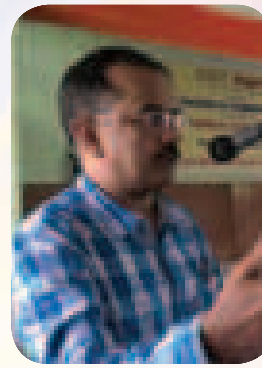

Independence Day Celebration 2017

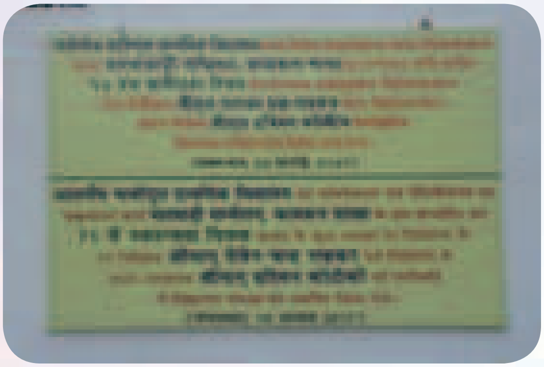

Flood Relief on 10-06-2017 at Morigaon

Parinay Bandhan Paricharcha on 05-11-2017

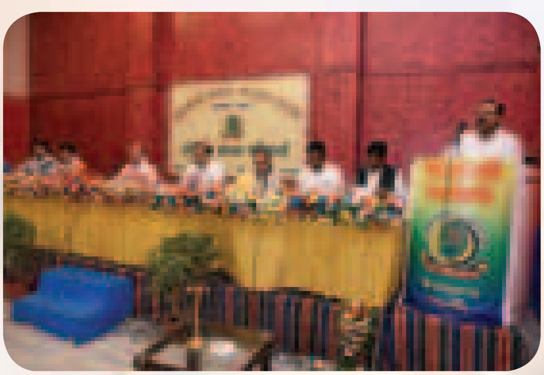

Parinay Bandhan Paricharcha on 05-11-2017

Republic Day 2018 Celebration

Glimpses of Marwari Sammelan Kamrup Shakha at 15th Prantiya Adhiveshan

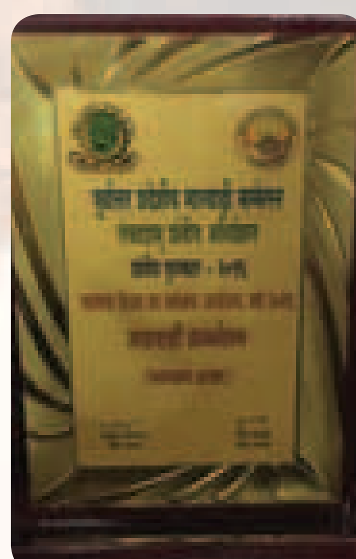

Marwari Sammelan Kamrup Shakha in NEWS

Marwari Sammelan Kamrup Shakha in NEWS

जैन विवाह विधि

- कपूरचंद पाटनी

विवाह का उद्देश्य

संसार में अनादिकाल से यह जीवात्मा नाना प्रकार के अच्छे से अच्छे और रमणीय विषय भोगों को भोगता हुआ चला आया है, परंतु आज तक कभी इन विषय भोगों से किसी को भी तृप्ति नहीं हुई और न हो सकती है। इसीलिए आचार्यों ने सच्चा सुख प्राप्त करने के लिए इन विषय भोगों के सर्वथा त्याग का उपदेश दिया है। वास्तव में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना बहुत ही उत्तम और कल्याणकारी धर्म है, इसके द्वारा आत्मा उत्तरोत्तर अपनी शक्ति को बढ़ाकर कर्म शत्रुओं को निर्बल करने के लिए समर्थ हो सकता है परंतु पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन अल्पशक्ति रखने वाले स्त्री-पुरुषों से नहीं हो सकता, इसीलिए आचार्यों ने ब्रह्मचर्यागुव्रत में परस्त्री त्याग और स्वदारसंतोष का उपदेश दिया है जिससे उसकी काम-तृष्णा धीरे-धीरे शांत हो जाए। विवाह धर्म की पंरपरा को चलाने के लिए, मन और इंद्रियों के असंयम को रोक कर मर्यादा पूर्वक एन्द्रियिक सुख की इच्छा से किया जाता है। गृहस्थ को चाहिए कि वह नित्य जिनेंद्र देव की पूजा, गुरू की भक्ति, शास्त्र-स्वाध्याय, संयम-पालन, तप का अभ्यास और दान देना इन षट् आवश्यक कर्तव्यों का नियमानुसार पालन करता हुआ धर्म, अर्थ, काम तीन पुरुषार्थ का एक-दूसरे के साथ विरोध न करके सेवन करता रहे और यह भावना भावे कि कब ऐसा दिन आए जिस दिन मैं गृहवास से विरक्त होकर मुनि दीक्षा धारण कर तप द्वारा कर्मों को काटकर अनुक्रम से सच्चा सुख प्राप्त करूं। ऐसी भावना भाते रहने से एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह निर्वाण पद प्राप्त करके मनुष्य जन्म को सफल बना लेगा।

विवाह का लक्षण

''वाग्दानं च वरणं प्रदानं च, वरणं पाणि-पीड़नम्।

सप्तपदीति पंचांगों, विवाहे परिकीर्तितः।।''

अर्थात् जिसमें वाग्दान (सगाई), प्रदान (कन्यादान), वरण (कन्या का स्वीकरण), पाणि पीड़न (हथलेवा) और सप्तपदी (सात भांवरें), ये पांच कार्य हों, वही विवाह है। जब तक सप्तपदी नहीं होती, तब तक विवाह हुआ नहीं कहा जा सकता।

वर, कन्या विचार

सबसे प्रथम वर और कन्या के लक्षण तथा वय, जाति, कुल, शील आदि पर विचार करना आवश्यक है। वर में निम्न गुण होना चाहिए। कुलवान, बुद्धिमान, अपनी आजीविका उपार्जन में दक्ष, नीतिज्ञ, विनयवान, रूपवान, सच्चे देव शास्त्र गुरु का परम श्रद्धानी, धर्मज्ञ, निरोग, सच्चरित और नपुंसकादि दोषों से विनिर्मुक्त हो।

कन्या में निम्न गुणों का होना आवश्यक है। शीलवती, विदुषी, सौम्य, विनयवान, गृहस्थ क्रिया की जानकार, धर्म के रहस्य की वेत्ता, लेखन, पठन, रंधन, सीना, पिरोना आदि गृहकार्यों में दक्ष होना चाहिए, यदि इन गुणों से विपरीत दुर्गुणों की खानि होगी तो अपने साथ-साथ सारे कुटुम्ब को कुमार्ग में घसीट ले जाएगी। वास्तव में गृहिणी का नाम ही घर है, ईंट, पत्थर, लकड़ी आदि के समुदाय का नाम घर नहीं है। साधारण बोलचाल में भी घर शब्द स्त्री के अर्थ में ही व्यवहृत होता है, जैसे एक मनुष्य कहता है कि मैं घर सहित आया हूं. जिसका अभिप्राय यही है कि मैं

अपनी स्त्री को साथ लाया हूं। घर की शोभा स्त्री ही है। गुणवाली स्त्री घर को स्वर्ग बना सकती है। यदि उक्त गुण न हों तो वह घर नरक बन जाता है।

अत: गृहिणी में उक्त गुण होना चाहिए। वर की आयु कन्या की आयु से ३-४ वर्ष से अधिक से अधिक १० बर्ष बड़ी होनी चाहिए।

वाग्दान (सगाई)

वाग्दान का मतलब परस्पर में वचनों का दे देना है अर्थात् जब वर के पिता को कन्या और कन्या के पिता को वर योग्य जंच जाए तब पंचों की साक्षी पूर्वक दोनों एक-दूसरे से वचनबद्ध हो जाते हैं, इसी को सगाई कहते हैं। कन्या का पिता वर के पिता से कहे कि कुटुम्बियों, पंचों और प्रदान पुरुषों को साक्षी पूर्वक मैंने अपनी कन्या को आपके सुपुत्र के लिए देना निश्चय किया है, आप अपने सुपुत्र के लिए इसे स्वीकार कीजिए। इसके उत्तर में वर का पिता भी प्रतिज्ञा करे कि मैं पंचों एवं प्रमुखों की साक्षी पूर्वक आपकी कन्या को अपने सुपुत्र के लिए स्वीकार करता हूं। इसी समय अपनी शक्ति, जाति व देशानुकूल द्रव्य व कपड़े आदि भी देना चाहिए।

वाग्दान का त्याग किन परिस्थितियों में हो सकता है

वाग्दान के पश्चात् यदि वर विदेश चला गया हो और तीन वर्ष तक भी लौट कर न आया हो और न पत्रादि द्वारा समाचार ही मिला हो या त्यागी, ब्रह्मचारी हो गया हो अथवा नपुंसक, कोढ़ो, अंधा या मुत्यु को प्राप्त हो गया हो तो ऐसी परिस्थिति में कन्या का पिता एवं पंच जन उस कन्या का किसी दूसरे योग्य वर के साथ वाग्दान करा दें।

लग्न भेजना

वाग्दान के पश्चात् पाणिग्रहण के मुहूर्त से २१, १५ या ११ दिन पूर्व शुभ मुहूर्त में कन्या का पिता नव देव पूजन करा कर इष्ट बंधु वर्गों व पंचों की उपस्थिति में पाणिग्रहण कराने के दिन लग्नादि (विवाह का समस्त कार्य विभाग) का निर्णय करके पत्र में लिखवा कर किसी योग्य सेवक व विश्वासी व्यक्ति द्वारा वर के पिता के यहां भेज देना लग्न कहलाता है जिसके लिखने की प्रणाली प्राय: यह होती है।

लग्न पत्रिका

।। श्री वीतरागाय नमः ।।

सिद्धि श्री ------------------------ शुभस्थाने सर्वोपमा विराजमान ------------------------ साहजी श्री --------------- श्री --------------- श्री --------------- श्री --------------- तथा श्री --------------- योग्य लिखी ______________ से ______________ का सादर जय जिनेन्द्र बंचना जी। अपरंच हमारे यहां ------------ की सुपुत्री सौ. का --------------- का पाणिग्रहण संस्कार आपके यहां श्री --------------- के सुपुत्र चि. --------------- के साथ शुभ मिती --------------- संवत् --------------- वीर नि. सं______________ तदनुसार वार______________ दिनांक__________ सन्____________ को होना निश्चित हुआ है जिसका पाणिग्रहण (फेरों) का समय ______________ बजे है। तोरण निकासी का समय ______________ है। अतः आप सभी महानुभावों से सविनय निवेदन है कि आप बरात लेकर समय से पूर्व पधारें। आपके पधारने से ही सारी शोभा है।

'इति शुभम्'

विवाह के कम से कम पांच या सात दिन पूर्व कन्या और वर अपने-अपने यहां के श्री जिन मंदिर में जाकर शुभ मुहूर्त में विनायक यंत्र की पूजा करे। यहां से घर आकर गृहस्थाचार्य से कंकण बंधन करावें। कंकण बंधन कन्या के बांए हाथ में और वर के दाहिने हाथ में किया जाए। यदि विनायक यंत्र की प्रतिदिन पूजा कर सकते हों तो इसी दिन घर पर लाकर एकांत स्थान में विराजमान कर देना चाहिए और विवाह होने के समय तक रखना चाहिए।

सांकड़ी (बड़ा बान बैठाना)

विवाह के कम से कम तीन दिन पूर्व दूसरी बार मंदिर में जाकर वर और कन्या पूजन करें और घर जाकर पूर्ववत् कंकण बंधन करावें।

कन्या के घर वेदी मंडप हेतु बर्तन लाना

जिस दिन यह शुभ क्रिया करनी हो उसके कुछ समय पहले एक आदमी को कुम्हार के यहां भेजकर बर्तन लाने के लिए कहलवा देना चाहिए। जब कुम्हार बर्तन लेकर दरवाजे के बाहर आ जावे तब सौभाग्यवती स्त्रियां मंगलगान गाती हुई जाएं और कुम्हार को नारियल तथा कुछ द्रव्य देकर संतुष्ट करें। पश्चात् छोटे-बड़े सब मिलाकर २० या २८ बर्तन और एक कलश जिसे पुष्पमाला तथा बिजौरा आदि से सुशोभित किया गया हो, उसे तथा उन कुल बर्तनों को बड़े उत्साह सहित मंगलगानपूर्वक घर के अंदर ले आएं तथा निरापद स्थान पर रख दें।

स्तम्भ (थाम) आरोहण विधान

गृहांगण के मध्य भाग में चार हाथ लंबी-चौड़ी

लग्न लेना

वर का पिता लग्न के आने पर अपने कुटम्ब जनों, इष्टमित्रों व पंचों को सम्मान सहित बुलाएं और उनके समक्ष नव देव पूजन कराए। पश्चात् लग्न पत्र और चिट्ठी को पढ़वा कर सबको सुना दे तथा बुलाए गए सज्जनों का प्रचलित प्रथा के अनुसार सत्कार करें। और लग्न पत्रिका लाने वाले व्यक्ति को स्वीकृति का उचित पत्रोत्तर लिख दें तथा उसे यथायोग्य सत्कार पूर्वक विदा कर दें।

तिलक मंत्र

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलम् गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन-धर्मोऽस्तु मंगलम्।।

कंकण मंत्र (रक्षा सूत्र)

जिनेन्द्र गुरु पूजनं, श्रुत वचः सदा धारणंः।
स्वशील यम रक्षणं, ददन सत्तपो वृंहणम्।।
इति प्रथित षट क्रिया, निरतिचारमास्तां तवे
त्यथ प्रथित कर्मणि, विहित रक्षिका बंधनं।।

विवाह हाथ लेने से मतलब विवाह कार्य में प्रथम ही हाथ डालना है। यह क्रिया सबसे पहले की जाती है। सबसे पहले वर और कन्या का पिता श्री मंदिरजी में प्रातः काल बड़े आनन्दपूर्वक वर एवं कन्या को साथ लेकर श्री जिनेन्द्र देव की पूजन करें, पश्चात् शुभ समय में वर एवं कन्या के तिलक निकाल कर रक्षा सूत्र बांध दें, पश्चात् पांच या सात सौभाग्यवती स्त्रियों से गेहूं, मूंग आदि अनाज जो विवाह में काम आएगा उसको शोधने चुगने आदि का कार्य कराएं। आगत स्त्रियों को गुड़, बतासा आदि बांटे।

छोटा बान (विनायक) बैठाना

चबूतरी की रचना करके ठीक कटनी के पीछे मध्य में जो स्तंभ बढ़ई के यहां से आया है, उसी के अनुसार गड्ढा खुदवाए। गर्त खुदाने के पश्चात् सात सुहागिन औरतें उस स्तंभ को मंगलगान पूर्वक दरवाजे के बाहर से घर के आंगन में जहां विवाह वेदी तैयार हुई है, लाकर एक स्थान पर रख दें, उसी समय गृहस्थाचार्य कन्या को पूर्व की ओर मुंह करके बिठाएं तथा उन्हीं सात सुहागिन औरतों को वहीं खड़ी करके जो गड्ढा स्तंभ रोपने के लिए खुदाया है उसके ऊपर चावलों का स्वास्तिक निकालकर कन्या के सामने जिसके चारों ओर स्वास्तिक निकाला गया है ऐसे मंगल कलश को स्थापित करें, पश्चात् उन्हीं सात सुहागिनों के व कन्या के ललाट पर तिलक निकलवा दें, बाएं हाथ में नाल बांध दें, तथा प्रत्येक के हाथ में सुपारी, मूंग, दूर्वा, हल्दी, सरसों, अक्षत तथा पुष्प देकर मंगलाष्टक पढ़कर कलश में डलवा दें, सवा रूपया नकदी कन्या के हाथ से उसी कलश में डलवा दें। मुख पर श्रीफल रखकर लाल कपड़ा और ऊपर से मोली लपेट कर माला पहना कर स्थापना कर दें। पश्चात् कन्या से नवदेव पूजन कराकर एक छबड़ी में मंगल कलश रखकर वेदी से एक ऊंचे स्तंभ पर सतिया बनावें, चारों दिशाओं में चार खूंटी लगवा दें जिससे वह छबड़ी ठीक बीच में आ जाए, उसमें आम्र पत्र व ध्वजादि सहित मंगल कलश स्थापन मंत्र पढ़ कलश को स्थापित कर मजबूत रस्सी से बंधवाकर उस खड्डे में इस स्तंभ को आरोपित कर दें।

मंत्र : *ऊँ ह्रीं स्वस्तये मंगल कलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं हंसः स्वाहा।*

भात (मायरा) का पहनना

पाणिग्रहण के पहले और थाम गढ़ने के पश्चात् कन्या का मामा जो वस्त्राभूषण लाया है उन्हें अपने संबंधियों को स्थानीय पंचायत के समक्ष पहनाता है उसे भात पहरना कहते हैं। इस अवसर पर कन्या का मामा अपनी शक्ति के अनुसार लाई लागती को वस्त्रादि देता है। जिस प्रकार इधर कन्या का मामा अपने संबंधियों को भात पहनाता है उसी प्रकार वर की निकासी के पहले वर का मामा भी वर के माता-पिता आदि अपने लाई लागतियों को भात पहनाता है। विवाह की आदि में ये शुभ कार्य बड़े महत्व का समझा जाता है। यदि किसी का सगा मामा नहीं होता तो इसी कार्य की पूर्ति के लिए किसी दूसरे को (उसी गोत्र के धर्म भाई को) खड़ा करके यह कार्य कराया जाता है।

घुड़ चढ़ी (निकासी)

बरात चढ़ने से कुछ समय पूर्व वर को स्नान कराकर वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर मुकट बंधन करवा दें। पश्चात् नव देव पूजन कराकर तिलक, रक्षा बंधन कर आशीर्वाद के पुष्पक्षेपण कर दें। पीछे लौकिक शिष्टाचार को पूरा कर गाजे-बाजे के साथ सौभाग्यवती स्त्रियों के मंगलगान पूर्वक श्वसुर गृह यात्रा की निर्विघ्न पूर्णता और मंगल कामना हेतु घोड़े पर सवार हो श्री जिनालय में जाकर भगवान का दर्शन स्तवन वंदना करें और यथाशक्ति श्रीफल व कुछ द्रव्य भेंट कर अपने कुटुंबी, भाई-बंधुओं और बारातियों के साथ उत्सव के साथ श्वसुर घर पर जाने के लिए प्रस्थान करें।

सज्जन मिलावा और तोरण विधान

कन्या का पिता अपने संबंधियों एवं स्थानीय पंचायत के सज्जनों को लेकर वर पक्ष वालों के यहां जनवासे में जाए। वर पक्ष वाले भी कन्या पक्ष वाले सज्जनों को आता हुआ देख कर उठें और उन्हें बड़े

सत्कार से बिठावें। पश्चात् उभय तरफ के संबंधी क्रमश: परस्पर हार्दिक प्रेम प्रकट करते हुए मिलें, इसी का नाम सज्जन मिलावा है। इस अवसर पर कन्या पक्ष की ओर से एक बड़ा घड़ा या अन्य कोई बर्तन आता है और वह वर पक्ष वालों के यहां रह जाता है। वर पक्ष वालों को कन्या पक्ष वाले अपनी शक्ति अनुसार इस समय कुछ नकद द्रव्य देते हैं और वह रुपया विवाह का विनायक द्रव्य समझा जाता है। इसी समय वर को पगड़ी बांधते हैं और जुहारी करते हैं। तिलक करें, रक्षा सूत्र बांधें। पश्चात् कन्या पक्ष वाले वर पक्ष वालों से यह कहकर कि आप सर्व सज्जन तोरण आदि विधान में वर के साथ पधारिएगा। वर का पिता समस्त बरातियों के साथ जिन मंदिर जाकर नृत्यगान और मधुर बाजों की ध्वनि सहित श्वसुर के दरवाजे पर पहुंचें। तब वर के मुख चंद्र को निरखती हुई सासू मोती मिली हुई खीलों की अंजुलि भर के वर के ऊपर बिखेरें। पश्चात् रोली, सरसों, पुष्प, अक्षत, दीपक सहित थाल लेकर वर के सामने खड़ी होकर वर के पैरों पर जल की धार छोड़े, पश्चात् आरती करें। और यथा साध्य मुद्रिका आदि अर्पण करें, पश्चात् तोरण का वर स्पर्श करे। यहां तोरण स्पर्श करने का मतलब वर का प्रथम ही श्वसुर द्वार पर आना और उसे अवलोकन करना है। कोई-कोई भाई जो दरवाजे पर लगे हुए काष्ठ के तोरण में अनेक चिड़ियां एवं शुक वगैरह की मूर्तियों का मारना समझते हैं। यह उनकी भूल है। वास्तव में दरवाजे की शोभा अनेक प्रकार के चित्रों से बढ़ानी चाहिए। मालूम होता है कि जो ये काष्ठ का तोरण बनाया जाता है वह दरवाजों की सजावट का ही अंग है। ऐसे-ऐसे अनेक चित्रों तथा बेलबूटों से दरवाजा सजाया जाता होगा, लेकिन अन्य धर्मियों की संगति से ऐसा लोगों ने समझ लिया है और वर के हाथ से एक नींब की लकड़ी से उस तोरण का स्पर्श कराते हैं तथा ''तोरण मार दिया'' यह जो कहते हैं, वह भी ठीक नहीं है।

कोई क्रियाएं ऐसी भी हों जो पहले से चली आ रही है और जिनके करने से हमारे सम्यकत्व एवं चरित्र में कोई बाधा नहीं आती हो, ऐसी क्रियाएं वृद्ध पुरुषों के कहने पर कर लेने में कोई हानि नहीं हैं, लेकिन बहुत-सी लौकिक क्रियाएं जो अन्य मतावलम्बियों की देखादेखी हमारे जैन धर्म में समा गई हों, जिनके करने से शास्त्र विरोध एवं मिथ्यात्व की वृद्धि हो, उन क्रियाओं को कभी नहीं करना चाहिए। कहा भी गया है :

सर्वोषामेव जैनानाम् प्रमाणं लौकिको विधि: ।
यत्र सम्यक्त्व हानिर्न, यत्र न व्रत-दूषणम्।।

पाणिग्रहण संस्कार विधि

चार घातिया कर्म हनि पाया पद अरहंत।
विघ्न हरण मंगल करन, नमूं आदि भगवंत।।

वर के आने के पहले हवन सामग्री तथा अष्ट द्रव्य आदि सब सामान यथास्थान पर तैयार करके गृहस्थाचार्य को रखवा लेना चाहिए। पश्चात् श्री मंदिरजी से श्री विनायक यंत्र को मंगवाकर पहली कटनी पर जो सिंहासन रखा है उस पर विराजमान करा दें। हवन कुंड में स्वास्तिक सहित अग्निमंडलादि भी लिखकर स्थापन कर लें। पाणिग्रहण के निश्चय किए हुए शुभ मुहूर्त से कुछ समय पहले वर को सवारी पर आरूढ़ होकर श्री मंदिरजी में जिनेंद्र देव के दर्शन करके श्वसुर गृह की ओर आना चाहिए। वर का शुभागमन सुनकर उसकी सास मय सौभाग्यवती स्त्रियों के हाथ में आरती का थाल लिए हुए दरवाजे पर आए और प्रथम ही वर के चरणों पर जल छोड़े। पश्चात् वर की आरती करे और मुद्रिका आदि आभूषण देवे। इस

समय गृहस्थाचार्य मंगलाष्टक पढ़ें और स्त्रियां मधुर गान गाएं, बाजों की मधुर ध्वनि हो। वर के पिता द्वारा जो कन्या के लिए वस्त्राभूषण लाए गए हैं, उन्हें कन्या को स्नानादि कराके पहले ही पहना देना चाहिए। इतना होने पर वर का मामा वर को गोदी में लेकर या हाथ पकड़कर अंदर वेदी के पास लाए और वेदी के बाईं ओर पूर्व मुख करके बिठा देवें। पश्चात् कन्या का मामा भी कन्या को भीतर से गोदी में लाकर वर के दाहिनी ओर पूर्व मुख करके बिठा दे। इस समय बाजों की मधुर ध्वनि होनी चाहिए। जब वर कन्या अपने-अपने स्थान पर बैठ जाएं तब गृहस्थाचार्य उनसे सिद्ध यंत्र को नमस्कार कराएं। पश्चात् मध्य कटनी के दक्षिण की ओर शास्त्रजी विराजमान करे तथा नवरत्न, गंध पुष्प अक्षत इत्यादि मांगलिक वस्तुओं से युक्त करके जल से भरे हुए कलश को नारियल सहित लाल व पीले वस्त्र से ढककर निम्न गद्य के उच्चारण पूर्वक मध्य कटनी पर स्थापन करें -

ऊँ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्राह्मणों मते मासोत्तम ------- मासे -----पक्षे ---- तिथौ ----- वासरे सर्वदूषण रहिते-ऽस्मिन् विधीयमान विवाह (विधान) कर्मणि ----- गोत्रोऽहं -------पौत्र: ------ पुत्र ------- नामाऽहं हवनमंडप भूमि शुद्धयर्थ, क्रिया-शुद्धयर्थं पुण्याह वाचनार्थ, नवरत्नगंध पुष्पाक्षतादि-बीजपूर-शोभितं शुद्ध प्रासुक तीर्थजलं पूरितं मंगलकलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं क्ष्वीं हंस: स्वाहा।

गठजोड़ा (ग्रंथिबंधन)

सभा मंडप में समस्त स्त्री-पुरुषों के समक्ष सौभाग्यवती स्त्री के द्वारा कन्या की ओढ़नी (साड़ी) के पल्ले में चवन्नी १ सुपारी, हल्दी की गांठ, सरसों, पुष्प रखकर वर के दुपट्टे के पल्ले के साथ निम्न मंत्र बोलते हुए गठजोड़ा करा दें।

अस्मिन् जन्मन्येष बंधोद्वयोर्वै,
कामे धर्मे वा गृहस्थत्व भाजि।
योगो जात: पंच देवाग्नि साक्षी,
जाया पत्योरंचल ग्रन्थि बंधात्।।

गठजोड़े का मतलब यह है कि दोनों दंपतियों के समस्त लौकिक और धार्मिक कार्यों में सर्वदा मजबूत प्रेम गांठ है जो कभी नहीं खुल सकती क्योंकि यह देव, अग्नि और पंचों की साक्षी में बंधी है।

हथलेवा (पाणिग्रहण)

इसके पश्चात् कन्या के पिता कन्या के बाएं हाथ में व वर के दाहिने हाथ में पिसी हुई हल्दी को जल में घोल कर लेप करें, यानी पीले हाथ करें, इसे ही पीले हाथ करना कहा जाता है। इसके पश्चात् गीली मेंहदी व एक रूपया वर के सीधे हाथ में रखकर उस पर कन्या का बांया हाथ निम्न श्लोक बोलते हुए जोड़ दें। कहीं यह क्रिया भाई भौजाई, कहीं सौभाग्यवती स्त्रियां, कहीं पिता करते हैं।

हारिद्र पंकमवलिप्य सुवासिनीभि
दत्तं द्वयो जनकयो: खलु तौ गृहीत्वा।
वामं करं निज सुतां भवमग्न-पाणिम्,
लिम्पेद्वरस्य च कर-द्वय योजनार्थ।।

इस विधि के होते ही हथलेवा अवश्य छुड़ा देना चाहिए। कन्या का पिता तिलक कर हथलेवा का दस्तूर देकर वर को राजी करें।

फेरे और सप्तपदी

हथलेवा के पश्चात् वर कन्या को खड़ा करा के कन्या को आगे और वर को पीछे रखकर वेदी में चंवरी के मध्य में यंत्र सहित कटनी और हवन की प्रज्वलित अग्नि युक्त स्थंडिल के चारों ओर छह फेरे दिलवाएं। प्रत्येक प्रदक्षिणा के अंत में जब वर और कन्या वेदी के सन्मुख आ जाएं तब निम्न क्रम से एक-एक अर्घ्य चढ़ावें।

(१) ॐ ह्रीं सज्जाति परम स्थानाय अर्घ्यं।

(२) ॐ ह्रीं सद्गृहस्थ परम स्थानाय अर्घ्यं।

(३) ॐ ह्रीं पारिव्राज्य परम स्थानाय अर्घ्यं।

(४) ॐ ह्रीं सुरेन्द्र परम स्थानाय अर्घ्यं।

(५) ॐ ह्रीं साम्राज्य परम स्थानाय अर्घ्यं।

(६) ॐ ह्रीं आर्हन्त्य परम स्थानाय अर्घ्यं।

छह फेरों के पश्चात् वर और कन्या को अपने पूर्व स्थान पर पहले के समान खड़ा करा दें, यदि खड़ा रहने में आकुलता हो तो गृहस्थाचार्य उनको बिठा सकते हैं। इसी अवसर पर वर की ओर से सात प्रतिज्ञाएं कन्या करे।

वर की ओर से ७ प्रतिज्ञाएं

(१) मेरे कुटुंबियों की यथायोग्य सेवा, विनय, आदर सत्कार करना।

तुम्हें पहले हे प्रिये मेरे सभी परिवार के।
साथ में करनी विनय होगी यथावत जान के।।
चूंकि करना बड़ों की सेवा हमारा फर्ज है।
सुख इसी के साथ है अरु कुछ न अपना हर्ज है।।१।।

(२) मेरी आज्ञा को कभी भंग न करना।

तुम्हें मेरी नित सदाज्ञा पालनो होगी प्रिये।
नहीं उल्लंघन करि सकोगी, यह समझ लो तुम हिये।।
बढ़ै इज्जत आबरू तुम्हारी सभी के बीच में।
सुख हमें भी प्राप्त हो, दुख हो नहिं अध बीच में।।२।।

(३) कड़वा और मर्म भेदी वचन मत बोलना।

कटुक निष्ठुर वचन तुमको बोलना होगा नहीं।।
क्योंकि इससे सुख गृहस्थी का कभी मिलता नहीं।।
वचन तीखे बोलने से दिल दुखै हिंसा लगै।
हर समय संक्लेशता ठाडी रहैं समता भगै।।३।।

(४) सत्पात्रादि (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि) के घर आने पर अपने मन को कलुषित मत करना।

वचन चौथा भी हमारा मानना होगा तुम्हें।
घर में सत्पात्रों को देना दान भी होगा तुम्हें।।
मन न कलुषित करना होगा खूब दिल में सोच लो।
दान में शोभे गृही ये वाक्य ऋषि के देख लो।।४।।

(५) रात्रि को दूसरे के घर पर बिना पूछे मत जाना।

रात्रि में पर घर तुम्हें जाना न होगा हे प्रिये।

क्योंकि सतियों के चरित में लगे धब्बा इमि किये।।

यदि पड़े मौका तुम्हें सहधर्मि के घर पर कदा।

जाने का तब बड़ों को ले साथ में जाना तदा।। ५।।

(६) जहां बहुत से आदमी जमा हो रहे हों भीड़-भाड़ हो ऐसे स्थान पर मत जाना।

जिस जगह बहुजन ठसाठस भरे हों मारग न हो।

उस जगह जाना तुम्हारा वाजिबी है क्या कहो।।

क्योंकि ऐसी जगह में इज्जत धरम बचता नहीं।

जल में डुबकी मारि क्या सूखा कोई निकला कहीं।

(७) जिसका आचरण खराब है ऐसे मांस मद्यादि सेवन करने वाले

कुत्सित धर्मियों के घर पर मत जाना।

दुराचारी मद्यापायिन के न घर जाना कभी।

क्योंकि इनके साथ से खो बैठना होगा सभी।।

होय जाति च्युंत जगत में धर्म धन अपना हरै।

सच्चरित्र धरै विनय युत, वह उभय सुख विस्तरै।। ७।।

यदि तुम मेरी इन सातों शर्तों को मंजूर करो तो मेरी वामांगी हो सकती हो। तब वधू कहे कि मुझे आपकी उक्त सातों शर्तें मंजूर है। वर के सप्त वचनों को मंजूर कर कन्या वर के प्रति कहे कि आपको भी मेरे सात वचन स्वीकार करने चाहिए।

कन्या की ओर से सात प्रतिज्ञाएं

(१) अन्य स्त्रियों के साथ क्रीड़ा मत करना।

प्रियवर सातों वचन आपके शिरोधार्य कर कहती हूं।

करो आप भी मेरे वचन स्वीकार अर्ज ये करती हूं।

पर कामिनी से नेह करो मत वह विष बुझी कटारी है।

मिलै न सुख ऐसा करने से जग में होय खुआरी है।१।

(२) वेश्यादि खराब स्त्रियों के घर पर मत जाना।

वेश्या जग की झूठी पातल, झूठ प्रेम दिखाती है।

हंसि-हंसि सब धन लूट लेय पीछे जूता दिखलाती है।

धर्म लुटेरी पाप पोटरी, नर्क नसैनी भ्रष्ट सदा।

उसके घर मत जाना प्यारे, सुख न मिलेगा तुम्हें कदा।२।

(३) जुवा मत खेलना।

द्यूत व्यसन की सुनो कथा, जिससे होती है अमित व्यथा।

धन नष्ट होय बुधि भ्रष्ट होय नहीं रहे विवेक चरित्र तथा।

इससे शिकार चोरी जारी, मद्योपल का सेवन होता।

मत खेल खेलना द्यूत कभी हे आर्य। सुख व्यसनी खोता।३।

(४) न्यायोपार्जित द्रव्य कमा कर, योग्य वस्त्र आभरणों से।

मेरा रक्षण करना प्यारे, मत ठुकराना चरणों से।।

अन्याय मार्ग का धन न रहै दिन रात खड़ी आपत्ति रहे।

हे प्राणाधिक। ऐसे धनका तुम त्याग करो जिन वचन कहै।

(५) मन्दिर, तीर्थ क्षेत्रादि धर्म स्थान पर जाने से मुझे मत रोकना।

किसी धर्म कारज से मुझको, मत वंचित स्वामी रखना।

बना संगिनी मुझ अर्द्धांगिन को सब धर्म कार्य मुझ श्रर्द्धांगिन को सब धर्म कार्य करना।

इसीलिए मैंने तुमको, प्राणेश्वर नाथ बनाया है।

क्योंकि बड़ों की संगति से लघु होय बड़ा बतलाया है।५।

(६) घर संबंधी कोई बात मुझ से गुप्त मत रखना, ताकि परस्पर सलाह कर सकें।

एक बात जो तुमसे कहती जो है प्रेम बढ़ावन हार।

गृह वा अन्य व्यक्ति संबंधी गुप्त बात हो प्राणाधार।

उसे मुझे निज प्राण बराबर, समझि तुरत कहना प्यारे।

क्योंकि हृदय में रहने से वह, दुख देती है अनिवारे।६।

(७) मेरी गुप्त बात दूसरे के आगे प्रकाशित मत करना।

मम संबंधी गुप्त बात को कभी सामने गैरों के।

मत कहना कारण कि तुम्हें वे शरमावेंगे कह कह के।

अपने घर की गुप्त बात को समझदार नहीं कहते हैं।

बल्कि छिपाते हैं उसको वे इज्जत अपनी रखते हैं।७।

इसके उत्तर में वर कहे कि ये सातों प्रतिज्ञाएं मुझे मंजूर हैं। जब वर वधू दोनों ही परस्पर में प्रतिज्ञाबद्ध हो जाएं तब वधू को वर के वामांग कर देनी चाहिए उस समय गृहस्थाचार्य दोनों के मस्तकों पर पुष्पांजलि क्षेपै। वर को आगे और कन्या को पीछे करते हुए सातवें फेरे के बाद निम्न मंत्र बोलकर अर्घ्य चढ़ावें।

ॐ ह्रीं निर्वाण परमस्थानाय अर्घ्यं।

सातों फेरे हो जाने के पश्चात् वर और कन्या वेदी के सामने ज्यों के त्यों खड़े हो जाएं, बैठें नहीं और वर कन्या के और कन्या वर को परस्पर वर माला पहनाएं।

यहां पर गृहस्थाचार्य गार्हस्थ्य जीवन के महत्व पर उपदेश दें और दान का महत्व बताकर वर पक्ष तथा कन्या पक्ष दोनों से दान की घोषणा कराएं।

विवाह समारोह संबंधित संपर्क सूत्र

पंडितजी व शास्त्री जी :

अखिलेश्वर	9435040387, 9957186838
श्रवण महाराज	9435083680
नंदकिशोर जाजरा	9435015554
नारायण शास्त्री	9435405868
नवीन जी	9954708669
भागीरथ शर्मा	9435118627
बजरंग जीडु	9435199424
सुरेश गौड़	9707777945, 9864272809
अशोक शाश्वत	9864172615
शिवशंकर	9435015623
जयंत झा (कोलकाता)	09903846599
गिरधारी	9864097836
ईश्वर	9864097836
गोपाल	9864047407, 9435551245
लाल मुरारी	9435118727

कुंडली मिलान :

भविष्य दर्शन	9864017445, 9435040124
डीके त्रिपाठी शास्त्री	9435013134
हितेष डेका	9864084880
पी शिव कुमार कौशिक	9864204354

पापूलर वेबसाइट :

www.marwarishadi.com
www.sammelankamrupsakha.com

मेंहदी एवं हिना के लिए :

तारा बाई	9864044579
मंजू	9954313529, 9864557083
संगीता	9707354975
चंपा	9864126626
पिंकी	9954854757
सुमन	9864045517
हेमा	9864172774
सुमन (नलबाड़ी)	9577460781
रामेश्वरी	9864045510
मनीषा	9508955603
चिंकी	9954313529
पुष्पा शर्मा	8876524004
शशि शर्मा	9854376200

समारोह गीत :

राजो बाई	9864060512
सरोज बाई	9954985020
पुनम	9707174366
कौशल्या बाई	9864803453
त्रिवेणी बाई	7896488251
नरदा बाई	9864036700
सौरभ की मम्मी	9864122879
निर्मला शर्मा	9864516089
शारदा शर्मा	9864083748
अनु शर्मा	9954496668

फोटोग्राफी :

सुभाष	9706015666, 9435144874
तुषार	9864060765
अनील पारिक	9954174859

संपत मिश्रा	9864065441
मनोज पारिक	9706490341
उत्तम वर्मा	9864063124, 943555034

ढोलक :

संजय	9954192794
अप्पु दास	9707351122
बतोष दास	9401565049

फैंसी पैकिंग :

संगीता	9707354975
अनीता चौधरी	9453111074
सुमन सीकरिया	9435015940

माइक सीस्टम

सुबरातो राय	9864124169
रीपुण दा	9435048531, 9954048531

डीजे एंड एंकरिंग

कबीर	9435305648, 9864175707
नवीन शर्मा	9864809761
रितेश अग्रवाल	9864107830, 9707518279
आकाश सुर	9954853164
ब्रिज सर	986408678

कैटरिंग

अभय बड़जात्या	9435196259, 9864327073
राजू महाराज	9864060569, 9954068366
ओम जी	9678010615, 9435110368
माखनभोग	9864138650
मीलेनियम	2739057, 2739049
आहा	9864096840, 9435393703
महाराज नेमीचंद	9435731543
दयाल	9864016692
कनक जैन	9864060524
अरुणा खेतान	9864109909
संतोष शर्मा	9954190205, 9707512261
परमेश्वर शर्मा	9435550988

पानीपूरी

बी.एस कुमार	9085842969
पंडित	8876075836
रामनाथ शाह	9678585175
दिलीप रारा	9864558619

मुहरी/मुरमुरा

रामलखन शाह	9401732339
राजेश	9954506397
राम भाई	9085509736

चुशकी

परमोश शाह	8011266267
विजय शाह	9678851372

कुल्फी

अशोक महता	9864091130, 9859443588

भारतीय एवं विदेशी फल

सिंह फ्रूट	864204512,9954195185

आचार एवं नाश्ता

ओमजी सारावगी	94354110368

पापड़ और बड़ी

कृष्णा देवी	9864303953
कृष्णा गोयल	9435909149

मिष्टान भंडार एवं रेस्तरां

भारतीय जलपान	2605368, 2514656
बोम्बे स्वीट्स एण्ड स्नेक हाउस	2763813

गोपाल महाराज	2510364
जेबी' स(गणेशगुरी)	2341249
जेबी' स (फैंसी बाजार)	2603448
जयश्री की रसोई	2519907
खुशबू	9706098849
लक्ष्मी मिष्टान भंडार	2542213
मधुकुंज	2545056, 9864013288
मारुती रेस्टोरेंट (बेलतला)	9864167088
रूकमाण	9854025444, 9854023444
सालासार मिष्टान भंडार	2514559
संगम मारूति भंडार	9954975924
शर्मा स्वीट्स	2592895, 2639326
किरणश्री	2480026, 9207001717
माखन भोग	2467778, 9854081406
एसएमटी स्वीट्स	8486708050
किरणश्री जी.एस रोड	9207075005
किरणश्री एच.बी रोड	9703003131
किरणश्री एयरपोर्ट	9207075011

बीयरर एवं वर्कर

कृष्णा(विजयनगर)	9864124169
पदमा दास(विजयनगर)	9954689534

टेन्ट

हलदार	9864045367

भवन एवं होटल

महावीर भवन,ए.टी रोड	2630540
जैन भवन, रेलवे गेट नं:7	2547447
तेरापंथ भवन, एम.एस रोड	2736761/62
अग्रवाल विवाह भवन, के.सी रोड	2519940
डागा हाउस, ए.टी रोड	9435342182
हरयाना भवन, नारायन नगर	2480884
आसाम महेश्वरी भवन	9401045147
मिलैनियम क्लब	2739049, 2739057
मोहनलाल जलान भवन	2739049, 2543657
आई टी ए सेंटर, माछखोआ	2631139
राम मंदिर विवाह भवन	2517487
सनेनीरीया धर्मशीला,एसआरसीबी रोड	2543687
श्री पंचायत	2514711, 9954801188
समता भवन	2600929
सिद्धा प्वाइंट	9864068434
सीपानी गेस्ट हाउस	9854044471, 9854044411
श्री गोहाटी गोशाला	2548860
भवींद्रालय	9864037137
नकशत्रा	6111222
ब्रह्मपुत्र रेसीडेंसी	2738446, 9435305479, 9435306614
विश्वरत्न	2607712-15
राजमहल	2511602-604
रीतु राज	2732201-02-03, 9864250888
हरियाणा गेस्ट हाउस	2480903
बाहुबली धर्मशाला, दिसपुर	2595151
महावीर स्थल	2630540, 9864096650
नंदन	2540855, 97060988 45
प्राग कोन्टीनेंटल	2540850/8 51
किरणश्री पोरटीको	9706098011

समारोह प्रबंधन (अग्रणी प्रतिष्ठान)

अम्बीका सेलीब्रेशन	9954326385
सेलीब्रेशन अनीमेटेड	9435011746
चेतना ग्रुप	9864026593
डेकोरा	
डाइरेक्ट मिडिया काम्युनीकेशन	2510011 / 9613890300
कामाख्या इवेंटस	9401727098-9706594902
मंत्रा मिडिया (प्रा) लि	995757588 4

प्राडीगी कम्युनीकेशन 2463898
परसाइट सल्युशन 2228488, 8011888488, 931837476
एस एम सेट डिज़ाइनरस 2479443/98 64096488
एस एन इवेंट 2733090 9435556371 9864035134
स्मीथ' स क्रियेशन 8822816578
उर्वशी ए यूनिट आफ इवेंट मेनेजमेंट 9864047359
उत्सव दी इवेंट 9854000815
वीशन इवेंट एण्ड इंटरटेंमेंट 9435709100 8486002939
वरशटाइल 360 9864123157
उमंग कम्युनीकेशन 2733641/9864081643
उवर्शी 9864047359/9864455167

फूल सज्जा

क्लासिक फ्लावर डेकोरेटर 9864094249
दीपांजलि फ्लावर डेकोरेटर 9508595482 8876424174
फरन्स एण्ड पेटल 9706033311/7578009319 8255099502
ग्रीन्स 9435080338
नयनज्योति फ्लावर डेकोरेटर 9864157632
पंछी इंटरटेंमेंट एण्ड इवेंट 9706018799 9768018799 9854018791
रोज़ेश एण्ड अरामीस 9864037445
सानु फ्लावर डेकोरेशन 9864092166
सुजय डेकोरेटरस 9854110723
थीम स्टूडियो 9864050056
उदय फ्लावर डेकोरेटर 9864060841

रूप सज्जा (प्रचलित ब्रांड)

बल्श पार्लर 9207027777
कर्व स्पा एण्ड सैलुन 9595345925
डी पालीरीक्स ब्युटी क्लीनीक 2466643 2529013
गलेमोनीज़ ब्युटी एण्ड स्पा सैलुन 9706487334 8473960777
गलीस्टन स्पा सैलुन 9706499003
गाड एण्ड गाडस ब्युटी सैलुन 9707071439
हेड टनर्स 2510716/9435100709
हेड टनर्स 2200033
हेवनली हैयर 9706031375
इरा' स ब्युटीक 9854267084
आइोसीस 2603111
जावेद हबीब हैयर एण्ड ब्युटी सैलुन 18001026116
कायाक्लप पार्लर 2511602 2549141/44/45
क्लर्स एन स्पाइक्स 9706222000
एल 16 प्रीमीयम 9854082999
एल बलांड हैयर एण्ड स्पा सैलुन 9864069441
लैक्मी ब्युटी सैलुन 7086010051
वीएलसीसी 2345555 / 2346666
वीएलसीसी 2373816/876 9859928108

महिला रूप सज्जा केंद्र, गुवाहाटी

आकृति लेडीज ब्युटीपार्लर 9864208376
अलिशा ब्युटीपार्लर 9864101369
अंजलि लेडीज ब्युटीपार्लर 9707727382
ओरा ए बुटिक सैलून 9207044444 8811001000 8811002000
बशनबी ब्युटी पार्लर 9864101415
बलश स्पा एण्ड सैलुन 9207027777
ब्रशअप लेडीज ब्युटी पार्लर 9864116097
सीटी लेडी ब्युटी पार्लर 9435043789

डी यैलो बैलुन	9707333066
दर्पण लेडीज ब्युटीपार्लर	2203577
	9864060894
दर्पण ब्युटीपार्लर	9954276549
फ्रेश लुक	9864155228
आई एम शी प्रोफेशनल	9864124959
9706135760	
जावेद हबीब हैयर एण्ड ब्युटीपार्लर	8001026116
कायाकल्प	2549141
	2549146
	2549144/45
	2549143
लेडी सीमलाइन पार्लर	9859566499
माइना ब्युटीपार्लर	9508386879
मिरोर एण्ड कोम्बस	9864152161
न्यू लुक्स लेडीज पार्लर	8254056903
पैशन	9954747903
प्रीति ब्युटी पार्लर	9864092319
रिया ब्युटी पार्लर	9864128234
सैण्डी स्पा सैलुन	9401082972
सीज़र पैलेस युनिसेक्स	
स्पा एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्युट	9613569440
	9577616740
शहनाज़ क्लीनिक	9864078026
शहनाज़ हर्बल	2663396
शहनाज़ ब्युटी पार्लर	2517170
शाइन बलोंड	2345670
	9864023456/8011011080/9678005500
शाइन लेडीज़ ब्युटी पार्लर	9707138602
स्पीनेक्स	2467788
ट्रु वैलनेस स्पा सैलुन	2737105
	8486035778
वीनस ब्युटी पार्लर	9864060991
वीनस हर्बल ब्युटी पार्लर	2734881
वोमन हर्बल ब्युटी पार्लर	8486913103

पुरूष रूप सज्जा

ए सी पार्लर	8011495008
ओरा बुटिक सैलुन	8811001000
	8811002000
बप्पी सैलुन	9859192629
बाबा लोकनाथ जेन्टस पार्लर	8489431478
बिग बोस जेन्टस पार्लर	9954116226
बिग बास जेन्टस ब्युटी पार्लर	9435013054
ड्रीम ब्युटी पार्लर	9859055832
हबीब ब्युटी	9864097408
हैड टर्नर	2465058/9707026506
ग्लैमर जेन्टस ब्युटी पार्लर	9854638963
जे एन मेन्स पार्लर	9859222352
जीतेन हैयर क्राफट सैलुन	9508864175
कंचन ब्युटी पार्लर	9859411155
सैण्डी स्पा सैलुन	9401082972
सीज़र पैलेश युनिसेक्स	
स्पा एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट	9613569440
	9577616740
एस बी थाइ स्पा	2345800
	9854014141
शाइन ब्लांड	2345670
	9678005500/9864023456
	9864023456/8011011080
स्पीनेक्स	2467788
स्टाइल फैक्टरी	8011919151
संतुष्टि ब्युटी पार्लर	9678467362
ट्रु वैलनेस स्पा एण्ड सैलुन	2737015
	8486035778

RHINO

Rhino Print O Packs

Make an Impression

Explore

Offset Printing

Customised Paper Packaging Boxes

Carry Bags

Brouchure/Poster

Leaflets

Exercise Book Covers

Foil Printing & Embossing NEW

Label/Sticker

CITI Complex, Kalapahar Industrial Area, Bishnupur, Guwahati - 781016
Cell : 7670011162, e-mail : rhinoppsl@gmail.com
Web : www.rhinoprintopacks.com

SONA

Glamour

SALON

SANITARY PARADISE

Distributors

PADMINI

POLYSET

FURNITURE

POLYSET

TATA swach

WATER PURIFIERS

DINEWELL

cello

OPALWARE

SONAKI

REFINED BONECHINA

5th Floor, Anil Plaza - II, G.S.Road, A.B.C., Guwahati - 781 005 (Assam)

Email : sonakicrockery.ghy@gmail.com

basant.maheswari02@gmail.com

Phone : +91-0361-2466065

चिरंजीव की पत्नी ही सौभाग्यवती क्यों होती है

हिंदी भाषा क्या स्त्री और पुरुष के बीच भेदभाव करती है? हिन्दी ही क्यों, क्या कोई भी भाषा अपने बोलने वालों के साथ किसी भी तरह का छल कर सकती है? पिछले दिनों मुझे अपने एक मित्र की बेटी की शादी का निमंत्रण पत्र मिला। उसके भाई ने बड़े शौक से लिखवाया था, सौ. सरिता और चि. राहुल का पावन परिणय। सौ. का मतलब है सौभाग्यकांक्षिणी और चि. का अर्थ है चिरंजीवी। निमंत्रण पत्रों में प्राय: इसी तरह से सौं (या सौ. का.) और चि. लिखा जाता है। लेकिन कार्ड देखकर राहुल के ताऊ बिफर गए। उन्हें लगा कि सौ. का मतलब सौभाग्यवती है। बोले, सरिता सौभाग्यवती कैसे हो गई? अभी वह कुमारी है। सौभाग्यवती तो शादी के बाद होगी।

पति से जुड़ा भाग्य : नीचे कई पाठको ने भी लिखा है कि ताऊ का बिफरना सही नही था क्योंकि सौ. का मतलब सौभाग्यकांक्षिणी ही होता है और इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन मेरा सवाल कुछ और हैं। अगर लड़की कुंआरी है तो वह सौभाग्यवती क्यों नहीं हो सकती? हमारे भीतर यह सोच जड़ जमाए बैठी है कि लड़कियों का सौभाग्यवती होना अनिवार्य रूप से उनके किसी पुरुष की पत्नी होने में ही निहित है। वह पढ़-लिख कर डॉक्टर हो जाए, कलक्टर हो जाए, बैंक मैनेजर हो जाए, करोड़ों की वारिस हो जाए- यह सब उसके सौभाग्य का लक्षण नहीं है। जब पति मिलेगा, तभी वह सौभाग्यवती हो सकेगी और शादी से पहले उस सौभाग्य की आकांक्षा करती रहेगी(इसीलिए सौभाग्यकांक्षिणी)। पर ठीक यही बात पुरुष पर लागू नहीं होती है। लड़के को शादी के पहले सौभाग्यकांक्षि और शादी के बाद सौभाग्यशाली नहीं लिखा जाता। उससे कोई शादी करे या न करें, वह भाग्यशाली होने के लिए स्वतंत्र है। ताऊ की दौलत मिल जाए तो भाग्यशाली, नौकरी मिल जाए तो भाग्यशाली। उसका भाग्य स्त्री से उसके संबंध के अधीन नहीं है।

शब्द और अर्थ : पेर लिनेल ने भाषा और भाषाशास्त्र में बसे पूर्वाग्रहों पर काफी काम किया है। अपनी किताब 'द रिटन लैंग्वेज बायस इन लिंग्विस्चिक्स' में वह लिखते हैं कि जब हम कोई शब्द या वाक्य बोलते हैं तो उसे एक ठोस और स्थिर मूर्ति का प्रतिनिधि मानते हैं। मसलन जब हम स्त्री कहते हैं तो हमारे दिमाग में सुंदर, लंबे बाल, साड़ी में लिपटी एक मूर्ति बैठी होती है। भाषा में हमारा वाक्य या शब्द उस मूर्ति की जगह ले लेता है। लेकिन उस मूर्ति की स्थापना हमारे अपने सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों से होती है, इसलिए स्त्री कहते या सुनते समय हमारे सामने स्कर्ट-ब्लाउज और छोटे बालों वाला कोई चित्र नहीं उभरता।

जब शादी के कार्ड में छपता है चिरंजीवी राहुल, तो इसमें यह भावना निहित रहती है कि लड़के की उम्र लंबी है। चिरंजीवी शब्द के साथ लड़के की

एक ठोस मूर्ति हमारे दिमाग में पहले से मौजूद होती है। उसकी जगह लड़की की मूर्ति नहीं रखी जा सकती, क्योंकि हमने सुंदर रूप वाली सरिता की मूर्ति गढ़ी है, लंबी उम्र वाली सरिता की नहीं। सरिताओं की लंबी उम्र से हमारे समाज को कोई खास सरोकार नहीं है। कहते हैं कि हम अपनी सच्ची भावनाएं अपनी मातृभाषा में ही व्यक्त करते हैं। चिरंजीवी और सौभाग्यकांक्षिणी हमारी मातृभाषा में निहित सोच की दो उत्कृष्ट अभिव्यक्तियां हैं। यहां वह अपने-आप ही व्यक्त हो जाती हैं। ऐसे देश में भ्रूणहत्याएं हों और महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार हो, तो आश्चर्य कैसा? एक और उदाहरण देखिए। शादी के बाद स्त्री पत्नी कही जाती है और पुरुष पति। पत्नी शब्द का कोई अलग अर्थ नहीं है। व्याह कर लाई गई स्त्री पत्नी है। लेकिन पति का अर्थ सिर्फ जीवनसाथी होना नहीं है। इसका अर्थ स्वामी और मालिक होना भी है। जैसे पशुओं का पति पशुपति, कुल का पति कुलपति, पूरे राष्ट्र का पति राष्ट्रपति। इसलिए शादी होते ही पुरुष होने के कारण आपको उस स्त्री का स्वामी होने का दर्जा मिल जाता है। हिंदी ने जीवनसाथी कहने के बावजूद स्त्री को पुरुष के बराबर नहीं रहने दिया।

जब हम बहुत शालीनता और आदर दिखाते हुए अपनी पत्नी का परिचय कराते हैं तो बताते हैं कि ये हमारी धर्मपत्नी। लेकिन इसका अर्थ क्या है? धर्म की व्यवस्था के कारण यह मेरी पत्नी है। धर्म के कार्यों में साथ देने के लिए इस स्त्री को हमारी पत्नी का दर्जा प्राप्त है। यानी पत्नियां और भी हो सकती हैं, इन्हें यह विशिष्ट दर्जा प्राप्त है। दूसरी पत्नी रखना धर्म या विधि सम्मत भले न हो, संभव तो है। लेकिन आप इसी व्यवस्था को उलट कर देखिए। क्या कभी पति का परिचय धर्मपति के रुप में कराया जाता है? आखिर स्त्री को भी उसका पति धार्मिक अनुष्ठान से ही प्राप्त होता है। स्त्री के धर्म कार्यों में भी पति को उसी तरह से सहयोग देना होता है। तो जब धर्मपत्नी हो सकती है, तो फिर धर्मपति क्यों नहीं होता? धर्म बहन होती है, धर्म भाई होता है, धर्म पिता होता है, लेकिन पति के मामले में स्त्री के लिए दूसरा कोई विकल्प ही नहीं है।

छोड़ना और छोड़ जाना :एक अन्य उदाहरण देखें। पति जिसे छोड़ दे वह स्त्री परित्यक्ता हो जाती है लेकिन स्त्री छोड़ कर चली जाए तो पुरुष परित्यक्त नहीं कहा जाता। पुरुष उसे 'छोड़ देता है' और स्त्री 'छोड़ कर चली जाती है'। हिंदी में एक ही तरह की क्रिया के लिए स्त्री और पुरुष के संदर्भ में अलग-अलग शब्द और अभिव्यक्तियां है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारी सामाजिक व्यवस्था में पारंपरिक रुप से घर और संपत्ति पुरुष के कब्जे में है। रिश्ता तोड़ने या खत्म करने में उस संपत्ति से बेदखल करने का दबाव निहित है। इसलिए पुरुष छोड़ता है और स्त्री को छोड़ कर जाना पड़ता है। भाषा छल नहीं करती, लेकिन वह बेचारी क्या करे। उसे तो वही अर्थ ढोने होते हैं, जो हमारी सोच में, हमारी सभ्यता में बसे हैं। तो अगली बार कभी अपनी ही भाषा में ऐसा कोई छल या दुराग्रह नजर आए तो सोचिए कि कसुर किसका है, भाषा का या समाज की सोच का?

बालमुकन्दजी, नवभारत टाईम्स, 27 मई 2017 में प्रकाशित

संग्रहकर्ता : श्री रतन कुमार अग्रवाला, सह-सम्पादक, ***परिणय।***

वैदिक विवाह पद्धति
राजस्थानी पृष्ठभूमि से

रोकना – बेटे के विवाह में

जब रिश्ते की बात निश्चित होती है तो अच्छा दिन देखकर घरवाले व मित्रगण मिलकर एक छोटा-सा आयोजन कर इस रिश्ते को पक्का करते हैं।

- ❖ लड़की की गोद भरते हैं।
- ❖ टीका लगाते हैं।
- ❖ फूल माला पहनाते हैं।
- ❖ गहना पहनाते हैं।
- ❖ हाथ में गन्नी या रुपया देते हैं।
- ❖ कपड़े व सामान देते हैं।
- ❖ जो लड़की के छोटे भाई या बहन साथ में आते हैं, उनको भेंट (गिफ्ट) या रुपया देते हैं।
- ❖ जो बेटे के लिए सामान की थाली आती है, उसे खाली करके उसमें कुछ शगुन का रुपया रखते हैं (कोई चीज खाली वापस नहीं भेजनी चाहिए)।
- ❖ संगीत एवं नाश्ते की तैयारी की जाती है।

रोकना – बेटी के विवाह में

- ❖ जँवाई का तिलक करते हैं। तिलक करते समय (नारियल नहीं देते, वह कोरथ के बाद से ही देते हैं)।
- ❖ गिन्नी या रुपया देते हैं।
- ❖ सुविधानुसार घड़ी या गहना पहनाते हैं।
- ❖ फूलमाला पहनाते हैं।
- ❖ कपड़ा व सामान देते हैं।
- ❖ फल व मेवा देते हैं।
- ❖ मिलनी – वरपक्ष की महिलाओं की मिलनी होती है (इच्छानुसार)
- ❖ जो बेटी के लिए सामान की थाली आती है, उसे खाली करके उसमें कुछ शगुन का रुपया रखते हैं।
- ❖ भोजन व नाश्ते की व्यवस्था करते हैं।

संक्रांति का नेग – जँवाई के यहाँ

यह १४ जनवरी को मनाया जाता है।

- ❖ सगों के यहाँ और लड़के के नाना के यहाँ दोनों जगह यह नेग भेजा जाता है।
- ❖ लड्डू – बूँदी के
- ❖ घेवर
- ❖ रुपया
- ❖ नाश्ता, फल।

चौंक चाँदनी का सिंधारा-जँवाई का

यह सिंधारा गणेश चतुर्थी/भादो-सितम्बर में आता है।

- ❖ जँवाई के कपड़े
- ❖ २ चाँदी के डंके
- ❖ शगुन के रुपये
- ❖ सासुजी की तील (२ साड़ियाँ)
- ❖ कुँवारे देवर, ननद के लिए कपड़े एवं परिवार के अन्य सदस्यों के लिए इच्छानुसार सामान भेजते हैं।
- ❖ मिठाई, फल
- ❖ जँवाई के साथ ड्राईवर आता है उसे भी रुपया देते हैं।

सिंधारा – बहू का

बहू के दो सिधारे मनाये जाते हैं

एक सावन में – (जुलाई/अगस्त)

एक चैत्र में – (मार्च)

- बहू को शगुन की मेहंदी लगवाते हैं।
- सुविधानुसार गहना, कपड़ा, रुपया देते हैं।
- बहू के साथ यदि छोटा भाई या बहन आते हैं, तो उन्हें भी कुछ उपहार देते हैं।
- साथ में मिठाई एवं फल देते हैं।
- भोजन कराते हैं।

होली का नेग – जँवाई को भेजते हैं

- पिचकारी
- छोटी सी डिब्बी में केसर
- जँवाई का कुर्ता पजामा
- सास की तील (२ साड़ी ब्लाउज)
- होली के रंग
- ठण्डाई, शर्बत
- फल
- मिठाई

होली का नेग – बहू को भेजते हैं।

- बहू के लिए खुशरंग के कपड़े (लाल, पीले, केसरिया)
- कुछ श्रृंगार के सामान
- गहना सुविधानुसार
- होली के रंग
- मिठाई

दीपावली (जँवाई का नेग)

- कुर्ता पायजामा
- कुर्ते के बटन (सुविधानुसार)
- चाँदी का सामान
- सास की साड़ी
- मेवा
- मिठाई
- पटाखे

दीपावली (बहू का नेग)

- बहू के कपड़े (घाघरा)
- गहना (सुविधानुसार)
- श्रृंगार का सामान
- मिठाई
- पटाखे

सगाई का नेग, मुद्दा – टीका

तैयारी (बेटे के यहाँ की) वरपक्ष

- अंगूठी मोली (नाल) बाँधकर
- एक भारी साड़ी या ओढ़ना टीके की थाली में
- ४ साड़ी बहू की एवं सजाने का सामान
- एक कचोला (बड़े मुँह की चाँदी का प्याला)
- ४ लड्डू वरक लगाकर कचोले में रखते हैं
- लड़की वाले कचोले से लड्डू निकालकर कचोला वापस दे देते हैं।
- २ गोद/एक मुद्दे की, एक टीके की (गोद में पाँच तरह का मेवा (बादाम, पिश्ता, किशमिश, मिश्री व कटा हुआ छुआरा) व गिन्नी/रुपया रखते हैं।

नोट : काजू व नमकीन मेवा गोद में नहीं रखते

- १ फूल माला टीके के लिए
- आरती की थाली– मोती तिलक के लिए, हरी मूँग, दूब, रोली, चावल, गुड़ (बरक लगाकर), जल
- एक थाली मेवा की
- एक थाली फल की
- रंगीन छोटा गमछा

- रुपये की थैली
- वाराफेरी का लिफाफा
- जोशन व नेवगन के रुपये का लिफाफा

तैयारी (बेटी के यहाँ की) वधू पक्ष

- १ चाँदी का रुपया मोली लपेटकर (जो बहन/ बुआ नेग करती हैं उनको देते हैं)
- एक कपड़े की थैली में सुविधानुसार रुपया डालकर रखते हैं सगों के यहाँ से जो लड्डू के साथ कचोला प्याला) आता है उसमें से थोड़े लड्डू निकालकर यह रुपये की थैली उस कचोले में रख देते हैं।
- जँवाई के कपड़े व सामान (इच्छानुसार)
- सास की तील (दो साड़ियाँ)
- सगों की तील
- बहन-बेटियों के हाथ का सामान एवं रुपया (सुविधानुसार)
- वर पक्ष के अन्य संबंधियों के लिए सामान (इच्छानुसार)
- जोशी एवं नाई के लिए चाँदी का सामान या रुपया
- मिलनी (इच्छानुसार) घर की महिलाएँ बेटे वालों के यहाँ आयी हुई महिलाओं को मिलनी देती है (यह प्राय: ४ रुपयों से की जाती है)
- दो चौकी व २ गद्दी
- छोटे गमछे हाथ पोछने के लिए
- एक थाली जिसमें कचोले से लड्डू व फल व मेवा निकालकर रखते हैं।
- नाश्ता अथवा भोजन की व्यवस्था
- संगीत की व्यवस्था

मुद्दे का नेग

- बहू पूर्व दिशा में मुँह करके चौकी पर बैठती है,
- बहन/बुआ उसके सामने चौकी पर बैठती है।
- बुआ या ननद पहले बहू को रोली से टीका करती है,
- फिर चावल एवं मोती लगाती है।
- बहू को अंगूठी पहनाती है (आजकल कई जगह ननद की जगह लड़का अंगूठी पहनाता है)।
- अंगूठी में मोली बाँधती है।
- गुड़ या मिश्र से बहू का मुँह मीठा करते हैं।
- बहू की गोद भरी जाती है।
- लड़की वाले बहन/बुआ को मोली में लिपटा चाँदी का रुपया देते हैं।
- बहू को चौकी से उठाकर ननद जो नेग करती है, उसे प्रणाम करवाते हैं।

टीके का नेग

- मुद्दे के बाद बहू को टीके का ओढ़ना उढाते हैं।
- फूल की माला पहनाते हैं।
- बहू की गोद भरी जाती है।
- बहू द्वारा घर के बड़ों को प्रणाम करवाते हैं।
- नेग करते समय बहू के लिए आशीष के मंगल गीत गवाते हैं।
- इसके बाद चाय नाश्ते की व्यवस्था रहती है।

हरा भरा - बेटी के यहाँ की तैयारी

यह नेग मुद्दा के बाद तुरन्त होता है।

- २ छितरी/थाली में पोदीना भरकर भेजते हैं एक सगों के लिए एक नाना के लिए
- थाली में रुपया रखते हैं
- डब्बों में लड्डू रखकर भेजते हैं
- फल व मेवा भेजते हैं।

हरा भरा - बेटे के यहाँ की तैयारी

- २ साड़ी, २ ब्लाउज (लड़की के लिए)

- २ डब्बी (रोली, मेहंदी के लिए)
- १४ लाल लाख की चूड़ी, पात के साथ, मोली बाँधकर
- नारियल
- आदमियों के लिए रुपया मुद्दा के बाद यह सामान एक ट्रे में रखर बहू के लिए भेजते हैं।

नोट : जो पोदीना समधी के यहाँ स आता है उसका छूता निकालने के बाद चटनी बनाते हैं।

वर/वधू की माँ विवाह का निमंत्रण देने अपने पीहर व ननिहाल जाती है और उन्हें विवाह में सम्मिलित होने का निवेदन करती है। अच्छा दिन देखकर भात न्योतने जाते हैं।

इस मांगलिक कार्य के पहले हाथ में मेहंदी लगवाते हैं।

तैयारी

- एक थाली में आधी दूर चावल, आधी दूर मूँग सजाकर उसके ऊपर गुड़ की भेली रखकर सेलोफेन से पैक करते हैं।
- एक डिब्बी में ५ सुपारी, ५ हल्दी का गाँठ, मूँग, चावल, रोली, सूखा धनिया, प्लास्टिक थैली में डालकर, डब्बी को कसूमल कपड़े में बाँधते हैं
- एक थाली में बिना नमक का पाँच तरह का मेवा रखते हैं
- एक थाली में नारियल और गट सजाकर रखते हैं
- नारियल भाई के तिलक के लिए
- गट भाभी के तिलक के लिए
- सवा गज जरी का कपड़ा, सवा गज लाल कसूमल कपड़ा एक थाली में रखते हैं, इसे काप रहते हैं।
- एक नारियल नाल में लपेट कर रखते हैं- भाई के लिए
- आधे कटे गट में ७ हल्दी गाँठ, ७ सुपारी, मूँग, चावल, १०१ रुपया रखकर कसूमल कपड़े में बाँधते हैं- भाभी के लिए
- लड्डू
- नेवगन, मिसरानी व आदमियों के लिए रुपये के लिफाफे
- भात न्योतने के समय पहले पीहर की नेवगन पाँव धोती है। नेवगन को इसका नेग देते हैं।
- एक थाली में एक नारियल मोली बंधा हुआ, एक कॉप, रोली की डब्बी कसूमल कपड़े में बाँधकर थोड़ा मेवा, मेवे की थाली में निकालकर, बड़े भाई के हाथ में टीका निकालकर देते हैं। इसे बत्तीसी कहते हैं।
- आधा कटा गट भाभी के हाथ में टीका निकालकर देते हैं।
- फिर सब भाई, भाभी, भतीजों को टीका निकालते हैं।
- नारियल व गट देते हैं।
- साथ में लड्डू भी जाते हैं।
- पीहर के आदमियों/सेवाधारियों को रुपया देते हैं।
- पीहर की मिसरानियों को रुपया देते हैं।
- मूंग-चावल की रसोई बनती हैं।

ब्याह हाथ

वर-वधू पक्ष की महिलाएँ शुभ-मुहुर्त में विवाह कार्य प्रारंभ करती हैं। इस दिन अपने परिवार की महिलाओं को बुलाकर वे मांगलिक गीत गाती हुई मूँग चुनती हैं व मंगोड़ी बनाती है। शादी से ५, ७, ११, २१ दिन पहले अच्छा दिन देखकर ब्याह हाथ लेते हैं।

तैयारी

- पहली रात २५० ग्राम मूँग की दाल भिगाते हैं, सुबह उसे पीसकर रखते हैं
- एक पीतल का खूमचा-परात
- एक सीधी चाबी का ताला
- ७ कोयले के टुकड़े, ७ नमक के ढेले
- एक बर्तन में हाथ धोने का पानी

- छोटे गमछे–हाथ में पोंछने के लिए
- गुड़ के छोटे–छोटे टुकड़े सेलोफेन में बाँधकर रखते हैं
- २ लोहे की लम्बी छलनी, मोली बाँधकर रखते हैं
- २ पीढ़े, गद्दी, चौकी
- परोत : एक थाली में मूँग, चावल गुड़ व ५१ रुपये
- २ रूमाल में मेवे की पोटली ५ तरह का बिना नमक का मेवा डालकर बनाते हैं (लड़के, बिंदायक के लिए)
- डगरे में ढाई किलो मूँग रखते हैं
- आरते की थाली रोली, चावल, मोली, गुड़, दूब, फूल
- चोपड़ा टीके के लिए
- आरते का रुपया
- छात का रुपया
- गीत गाने वाली मिसरानी के लिए रुपया
- पहले साबुत मूँग को डगरे में डालकर ब्याह हाथ लेते हैं।
- लड़के की शादी में मूँग के ऊपर ब्याह हाथ लेते हैं।
- लड़का–लड़की चौकी पर पूर्व दिशा में मुँह करके बैठते हैं।
- लड़का लड़की की चौकी के नीचे परोत रखते हैं।
- लोहे की छलनी में ४ मूँग रखते हैं, लड़का (लड़की) के साथ दो लोग इकट्ठे होकर, पहले लड़का (लड़की) अपनी माँ के साथ नेग करता है, फिर अन्य सुहागनों के साथ।
- पीतल की बड़ी थाली पीढ़े पर रखते हैं, उस पर पत्तल रखकर पत्तल के बीच सीधी चाबी का ताला रखते हैं।
- फिर उसके चारों तरफ ७ कोयले के टुकड़े, ७ नमक की डली रखते हैं।
- इसके चारों तरफ पीसी हुई दाल से लड़का (लड़की) मोटी–मोटी ७ मंगोड़ी तोड़ता है।
- मंगोड़ी पर रोली की टिक्की लगाते हैं।
- लड़का (लड़की) घर की सुहागिनों के हाथ में दाल की पिट्ठी देता है।
- सुहागिनें इसके चारों तरफ छोटी- छोटी मंगोड़ी तोड़ती है। लड़के (लड़की) के साथ ६ सुहागिनें (कुल सात की गिनती होती है)।
- मंगोड़ी तोड़ने के पहले सुहागिनों को टीका लगाया जाता है, मोली बाँधी जाती है।
- मंगोड़ी तोड़ने के बाद लड़का (लड़की) सब सुहागिनों के हाथ में सेलोफेन में पैक छोटा गुड़ का टुकड़ा देता है।
- लड़का (लड़की) एवं बिंदायक के हाथ में घर के बड़े रूमाल में पाँच तरह का मेवा बाँधकर देते हैं।
- बहन/बुआ आरता करती है।
- आरते की छात नाई को देते हैं।
- मिसरानियों को गीत का रुपया देते हैं।

मूँग डालने का कारण – मूँग हरे रंग के होते हैं तथा हरित वर्ण वाली भूमि जिसे शस्य श्यामला कहते हैं वह मानसिक उल्लास देने वाली मानी गयी है। मूँग जिस प्रकार हरे हैं उसी प्रकार हम भी इस लड़के/लड़की के विवाह में हरे रहें, प्रेममय हो जाएँ अत: हरे रंग के मूँग डालने का विधान माना गया है।

गणेश – पूजा

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा,
संग्रामे संकट चैव विघ्नस्तस्य न जायते।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्,

येषां हृदिस्थो भगवान मंगलायतनं हरिम् ।।

सभी शुभकार्य प्रभु कृपा का प्रसाद है, मंगल परिणय भी इसी का फल है। शादी का काम निर्विघ्न प्रारंभ हो इसलिए विवाह के शुभारंभ में गणेशजी एवं अपने इष्ट देव की पूजा, आराधना अवश्य की जाती है।

तैयारी

- दो चौकी
- परोत (थाली में मूँग, चावल, गुड़ व ५१ रुपये)
- मिट्टी का कलश, आम के पत्ते लगाकर ढक्कन के साथ
- शादी का कार्ड या कुंकुम पत्रिका मोली बाँधकर
- मूँग, दूब, हल्दी की गांठ, चांदी का रुपया व पूजा की सामग्री
- एक नारियल

नेग

- सब घरवालों को बुलाते हैं।
- लड़का (लड़की) व बिंदायक चौकी पर बैठते हैं।
- चौकी के नीचे परोत रखते हैं।
- एक मिट्टी के कलश में जल डालकर आम-पत्ते लगाकर ऊपर ढक्कन रखते हैं। ढक्कन में मूँग व दूब रखते हैं। इस कलश को जहाँ थापा मण्डता है उस कमरे में रखते हैं पूजा के बाद नारियल पर कुंकुम पत्रिका (शादी का कार्ड) मोली बांधकर रखते हैं व उसकी पूजा पंडितजी कराते हैं।

नोट – लग्न पत्रिका में हल्दी की गाँठ, मूँग, चाँदी का रुपया आदि जो रखे जाते हैं, उनका भी एकमात्र कारण इन पदार्थों का मांगलिक होना ही है। हल्दी की गाँठ, मूँग, चाँदी आदि पदार्थ मांगलिक होते हैं अत: उन्हें लग्न पत्रिका के साथ रखते हैं। बिंदायक/बिनायक-विवाह कार्य ठीक से सम्पन्न हो इसलिए घर के छोटे लड़के को बिंदायक बनाते हैं, यह गणेश जी का स्वरूप माना जाता है। बिंदायक ब्याह हाथ लेने से तेलबान तक वर/वधू के साथ रहता है।

<u>हल्दी-हाथ (हल्दात)</u>

गणेश पूजा के साथ होता है

तैयारी

- ऊखल - मूसल
- दो सूप सजाकर
- २ करछुल (लोहे के चम्मच)
- एक कठौती
- आरते की थाली
- छात का रुपया
- फूल तमोल का रुपया (पगा लगाई)
- कोरेबड़े
- पत्तल
- सुपारी
- नाल जोड़ी
- दो रुमालों में मेवे की दो पोटली,
  बिना नमक का, पाँच तरह का मेवा
- डालकर बनाते हैं, लड़का (लड़की व बिंदायक के लिए)
- बेल कलेवे का सामान चार चाँदी के सामान रुपया फल की टोकरी मेवा
- पोस्ता (भिगाकर)
- बताशा
- चाँदी की हँसली
- चाँदी की अंगूठी (छाप)
- चाँदी की चिटिया (घड़ी)

- २५० ग्राम जौं
- ७ हल्दी की गाँठ
- पैसा

नेग

- चौकी पर लड़का (लड़की) व बिंदायक बैठते हैं।
- उनके सामने पीढे पर पत्तल रखते हैं। उस पर बीच में सुपारी के गणेशजी विराजते हैं (सुपारी के नीचे दो पैसे देकर उसे नाल से बांधकर गणेशजी बनाते हैं)।
- लड़का (लड़की) सुपारी के गणेशजी के चारों तरफ ७ बड़ी मंगोड़ी तोड़ता है और उस पर रोली की टिक्की लगाता है।
- बाद में लड़का (लड़की) के साथ ७ की गिनती में (लड़का या लड़की + ६ सुहागिन) सुहागिन मंगोड़ी तोड़ती है।
- पहले सब सुहागिनों के टीका लगता है व मौली बांधती है।
- बाद में वह पीढ़ा जिस पर पत्तल में मंगोड़ी रखते हैं, भंडार में रख देते हैं। (लड़के की शादी में यह मंगोड़ी सुहागथाल पर बनती है, लड़की की शादी में यह पुठमोड़े की रसोई में बनती है)।
- लकड़ी के कठवे में नमक डालकर उसे करछुल से ७ बार हिलाते हैं।
- घर का बड़ा व्यक्ति लड़के को हँसली, अंगूठी पहनाकर चिटिया (छड़ी) देता है। (लड़की की शादी में चिटियाँ नहीं देते, केवल हँसली व अंगूठी पहनाते हैं)।
- २ सूप में जौ, हल्दी की गाँठ, सवा रुपया रखकर सात बार लड़का (लड़की) और उसकी माँ फटकाते हैं। बाद में सुहागिनें एक-दूसरे के साथ सूप फटकाती हैं।
- हल्दहात का आरता होता है।
- नाई को छात का रुपया देते हैं।
- साथ जोड़ी नाल पंडित पूजा करके घर की बड़ी महिला की कण्ठी में बाँधते हैं, वह कण्ठी अलमारी में रख देते हैं। लड़की की शादी में इसे विदाई के बाद खोलते हैं।
- लड़के के शादी में इसे बहू के आने पर खोलते हैं फिर उसे सुहाली पेठे पर पैसे के साथ रखकर घर की बड़ी महिला को दे देते हैं।
- चाब - लड़का (लड़की) की माँ भीगे हुए पोस्ते की साथ कुड्डी एक थाली में करती है और उसके ऊपर सात बताशे रखती है। बाद में उसे रोली से चिरचकर उसके ऊपर रुपया रखकर अपनी सासू या घर की बड़ी महिला को पाँव लगकर दे देती है।
- लड़के वाले को बेल कलेवा भेजते हैं।
- २५० कोरे बड़े बनते हैं जो लड़की की शादी में समधी को जाते हैं।
- मूँग-चावल की कच्ची रसोई बनती है। पहले छूता निकालकर ब्राह्मण को जिमाते हैं। फिर घर वाले जीमते हैं।

नाल तानना (सिर्फ लड़के की शादी में)

तैयारी

- ७ कुकड़िया या कच्चा सफेद धागा
- आरते की थाली
- सैलोफेन में लपेटकर छोटे-छोटे गुड़ के टुकड़े
- मोली
- परोत (थाली में मूँग, चावल, गुड़ व ५१ रुपये)
- चौकी
- गद्दी

नेग

- लड़के को मिलाकर ७ सुहागिनें इस नेग को करती है।

- लड़का व बिंदायक चौकी पर बैठते हैं।
- चौकी के नीचे परोत रखते हैं।
- लड़का, माँ/भाभी के साथ सात जोड़ी छोटी नाल करीब ३ लम्बाई की तानता है। उसे सूते से एक के अन्दर एक डालकर गाँठ बांधते हैं। बाद में नेवगन उसे पीला- लाल रंगती है। इसे सतनाला कहते हैं। फिर उसे बहू की सिरगूथी में काम में लेते हैं।
- सब सुहागिनें मिलकर नाल तानती हैं।
- नाल को कच्चे धागे से बाँधते हैं।
- रंगने के बाद यह नाल शादी के नेगचारों में काम में आता है।
- नाल बांधने से पहले सब सुहागिनों को टीका लगता है व मोली बाँधते हैं।
- लड़का नेग के बाद सब सुहागिनों को एक गुड़ का टुकड़ा सैलोफेन में पैक करके देता है।

<u>मंडेरा चढ़ाना वर परखाई</u> <u>-(लड़के के यहाँ का</u> **<u>नेग</u>**

- मंडेरा मिसरानी चढ़ाती है उसे रुपया व मिठाई देते हैं।
- वर परखाई का नेग लड़की के यहाँ भेजते हैं
- दो कंठी (इच्छानुसार)
- चार जगह चाँदी का सामान
- नाई के कपड़े एवं रुपया
- जोशन की दो साड़ी-ब्लाउज
- जोशी का सफारी सूट व रुपया (विदाई में)
- एक थान सफेद कपड़े का (विदाई में)
- सगों के आदमियों के लिए रुपये

<u>रात्रि-जुगा (थापा मंडेगा)</u>

तैयारी

- मिट्टी की चौड़े मुँह की हाँड़ी (इसे झावा भी कहते हैं) अंदर मूँग भी रखते हैं।
- मिट्टी की सराई
- पेठा, सुहाला
- सफेद लकड़ी का बोर्ड थापा मांडने के लिए
- जरी का ब्लाउज पीस
- चाँदी का रुपया
- आपन- (चावल एवं हल्दी को पीसकर बनाते हैं)
- पियावड़ी (पीला रंग)
- हिरमच (लाल गेरू)
- ननद के लिए थापे माँडने का नेग
- एक रंगी हुई काँसे की कटोरी
- एक चालनी/छलनी
- मिसरानी व नेवगन के लिए रुपया
- घी
- कच्ची सुपारी
- कांगन डेरा
- मूँग
- मैदा
- मेहंदी
- रोली
- फूल माला
- पीला पाठा
- चक्की
- नाल की बत्ती
- साबुत नाल की जोड़ी
- लकड़ी की बोर्ड पर पहले हिरमच लगाते हैं, फिर आपन को कुप्पी में भरकर आकार (डिजाइन) बनाते हैं व उसे मेहंदी, रोली व मैदा से सजाते हैं।
- लड़के की शादी में थापा तिकोना चोंचदार नारियल के आकार का बनता है। उसके चारों तरफ स्वस्तिक बनाते हैं।
- लड़की की शादी में थापे में छाबड़ी बनती हैं।

उसके चारों तरफ स्वस्तिक बनाते हैं।

- थापे पर एक जोड़ी नाल, चाँदी का रुपया व सुपारी चिपकाते हैं।
- पहले बहन, बुआ टिक्की देती है, फिर मिसरानी थापा मांडती है।
- बहन/बुआ को थापा मांडने का नेग देते हैं।
- घर के सब लोग बैठकर पूजा करते हैं।
- एक छितरी मिट्टी की हंडी (झावा) में मूँग डालते हैं।
- मूँग के बीच में काँसे की कटोरी रखते हैं।
- चक्की पर सथिया बनाकर, मोली बाँधकर, घर की सुहागन महिलाएँ उसमें सात बार जौं और मेहंदी डालकर पीसती हैं।
- मिसगानी गीत गाती है, उसे रुपया देते हैं।
- कटोरी में घी चालकर, नाल की बत्ती लगाते हैं। उसे घर के नौकर से चसवाते हैं और उसे रुपया देते हैं।

नोट : थापे के सामने चार हंडी या भांड में यह सामान रखते हैं

१. पेठा, सुहाली
२. जरी का ब्लाउज और रुपया
३. उबटन (हल्दात की जौं व हल्दी गाँठ को नेवगन पीसकर रखती है)।
४. मूँग, चावल थोड़ी सी मेहंदी पीसते हैं।

तेलबान

नोट : लड़की के माता-पिता शादी के दिन कन्यादान तक व्रत करते हैं। यह क्रिया एक तरह से वर/कन्या के शारीरिक सौन्दर्य व धन की उद्देश्य से की जाती है। तेलबान में दूब से वर-वधू के शरीर के सभी भागों पर तेल चढ़ाने, उतारने का औषधीय महत्व है।

तैयारी

- २५० मीठी पकौड़ी रुपये के साथ बहन/बुआ के बाने के लिए
- एक पाटा
- एक चौकी
- चार सकोरे पूजा के एक सकोरे में पीठी (हल्दात की जौं, हल्दी की गाँठ चक्की में पीसकर बनाते हैं। एक सकोरे में मेहंदी पीसकर रखते हैं। एक सकोरे में सरसों या ऑलिव ऑयल रखते हैं एक सकोरे में दही रखते हैं।
- दो जगह दूब नाल बाँधकर रखते हैं।
- टोपी (लड़के के विवाह में)
- ५० मीठी चिल्ली कुँवारी लड़कियों के हाथों के लिए (२५० ग्राम आटे-चीनी के घोल से बनाते हैं)
- ४ घूघरे का मीठा पूड़ा (चीला बनाकर उसके बगल में छोटे गोल-गोल पूड़े बनाते हैं)
- मूँग भात की रसोई बनती है
- थापे के सामने आरता एवं छात के रुपके का लिफाना
- कांगन डोरा और फूल माला, लड़के (लड़की) के लिए
- ओढ़ना/चंदोवा के लिए एक कागज में ७ चिल्ली लपेटकर उसे ओढ़ने के बीच में मोली से बाँधते हैं (चदोवा के लिए पीले का प्रयोग नहीं करते)
- झोल- एक कटोरी में दही, मूँग, चावल, दूब और चाँदी का सिक्का डालते हैं।
- लड़का (लड़की) पुराना कपड़ा पहनकर पीढ़े पर बैठते हैं। लड़का टोपी पहनकर बैठता है।
- चार कुँवारी लड़कियाँ चंदोवा के लिए खड़ी होती है। उनके हाथ में ७-७ छोटी चिल्ली देते हैं (पीठी लगाने के बाद)।
- तेलबान चढ़ाते समय का क्रम- (चार बार लगाते हैं)

पहले पाँव पर

फिर घुटनों पर

फिर खँवा/कंधों पर

फिर सिर पर

- उतारते समय का क्रम पहले सिर, मस्तक पर फिर खँवा/कंधों पर फिर घुटनों पर फिर पाँव पर
- पिट्ठी कुँवारी लड़की लगाती है। इसमें एक बहन/बुआ भी होती है।
- तेलबान के बाद नहाते समय पिता सिर पर झोल डालता है व माँ रगड़कर नहलाती है।
- नहाने के बाद लड़का (लड़की) के सिर पर चंदोवा रखा जाता हैं। फिर मामा हाथ पकड़कर लड़का (लड़की)को थापे के सामने लाता है। मामा सकोरे को पाँव से तोड़ता है, जूता पहनकर (सकोरे की दो कुड्डी करते हैं ४ सकोरे १ उल्टा १ सीधा)।
- मामा लड़के (लड़की) के हाथ में शगुन के रुपये देते हैं।
- अब बिंदायक भी थापे पर साथ में बैठता है (बिंदायक तेलबान पर नहीं बैठता) ४ घूघरे लड़के (लड़की) को देते हैं। चार घूघरे बिंदायक के हाथ में देते हैं।
- कांगन डोरा वर-कन्या एवं परिवार के सदस्यों का रक्षा सूत्र हुआ करता है) बहन/बुआ काँगन डोरा बांधती है, चिरचकर आरता करती है। पाँच में कौड़ी वाला डोरा बांधते हैं व हाथ में सादा बटा हुआ डोरा बाँधते हैं।
- फूलमाला लड़का (लड़की) और बिंदायक को पहनाई जाती है।
- २५० मीठी पकौड़ी पर शगुन का रुपया रखकर बाई/बुआ को पाँव लगाकर लड़के (लड़की) की माँ देती है।

कुँवारा माण्डा जगाना

बेटे के ब्याह में जोशी, नेवगी कुँवारा माण्डे के लिए बहू के घर जाते हैं।

तैयारी

- सवा पाँच मीटर कसूमल कपड़ा
- एक टूटी वाली कैरी
- सात जोड़ी नाल
- पाठा- २ लाल कागज- २ पीले कागज (जिसकी झण्डी बनती है जो स्तम्भ में लगाते हैं)
- हिरमच व पियावड़ी
- लड़की वालों के यहाँ इन आदमियों को नाश्ता कराकर रुपया देते हैं।

हवन

- तेलवान के बाद सुबह हवन होता है।
- ११ पंडित भोजन करते हैं।
- उन्हें दक्षिणा दी जाती है।
- मूँगभात की रसोई व पक्की रसोई बनती है। हरी फली का साग भी बनता है।
- पहले रसोई का छूता निकलता है।
- पंडित भोजन करते हैं।
- घरवाले भोजन करते हैं।

पहरावनी निकालना (शादी के दिन)

घर के पूर्वजों (पितरों) की पहरावनी निकालते हैं।

- पुरुषों की पहरावनी निकालते है (५ वस्त्र-धोती, कोटा का कपड़ा, कमीज, गंजी, रुमाल, टोपी का रुपया)।
- पीतर जी की पहरावनी में टोपी की जगह पगड़ी का रुपया रखते हैं।
- महिलाओं की पहरावनी निकालते हैं (२ साड़ी व ब्लाउज)
- मिसरानी को नई साड़ी, ब्लाउज देते हैं।
- घर के सब आदमियों के नये कपड़े।
- घर के सब सदस्यों के लिए साफा (लड़के की शादी में)

- जो पण्डितजी शादी करवाते हैं उनके लिए नये वस्त्र।

भात भरना

मामा के घर की तैयारी

- पोली की जरी की साड़ी
- कसूमल कपड़े का घूंघटिया (डेढ़गज गोटा लगाकर) शादी के दिन वधू के घाघरे में टांगा जाता है बाद में गठजोड़ा बाँधा जाता है।
- भात की थाली में डालने के लिए रुपया
- शरबत के ग्लास के लिए नन्द को देने का नेग
- वारा फेरी का रुपया
- नेवगन को पगा धुलाई का नेग
- मिलनी के रुपये की थैली
- पगा लगाई का रुपया

नोट : जो गुड़ की भेली, नारियल व गट बहन भात न्योतने के समय पीहर लाती है, भाई भात भरते समय उसे वापस बहन के घर लाते हैं।

दात

- ७०७ रुपया
- १६ जरी की ब्लाउज पीस (आज कल कई लोग चांदी की डब्बी दे देते हैं)
- जंवाई के कपड़े, छोटे-भाई बहन के कपड़े
- दो साड़ी लड़की की
- दो साड़ी समधन के लिए (ओढ़ना, साड़ी)
- २ मन पापड़, आधा मन मंगोड़ी (स्टील की टंकी में) थोड़ा- थोड़ा पापड़ व मंगोड़ी २ छोटे भाण्ड में अलग से रखते हैं।
- चौकी
- समधी एवं समधन की फोटो (भगवान की फोटो)
- कलश, कचोला, लोटा
- लड़की के लिए गहना
- बहन के लिए गहना

बहन के घर की तैयारी

- २ चौकी (चौकी के नीचे आटे से पूरना)
- आरते की थाली
- ट्रे में गट और नारियल (सजाकर)
- लड्डू
- टीके के लिए मोती (इच्छानुसार)
- थोड़ा पानी, मूँग, चावल ग्लास में डालकर उसके मुँह को लाल कपड़े से बाँधते हैं - शर्बत का ग्लास भाई के लिए
- भाई-भतीजों के लिए उपहार
- वाराफेरी के लिफाफे
- मूँग-चावल की रसोई
- भात संबंधी गीत
- भाई की पगा धुलाई के लिए तसला, पानी जग में, गमछा

भात का नेग

- भाई के घर के दरवाजे पर पोली की साड़ी देते हैं (यह नेवगन के लिए होती है)।
- भाई की पगाधुलाई का नेग नेवगी करता है, उसे नेग मिलता है।
- जो गुड़ की भेली, नारियल, गट-बहन भात न्योतने में ले जाती है वह भाई वापस लाता है।
- बहन भाई का टीका करती है।
- भाई बहन को चुनरी उढ़ाता है। यही साड़ी बहन शादी के दिन पहनती है।
- बहन चुनरी के आंचल से भाई की छाती नापती है।
- सजा हुआ नारियल भाई को देती है।
- गट भाभी को देती है।

- लड्डू से भाई और भाभी की मुँह मीठा करती है।
- उनसे गले मिलती है।
- भात का उपहार देती है।
- भाई का आरता करती है।
- भाई व भाभी की वाराफेरी करती है।
- भाई बहन की आरता की थाली में रुपया डालता है।
- बहन की वाराफेरी करता है।
  - भाभी बहन को पगा लगाई देती है।
- बहन की ननद शर्बत का ग्लास भाई को देती है। भाई उसपर नेग रखता है।
- पीहर से जो और भाभी व भाई- भतीजे आते हैं बहन उनका टीका करती है।
- पीहर वाले बेटी के ससुराल की सभी बड़ी महिलाओं को मिलनी देते हैं।
- फिर सब भोजन करते हैं।

घरवा (वधू पक्ष)

तैयारी मामा के घर की

- गणगौर व गणगौर के कपड़े, गहना और नथ
- बिछिया, पायजेब लड़की के लिए
- गहना लड़की के लिए
- चांदी का दीया
- चांदी का घरवा (गेरू से पोतकर प्यावड़ी से माँड कर) ब्वाउज पीस व नेग बहन की ननद के लिए

तैयारी वधू पक्ष

- चाँदी का रुपया
- काँवला (हाथ के लिए चांदी का पात)
- गुजरी (कान के लिए सोने का पात)
- नाल की बत्ती (दीपक की)
- कैरी (मिट्टी की टोटी वाली, पानी भरकर)
- लम्बी नाल जोड़ी
- ४ लड्डू भाभी के पल्ले के लिए
- नारियल लड़की के पल्ले के लिए
- २ लड्डू बड़ी माठी पर, जरी के ब्लाउज का कपड़ा, रुपया
- बहन/बुआ को पाँव लगकर देने के लिए नेग
- पट्टा
- रोली, मेहंदी, काजल, दूब, हल्दी, गाँठ, चाँदी का छल्ला, सुपारी, पेठा, सुहाली, जरी का
- ♦ कपड़ा, रुपया चढ़ावे का
- ♦ पगालगाई
- ♦ ११ पंडितों को भोजन का निमंत्रण

घरवे का नेग

- ♦ मामी बैठकर घरवा पुजाती है।
- ♦ पट्टे पर चाँदी का घरवा गेरू से पोत कर प्यावड़ी से माँड कर पूर्व दिशा की तरफ रखते हैं।
- ♦ घरवे में थोड़ा-सा चावल रखकर चाँदी के दिए में नाल की बत्ती बनाकर रख देते हैं। मामी मिट्टी की गणगौर को कपड़े व नथ पहनाकर घरवे के बगल में रखती हैं।
- ♦ लड़की को काँवला, गुजरी पहनाते हैं, बिंदिया, पायल और गहना पहनाते हैं।
- ♦ लड़की दे दोनों हाथ पीली हिरमच से रँगकर उसके हाथ में चांदी का रुपया देते हैं।
- ♦ गणगौर पुजते समय थम्ब के पास दीया जलाते हैं।
- ♦ मामी गणगौर को घरवे से सजाकर रखती हैं, फिर गणगौर की पूजा करती हैं।
- ♦ गणगौर के गीत गाते हैं, गणगौर को छीटें लगाते हैं, मेहंदी लगाते हैं।
- ♦ पानी की कैरी लड़की के हाथ में रहती है पीछे से मामी लड़की को एक हाथ से पकड़ती है,

लड़की के सीधे पाँव के अँगूठे में लम्बी नाल की जोड़ी डालते हैं, लड़की के हाथ में चाँदी का रुपया व पल्ले में नारियल डालते हैं, मामी के पल्ले में लड्डू डालते हैं। नालजोड़ी के ऊपर का हिस्सा मामी पकड़ती है। कैरी से थोड़ा- थोड़ा पानी डालते हुए मामी व लड़की ४ बार दात की तीयल जो स्तम्भ के पास रखी होती है, उसके चारों तरफ घूमती है, फिर बैठकर गणगौर प्रणाम करती हैं।

- मामी माठी के ऊपर ब्लाऊज और नेग रखकर उसे ननद/बुआ को देती है।
- मामी घर की बड़ी महिलाओं को घरवे की पाँव लगनी देती है।

कोरथ

वधू पक्ष की तैयारी

- १ फूल माला-ट्रे में
- १ डगरे में मूँग, चावल व गुड़ की भेली
- २ कलश के अंदर मूँग चावल डालकर बाहर स्वस्तिक करके ऊपर कपड़े के सुन्दर कवर से ढककर एक ट्रे में सजाते हैं।
- आरते की थाली
- जँवाई के तिलक के रुपये
- पुरुषों की मिलनी (दादा-नाना) के लिए चार-चार रुपये की थैली
- शादी का कार्ड

नेग (वर पक्ष)

वधू पक्ष के घर के बड़े (दादा-नाना) व पंडितजी वर के घर कोरथ लेकर आते हैं।

- वर पक्ष वाले के यहाँ वधू के घर के पंडितजी वर के शादी के कार्ड की पूजा कराते हैं।
- लर को फूल की माला पहनाते हैं।
- वर का तिलक करते हैं, नारियल देते हैं व नेग देते हैं।
- वधू पक्ष वाले समधी व नाना की मिलनी करते हैं।
- वधू पक्ष का ब्राह्मण जँवाई का आरता करता है, नाई छात करता है।
- लड़की वाले सगों को हाथ जोड़कर लगन का समय बताकर शादी के लिए आमंत्रित करते हैं।
- चाँदी के कलश दात के पास रख देते हैं।
- वर पक्ष वाले वधू पक्ष के पण्डितजी को दक्षिणा देते हैं।
- वधू पक्ष के मेहमानों को नाश्ता कराते हैं।

घुड़चढ़ी, निकासी (वर पक्ष)

तैयारी

- घोड़ी का इन्तजाम करना
- छत्र, तलवार
- बिछावत, गद्दी
- पेंचा
- फूल माला, पान
- एक कटोरी व चम्मच, मूंग, चावल, घी, चीनी (माँ खिलाती है)
- एक चांदी का ग्लास पानी के लिए
- एक चांदी की काजल की डब्बी/काजल की पेंसिल
- नूनराई की थैली
- गोंटा लगाकर चुनरिया छोटी बहन की नूनराई के समय उड़ाने के लिए
- सजी हुई नीम की डाली
- आरते की थाली
- घोड़ी की साड़िया प्रिन्टेड (घर की सुहागन लड़के

की माँ) को दी जाती है।

- ४ पीले (जोशन, नेवगन, लड़के की माँ–घर की बड़ी महिला) चाल ब्लाउज
- २ जड़ी की साड़ी छूते की
- टोपिए में भीगी मूंग की दाल घोड़ी के लिए
- कटोरी में मेहंदी–घोड़ी के लिए
- नाल की जोड़ी–घोड़ी के लिए
- एक थाली में चीनी व चांदी का रुपया पैक करके
- मंदिर में चढ़ाने के लिए नारियल

रुपये की थैली में

- पेचे बधाई का नेग
- काजल घलाई का नेग
- महाराज जी का नेग
- जँवाई के तिलक का नेग
- आरते के रुपये
- छात के रुपये
- मंदिर में चढ़ाने के रुपये
- नूनराई का नेग
- वाराफेरी के लिफाफे
- घोड़ी वाले का नेग

निकासी का नेग

- वर/बींद को पेंचा घर का बड़ा जँवाई बांधता है।
- माँ मूंग चावल खिलाती है- महाराज जी थाली लाकर देते हैं उनको नेग देते हैं।
- भाभी काजल डालती है, उसको नेग देते हैं।
- वर को माला घर का बड़ा पहनाता है।
- घर के बड़े पुरुष वर को पान खिलाते हैं।
- बहन/बुआ आरता करती है।
- घर के सब जवाईयों का तिलक होता है।
- पण्डितजी पूजा करते हैं।
- घर के मंदिर में वर को धोक खिलाते हैं।
- वर/बींद घोड़ी पर बैठता है।
- घोड़ी को दाल खिलाते हैं। घोड़ी को मेहंदी लगाते हैं।
- बहन/बुआ बाग घोड़ी की नाल से बाँधती है (यदि घोड़ी न हो तो कार के सामने नाल बांधते हैं)।
- छोटी कुँवारी लड़की नूनराई करती है, उसे चुनरिया ओढ़ाते हैं, नेग देते हैं।
- पीले के साड़ियाँ सुहागनों को देते हैं, घोड़ी की साड़ी देते हैं।
- एक थाली चीनी व एक चांदी का रुपया पैक करके नीम की डाली सजाकर बींद की गाड़ी में पंडित लेकर बैठता है।
- गाड़ी पहले मंदिर जाती है, वहाँ नारियल व रुपया चढ़ाते हैं, फिर शादी स्थल पर जाती है।

नोट : वर की गाड़ी में सामान रखना

- सुहागपेटी (डाला)
- वर/बींद की एक्सट्रा जूती वर/ बींद के टायलेट का बैग
- बहू को चढ़ाने का गहना
- नीम की सजी हुई डाली
- मंदिर में चढ़ाने के लिए नारियल व रुपये
- थाली (चीनी के साथ)
- जँवाई द्वारा आंजला भराई के नेग के लिए एक कपड़े ती थैली में खुल्ले पैसे एवं एक गिन्नी रखते हैं। जितने घर के जँवाई हैं उन सबके लिए आञ्जला भराई का नेग
- ब्यावली पथ, मांग टीका/बोर
- मुंह दिखाई का नेग (गहना)

❖ पहरावनी के तिलक के लिए चोपड़ा और सजे हुए नारियल, पंडितजी की दक्षिणा, पूजा में चढ़ाने के रुपये, सजनगोट, सिरगूथी और जुलाई खिलाई के नेग के लिफाफे, मुंह दिखाई का नेग, पहरावनी के तिलक के लिफाफे

बारात ढुकाव एवं वर माला (वधू पक्ष)

वर की बारात वधू के घर आती है, उसे ही बारात ढुकाव कहते हैं। वधू पक्ष वाले ढुकाव के समय स्वागत की तैयारी करते हैं। पुरुष व महिलाएं ढुकाव के समय द्वार पर उपस्थित रहकर बारातियों का पुष्प से स्वागत करती हैं।

जँवाई राजा आता है। गेट पर एक आदमी तोरण लेकर खड़ा होता है। जँवाई नीम की छड़ी तोरण पर मारता है फिर उस तोरण को घर के दरवाजे पर मोली से टांग देते हैं।

तैयारी बारात की

- स्वागत के लिए पुष्प, माला आदि
- एक आदमी को तैयार रखते हैं जो तोरण पकड़ कर खड़ा रहता है।
- ७ सुहाली बीच में छेद कर नीले धागे में पुराकर
- वर/बींद की कमर का बदलने का नारियल छोटा
- आरते की थाली–तिलक के लिए मोती, रोली, चावल, मूँग, वरक लगा हुआ गुड़, मिश्र, दीपक
- वर/बन्ने की वाराफेरी के लिए (रुपये)
- काजल घलाई का नेग (भाभी के लिए)
- नीम की डाली सजाकर, गोटा बाँधकर
- ट्रे में वरमाला–खुले फूल सजाई हुई टोकरी में
- २ चौकी वर वधू को खड़े होने के लिए (चौकी के नीचे चौक पूरते हैं)
- शाम की चाय का प्रबंध एवं संगीत का प्रबंध

नोट : कोरा कपड़ा जो नाना के यहाँ से आता है बहन/बुआ मोली से कच्ची सिलाई करके पेटीकोट बनाती है। नाड़ा भी मोली का डालती हैं। घाघरा पहनने से पहले बेटी इसे पहन कर उतारती है फिर शादी के कपड़े पहनती है। सवा गज का घूँघटिया भी बेटी की कमर में खोंसते हैं। इससे गठजोड़ा बँधता है।

नेग

- पहले वधू की माँ जँवाई का तिलक करती है।
- जँवाई के कमर का नारियल बदलती है व जँवाई की तनी खोलती है।
- आंचल से जँवाई की छाती को नापती है।
- वाराफेरी करती है।
- फिर भाभी काजल घलाई करती है, उसे उसका नेग देते हैं।
- भाभी नीम की डाली से जँवाई के कंधे को ७ बार छुआती है।
- वधू आगमन
- वधू वर के सिर पर सात सुहाली रखती है जो वर सिर हिलाकर गिरा देता है।
- वर वधू एक–दूसरे को वरमाला पहनाते हैं (वधू पहले माला पहनाती है)।
- वरमाला के बाद जब वर वधू के वहाँ से चले जाते हैं तो घर का कुंवारा छोटा लड़का चौकी उठाने के बाद चौक पूरने को पाँव से साफ करता है।
- लड़के वाले जो चीनी की थाली लाते हैं उसे लड़की वाले भण्डार में रख देते हैं।

मामा के फेरे

तैयारी

- पुष्प – पँखुड़ी
- कपासिया
- ट्रे (सजाई हुई)
- ढाल

नेग

- वधू मामा के साथ वरमाला स्थल पर आती है।
- वहाँ मामा उसे जँवाई के चारों ओर घुमाकर ३ मामा फेरे (बाहर के फेरे) दिलवाते हैं।
- एक व्यक्ति पुष्प पँखुड़ियाँ व कपासिया के मिश्रण की ट्रे लिये हुए वधू के साथ-साथ घूमता रहता है।
- वधू उन पुष्प-पँखुड़ियों से अंजली भर-भर कर, जँवाई पर उछालती हुई मामा फेरे लेती है।
- जँवाई के साथ का व्यक्ति जँवाई के चेहरे के सामने ढाल लगा कर, उन पुष्प पँखुड़ियों को जँवाई के मुँह पर गिरने से रोकने के चेष्टा करता है।

पाणिग्रहण संस्कार फेरे :

पाणि का अर्थ है हाथ एवं ग्रहण का अर्थ पकड़ना। पाणिग्रहण संस्कार में वर वधू का हाथ अपने हाथ में लेता है। इसकी महता यह है कि वे दोनों अपना व्यक्तित्व, अपनी आशाएँ और अपनी इच्छाओं को एक दूसरे के हित के लिए।

इसमें देवताओं का पूजन, हवन एवं फेरे आदि का विधान होता है।

- ❖ साथ सुहागी रखकर, झालरा कल्पाकर बेटे वाले बहू को पहनाते हैं। (यह सामान डाले से निकालते हैं) (वर पक्ष)

तैयारी - वधू पक्ष

- ❖ जँवाई के लिए रेशमी धोती व चादर
- ❖ लड़की की २ साड़ी (बिना ब्लाउज के)
- ❖ अन्तरपट २ गज का
- ❖ दो चौकी वर-वधू के लिए दो गद्दी पिता व माता के बैठने के लिए
- ❖ नूनराई की पोटली
- ❖ गमछे, आसन
- ❖ दात का सामान
- ❖ रुपये की थैली

- कन्यादान एवं हथलेवा छुड़ाई के लिए नेग
- नूनराई के नेग के रुपये
- आरते का नेग व छात के रुपये
- पूजा में चढ़ाने के लिए रुपये
- पुजारी व ब्राह्मण की दक्षिणा

लड़की वालों फेरे के लिए इतनी सामग्री तैयार कर लेनी चाहिए

- गंगाजल
- मिट्टी का कलश
- ११ सराई मिट्टी की
- ११ आम का पत्ता
- आम का काठ
- जाटी का पत्ता
- १ नारियल
- ११ पान
- फूल माला
- फूल
- दूर्वा (दूब)
- ११ केला फल
- आधा सेर गेहूँ
- तीन सेर चावल
- २१ सेर मिठाई
- ४ काठ की खुटी
- १ काठ का चमच
- ४ लम्बी बांस की लकड़ी
- १ मिल की लोड़ी या छोटा संगमरमर का पत्थर

- १ शंख
- १ छाजला (सूप)
- १ पाटा
- १ हाथ लाल वस्त्र
- २१ हाथ सफेद वस्त्र
- मेहंदी
- एक सराई में आटा
- १ नया लोटा
- १ कांसे की बड़ी कटोरी
- ४ कांसे की छोटी कटोरी
- २ पीतल के गमले
- १ लच्छी कच्चे सफेद धागे की
- पूजा का बर्तन
- २६ फेरे के ब्लाउज पीस
- ५ सोने की टीकड़ी
- १ सराई में रोली
- तीन तार की मोली
- बनायड़
- २ कटोरी मिट्टी
- गोबर
- आधा पाव दही
- १ सेर धीरत/घी
- पिसी हल्दी
- गुलाल
- २ सिन्दूर की पुड़िया
- लौंग, इलायची
- खोई
- ५ जनेऊ जोड़ी
- रूई
- माचिस
- केशर
- चन्दन
- ३४ कच्ची सुपारी
- धूपबत्ती
- कपूर
- नून, राई
- सरसों
- रुपया
- रेजगारी
- (खुल्ला पैसा)

विधान

- पंडितजी वर से व वधू के पिता से शादी का संकल्प करवाकर वेदमंत्र का पाठ करते हैं, वर के सेवरा बाँधते हैं।
- गणेशजी, ग्रह मंडल एवं कलश की पूजा कराते हैं।
- अग्नि की पूजा होती है।
- फिर वधू को फेरे में बुलाते हैं, वधू वर के दाहिनी तरफ बैठती है।
- वधू के सिर पर सेवरा बाँधते हैं।
- सेवरा - गणेश जी का सेवरा लड़के को बँधता है, लक्ष्मी जी का लड़की को बँधता है।
- वधू से गणेशजी, ग्रह मंडल, कलश एवं अग्नि की पूजा कराते हैं।
- वधू को टीका निकालकर मोली बाँधते हैं।
- वधू के पिताजी एक अंगवस्त्र (दुपट्टा) वर के कंधे पर रखते हैं व धोती उसके गोड़े पर रखते हैं।
- २ साड़ी वधू की गोदी में रखते हैं।
- पंडितजी वधू एवं माँ को बुलाकर वधू के माँ-बाप का गठजोड़ा करते हैं।
- वधू के पिता के वधू के हाथ पीले कर देते हैं। फिर वधू के माता-पिता कन्यादान का संकल्प करते हैं।

- ❖ कन्यादान का नेग/अंगूठी लड़के के हाथ में दे देते हैं।
- ❖ डाले से वर का गठजोड़ निकालकर उसमें वधू का घूंघटिया बांध कर गठजोड़ करते हैं। गाँठ बाँधते समय उसमें मूँग, चावल, हल्दी की गाँठ, एक सुपारी व २ पैसे डालकर गाँठ बाँधते हैं।
- ❖ वर-वधू का (हथलेवा) जुड़ाते हैं। लड़की का पिता वर को नेग देता है।
- ❖ पहले तीन बार वधू आगे व वर पीछे रहकर अग्नि के चारों तरफ फेरे लेते हैं। विवाह में कन्या को तीन प्रदक्षिणा में आगे इसलिए रखा जाता है कि उस समय कामदेव अपने अमोघ बाणों का प्रयोग करता है, उसे कन्या अपनी शक्ति से सहन कर लेती है।
- ❖ वधू का भाई एक सजे हुए सूप में खोई लेकर खड़ा होता है।
- ❖ एक-एक फेरे में भाई वधू को खोई देता रहता है।
- ❖ चौथे फेरे में वर आगे व वधू पीछे रहती है अब वधू सारी खोई अग्नि में समर्पित दे देती है।

<u>सप्तपदी</u>

वर एवं वधू द्वारा इस समय सात वचन ग्रहण किए जाते हैं और इसके सांकेतिक रूप में ही सात फेरे पड़ते हैं। झये सात वचन हैं -

- ■ हम आदर व सम्मानपूर्वक जीवन जिएँगे। आओ, साथ मिलकर चलें, ताकि जीवन सुपोषित हो।
- ■ हम खुशी एवं आनंदपूर्वक जीवन जिएँगे। आओ, साथ मिलकर चलें, ताकि हमारा संबल मजबूत हो।
- ■ हम जीवन के सुख-दु:ख को मिलकर भोगेंगे। आओ, साथ मिलकर चलें, ताकि हमारा जीवन समृद्ध हो।
- ■ हम अपने माता-पिता एवं बड़ों को विस्तृत नहीं करेंगे। आओ, साथ मिलकर चलें, ताकि हमारा जीवन सुखमय हो।
- ■ हम परोपकार के सभी कार्यों में अपना योगदान करेंगे। आओ, साथ मिलकर चलें, ताकि हमारा परिवार बढ़े।
- ■ हम सुदीर्घ एवं सुंदर जीवन जिएँगे। आओ, साथ मिलकर चलें, ताकि जीवन आनंदमय हो।
- ■ हम मित्रवत् समर्पणयुक्त जीवन जीएँगे। आओ, साथ मिलकर चलें, ताकि हमारी मित्रता प्रगाढ़ बने।
- ■ फेरे के बाद वर वधू बैठते हैं व पंडितजी दोनों के सामने पर्दा करके अन्तर्पट कराते हैं।
- ■ फिर चौकी के नीचे मेहंदी की ७ कुड़ी कर वर वधू के दाएं पैर के अंगूठे को पकड़कर ७ कुड़ी का छुआता है। फिर वधू का पैर पत्थर से लगवाया जाता है। इसका अभिप्राय है कि बेटी तुम आज गृहस्थ धर्म में प्रवेश कर रही हो, गृहस्थ में अनेक विपत्तियों के पहाड़ आयेंगे, उनका सामना दृढ़ता से करते रहना है।
- ■ वर वधू के हृदय पर हाथ रखकर इससे आग्रह करता है तुम मेरे बाएं अंग में बैठो, मेरी अर्द्धांगिनी बनो।

नोट : भारत की मर्यादा में पत्नी को अर्धांगिनी माना गया है जिसका आशय है कि पत्नी प्रत्येक क्रिया में समभाग की स्वामिनी हुआ करती है।

<u>गठबंधन - कन्यादान व शपथग्रहण की महत्ता</u>

गठबंधन

इस संस्कार में वधू की ओढ़नी को वर के दुपट्टे से बाँधते हैं, जो बाद में वर अपने कंधे पर धारण करता है। यह सूचक है वर-वधू के हर पहलू के संगठन का-विचार, शरीर एवं आत्मा का एकीकरण होना। गठजोड़े को बांधते समय फूल, हल्दी, दुर्वा, चावल व एक सिक्का रखते हैं इसकी महत्ता है -

❖ फूलों की सुगंध खुशी का प्रतीक है।

❖ हल्दी वर वधू मानसिकता और शारीरिक खुशहाली का प्रतीक है।

❖ हरी दूर्वा दर्शाती है कि वर वधू का प्यार अचल व अटल है।

❖ चावल विवाह की सामाजिक जिम्मेदारी व अटूट बंधन का प्रतीक है।

❖ रुपया का साथ में बांधना दर्शाता है वर वधू का आर्थिक पहलुओं में समान अधिकार।

कन्यादान

कन्यादान के संस्कार में वधू का पिता अपनी बेटी का दाहिना हाथ वर के दाहिने हाथ में रखकर उसे अपनी बेटी को पत्नी रूप में स्वीकार करने का आग्रह करता है। यह विधान वधू द्वारा एक नया नाम, एक नया परिवार व एक नये व्यक्तित्व को अपनाने का सूचक है।

शपथग्रहण

विवाह में वर वधू वेदों के बताये हुए नियमों के अनुसार शपथ ग्रहण करते हैं। यह शपथ उनकी आत्माओं को एक कर उन्हें परिवार, समाज व एक दूसरे के प्रति जिम्मेदारी का एहसास कराती है।

वधू के वचन (वर के लिए)

❖ व्रत, कथा, उद्यापन, यज्ञ, प्रतिष्ठा में मुझे साथ लेकर सारे काम करोगे।

❖ देवताओं को हवन करके संतुष्ट करोगे।

❖ कुटुम्ब की रक्षा, भरण पोषण करोगे। गाय व पक्षियों का पालन पोषण करोगे।

❖ लाभ, खर्च, धन में मेरी राय लेकर उचित काम करोगे।

❖ मंदिर, बगीचा, तालाब, कुँआ, धर्मशाला, मकान की प्रतिष्ठा कराओगे तो मुझे साथ रखोगे।

❖ अपने देश व परदेश से किसी के साथ भी देन-लेन करोगे तो मुझसे पूछकर करोगे।

❖ पराई स्त्री की तरफ नजर उठाकर नहीं देखोगे व उसे बुरी भावना से नहीं देखोगे।

आप यदि ये ७ वचन स्वीकार करते हैं तो मैं आपके बाएं अंग आकर बैठूँगी।

वर के वचन (वधू के लिए)

❖ बाहर या बगीचे में अकेले नहीं घूमोगी।

❖ दूसरो के घर मेरी राय के बिना नहीं जाओगी।

❖ पराये पुरुष की तरफ नजर उठाकर नहीं देखोगी व मार्यादा रहित बात नहीं करोगी।

❖ घर में लक्ष्मी की तरह बन कर रहोगी, जोर से हँसोगी नहीं व सब पर उदार नजर रखोगी।

❖ मेरी आज्ञा से चलोगी व मेरे सुख-दु:ख की साथी बनोगी।

❖ अपने से बड़ों की सेवा करोगी व छोटों को शिक्षा दोगी।

❖ घर गृहस्थी का काम देखोगी व आमदनी से अधिक खर्च नहीं करोगी।

❖ फिर जब दोनों वचन स्वीकार कर लेते हैं तो वधू वर के बाएँ अंग में आकर बैठ जाती है।

❖ वर वधू की मांग में सिंदूर भरता है।

❖ लड़के वालों का जँवाई वधू को चढ़ाने के गहने लड़की वालों को सम्भाल कर दे देता है।

❖ लड़की वाले १६ ब्लाउज पीस एक नाल जोड़ी में बाँधकर वर के बाबाजी या पिता के सिर पर रख देते हैं।

❖ वधू की छोटी बहन या भतीजी नूनराई का नेग करती है उसे नेग देते हैं।

❖ वर के घर में बड़े वधू की गोद भरते हैं (डाले से निकाल कर)

❖ बहन/बुआ वर वधू का आरता करती हैं, नाई की

छात लगती हैं।
- फिर वर वधू को थापे के आगे ले जाते हैं।
- जुता छुपाई का नेग होता है।

जुता छुपाई

वर विवाह में प्रवेश करते समय अपने जूते उतारता है, तब सालियाँ (वधू की बहनें) उन जूतों को छुपा देती है।

फेरे के बाद वे अपने जीजाजी से नेग लेकर ही उन्हें जूते वापस करती है।

श्लोक कहवाई - थापे की पूजा

- फेरे से उठकर थापे के सामने गठजोड़े से वर/वधू जाते हैं।
- थापे की पूजा घर की बड़ी स्त्री करती है।
- वधू को उठाकर तारा देखने को कहते हैं।
- वर श्लोक कहता है, दादी और माँ उसे नेग देती हैं।
- वधू की मुँह दिखाई होता है। वधू की दादी, माँ मुँह दिखाई देती है।

नोट : वधू को ध्रुवतारा दिखाते हैं। ध्रुवतारा अचल है व स्थिरता का प्रतीक है। वर वधू ध्रुवतारे की तरह सदैव स्थिरता से रहे। वर व वधू की अरुंधती व वशिष्ठ तारा भी दिखाते हैं। यह दोनों तारे अलग-अलग हैं व अपना निजी का स्वरूप रखते हैं परन्तु वे इतने पास है कि एक ही प्रतीक होते हैं। वर व वधू भी यह शपथ ले कि हम अपना निजी व्यक्तित्व रखते हुए भी अरुंधती व वशिष्ठ तारों की तरह एक ही दिखें।

सिरगूथी (वधू पक्ष)

- सासू की तीयल
- चाँदी का बेलन
- २ चौकी
- २ गद्दी
- ऊंचे किनारे की एक थाली
- एक ग्लास
- एक चम्मच
- ३ गमछे (थोड़े बड़े/सुन्दर रंग के)
- सिरगूथी की मिलनी के लिफाफे
- आधे गट में चीनी व गिन्नी रखकर पैक करके

वर पक्ष

- डाला
- ब्यावली नथ प्राय: एक सोने के तार में दो मोती की बीच एक माणिक की मणि पुराकर बनाई जाती है।
- टीका
- मुँह दिखाई का गहना
- आंजला भराई की थैली (एक थैली में कुछ पैसा रखकर एक गिन्नी रखते हैं।
- यदि घर में एक से अधिक जँवाई हों तो उनको भी नेग देते हैं (इच्छानुसार, अनिवार्य नहीं है।

नेग

- २ चौकी लगाते हैं : वधू की एक बुआ/बहन की जो नेग करेगी।
- एक थाली में ७ सुहागी व एक कंघी (डाले से निकालकर) वधू से कल्पाते हैं (हाथ फिरवाते हैं मूँग चावल डालकर)।
- उस कंघी से बाल बनाते हैं (डाले में कंघी रखते हैं एक अब कल्पाते हैं व दूसरी वधू के घर आने पर जो सिरगूथी होती हैं उसमें कल्पाते हैं)।
- उस समय ७ नाल की जोड़ी सतनाला (जो नाल तानते समय वर बनाता है) उसे वधू के बाल में बाँधते हैं।
- काचरी का कपड़ा (नीलगरनी से छपाते हैं : लाल

रंग में पीला डिजाईन) दो अंगुल चौड़ा फाड़ कर नाल के साथ बाल में बांधते हैं।

- ❖ चोटी में नाल की जोड़ी बाँधते व चाँवरी लगाते हैं।
- ❖ थाली में रोली, मेहंदी, केसर, इत्र थोड़ा-थोड़ा डालकर मिलाकर पहले ७ सुहागनों को देते हैं, फिर वधू के सिर पर, माँग के दोनों तरफ लगाते हैं (इसे केशर घड़ी कहते हैं)।
- ❖ थाली में ७ सुहागी रखकर ब्यावली नथ, ब्यावली चुनड़ी वधू से चिरचकर कल्पाते हैं।
- ❖ वधू की मांग में रोली से सथिया कर माँग टीका/बोर साँकली लगाते हैं।
- ❖ ग्लास में पानी मँगाकर बहू की आँख धोते हैं।
- ❖ ब्यावली नथ (कल्पाकर) पहनाते हैं।
- ❖ नाक से लम्बा टीका निकालते हैं।
- ❖ जो बहन/बुआ नेग करती हैं, (वधू की माँ) वधू से (आधे गट में चीनी-गिन्नी रख) उन्हें पाँव लगवाकर देती हैं।
- ❖ सिरगूथी की तीयल बेलन रखकर बधू सास के पाँव लगती हैं।
- ❖ घर के बड़े दादा-ससुर वधू को ब्यावली चुनड़ी ओढ़ाते हैं व उसकी गोद भरते हैं।
- ❖ वधू चीनी की थाली (जो लड़के वाले बारात में लाते हैं) सासू को देकर पाँव लगती हैं।
- ❖ दादी/सास वधू को मुँह दिखाई का नेग देती हैं।
- ❖ जँवाई से आंजला भराई का नेग करवाते हैं। घर के सब जँवाईयों को नेग देते हैं। जँवाई आंजला भराई की थैली वधू को देता है। वधू उसमें हाथ डालकर पैसे निकालती हैं, वो जितने पैसे निकालती हैं, व नेग स्वरूप जँवाई को दे देते हैं।
- ❖ सिरगूथी की मिलनी होती हैं (इच्छानुसार)

जुआ खिलाई

दूध जल में डलवाकर जो जुआ-जुई खिलाया जाता है उसका आशय यह है कि अब से तुम दोनों (वर-वधू) को इस दूध तथा पानी की तरह मिलकर संसार में कई खेल खेलने हैं।

वधू पक्ष

- ❖ दो गद्दी, वर, वधू के बैठने के लिए
- ❖ चौकी
- ❖ जुआ खिलाने की ऊँची किनारी की बड़ी थाली
- ❖ कच्चा दूध
- ❖ दही
- ❖ जल
- ❖ मूँग
- ❖ जुआ खिलाई का नेग
- ❖ चढ़ाने का रुपया

नेग

- ❖ सिरगूथी के बाद वर वधू को थापे के सामने गठजोड़े से ले जाते हैं। फिर धोख खिलाकर उन्हें खेलने के लिए वापस मण्डप में लाते हैं।
- ❖ दोनों तरफ गद्दी रखकर, बीच में चौकी पर थाली रखते हैं। एक चौकी पर जुआ खिलाने की थाली रखते हैं। चौकी के दोनों तरफ वर वधू के बैठने के लिए गद्दियाँ रखते हैं।
- ❖ थाली में कच्चा दूध, मूँग व जल डालते हैं।
- ❖ डाले से जुए की थैली निकालते हैं। उसमें से सुपारी, चाँदी का छल्ला, हल्दी की गाँठ और कौड़ी थाली में डालते हैं।
- ❖ ४ बार जुआ खिलाते हैं, आखिरी बार वर जीतता है और वह अँगूठी वधू को पहनाता है।
- ❖ लड़के वाले थाली में रुपया डालते हैं जो नेवगी को लगाता है।

- लड़का-लड़की एक-दूसरे की मुट्ठी खोलते हैं।
- कांगन डोरा -बींद व बिन्नी एक दूसरे का कांगन डोरा खोलते हैं, लड़का एक हाथ से खोलता है। लड़के के पाँव का कांगन डोरा लड़की खोलती है, परन्तु लड़की के पाँव का डोरा भी स्वयं लड़की ही अपने आप खोलती है।

कांगन डोरा खोलने का महत्व यह है कि लड़की कहती है कि मैं कर्म बंधनों से जकड़ी हुई हूँ और आज आपकी शरण में आई हूँ। अब आप इतने शुभ चरित्र वाले कर्मकाण्डी बनो कि आपके शुभ चरित्र से मेरा कर्म बन्धन टूट जाए।

- हर नेग पहले वर/लड़का करता है।
- कांगन डोरे को भाभी निचोड़कर लड़की को देती है। लड़की उसे वर के सेवरे पर छोड़ती है। वर उसे लड़की की गोद में डालता है।
- फिर कांगन डोरा बदली करके लड़के का कांगन डोरा लड़की को बाँधते व लड़की का कांगन डोरा लड़के को बाँध देते हैं।
- ७ गाँठ बाँधते हैं।
- बहन/बुआ आरता करती है।
- नेवगी को थाली उठाने का व छात का नेग देते हैं।
- घर के बड़े/ससुर बहू की गोद भरते हैं।

<u>सजन गोट</u>

तैयारी वधू पक्ष

- वड़ी जलेबी (साख जलेबी)
- साख जलेबी के लिए २ जगह का नेग (वर के घर के बड़ों का नाना के घर का)
- वधू पक्ष वाले भोजन के लिए वर पक्ष के परिवार को निमंत्रित करते हैं तथा उन्हें सप्रेम भोजन करवाते हैं।
- समधी के घर एवं नाना के घर के लिए पहले गिनती पूछकर पत्तल डब्बे के बनवाते हैं।
- सजन गोट के दिन उसमें ४ तरह का मीठा रखते हैं।
- जल का ग्लास रखते हैं।

तैयारी वर पक्ष

- वधू की थाली के लिए नेग
- वधू घर की मिसरानी का नेग
- झूठी थाली में डालने के लिए नेवगी का नेग

विधान

- लड़के वालों के घर के बड़े, नाना घर वाले छूते के डब्बे निकालते हैं (ये बाद में वर के घर जाते हैं व उनके पंडित जोशी को दिए जाते हैं)।
- वर के घर वाले वधू की थाली परोस कर नेग रख कर भेजते हैं।
- सजन गोट पर बैठने पर वधू घर की बड़ी जलेबी पर नेग रखकर वर के घर के बड़ों को देते हैं व नाना के घर के बड़ों को देते हैं इसे साख जलेबी कहते हैं।
- एक थाली में मीठा, फीका, परोस कर नेग रखकर वधू के घर की मिसरानी के लिए भेजते हैं।
- वर की जूठी थाली में नेवगी के लिए रुपया डालते हैं। (वरपक्ष)

विदाई-पहरवानी :

पहरावनी से पहले पण्डित जी वर व वधू से भट्ठी पर लात मरवाने का नेग एवं फेर पाटा का नेग करवाते हैं।

तैयारी वधू पक्ष

- चौकी (छोटी गद्दी मसनद तनी से बाँधकर) (दात की)

- लोटा (दात का)
- कचोला (मूँग चावल रखकर) (दात का)
- पलंग पोशी की चुनरी
- घड़ी/बटन (जँवाई के लिए) सुविधानुसार
- दुशाला (जँवाई के पिता/दादा के लिए
- तिलक जँवाई का
- एक लाल कपड़े में ४ लड्डू, दूब बांधकर
- बाई की गोद के लिए बूँदी के लड्डू (लाल बूँदी के साथ)
- ट्रे में ४ डब्बे (ब्लाउज पीस और रुपया, सुहाली, पेठा, मूँग चावल रखकर)
- सब जँवाईयों के तिलक के लिए नारियल सजे हुए
- पुरुषों की मिलनी
- दोघड़ (गेट की पूजा के लिए)
- गोबर (थाली की पूजा के लिए)
- दही, चूरमा, हरी फली का साग, (२ छन्नी, कटोरी, चम्मच, पानी का ग्लास)
- पेठा, सुहाली (थाली पूजा के लिए)
- टोटीवाली कैरी में चीनी भरकर कसूमल कपड़े से बाँधकर रखते हैं (गाड़ी के टायर के नीचे रखने के लिए)
- लड़की के पर्स में रुपया रखते हैं
- दो टोकरी में मिठाई (बादाम बर्फी) मीठी, फीकी, सुहाली, (टोकरी में यह मिठाई गुलाबी कपड़े में बाँधकर सिलते हैं)।
- पण्डितों के रुपये
- दोघड़ पर आदमी को देने के लिए रुपये

तैयारी वर पक्ष

- तिलक के रुपये
- पण्डितों के रुपये
- सगों की नेवगन का गहना, कपड़े
- २ सफारी सूट जोशी जी के लिए
- सगों के आदमियों के कपड़े
- सफेद कपड़े का थान

नेग

- वर पक्ष वाले अपने सब जँवाईयों का तिलक करते हैं व नारियल देते हैं।
- वधू पक्ष वाले अपने जँवाईयों का तिलक करके नारियल देते हैं।
- वर पक्ष वाले एक सफेद थान कपड़ा व नेवगन के कपड़े देते हैं।
- वधू पक्ष वाले वर का तिलक करते हैं।
- जँवाई को घड़ी या बटन पहनाते हैं।
- ससुर को शॉल ओढ़ाते हैं (इच्छानुसार)।
- वर पक्ष के पण्डितों को दक्षिणा देते हैं।
- वधू पक्ष के पण्डित को दक्षिणा देते हैं।
- फिर जँवाई को कमरे में ले जाते हैं।
- बेटी, जँवाई को दही, चूरमा व हरी फली का साग खिलाते हैं।
- गठजोड़ से जाकर वर व वधू को चौके की थाली पुजाते हैं। थाली पर गोबर रखकर स्वास्तिक माँडते हैं।
- पेठा, सुहाली रुपया चढ़ाते हैं। यह पूजा घर की बड़ी स्त्री कराती है।
- एक गुलाबी रंग के कपड़े में ४ बूंदी के लड्डू बाँधते हैं। उससे बेटी की गोद भरते हैं।
- वर-वधू का टीका कर थापे के सामने हाथ जुड़वाते हैं।
- पूजा घर में प्रणाम कराते हैं।
- दरवाजे पर आदमी दोघट लिए खड़ा रहता है, बेटी से कलश पर टीका कराते हैं।
- आदमी को टीके का नेग देते हैं, आदमी घर के अन्दर चला जाता है।

- विदाई के सामने कार के चक्के के नीचे टोटी वाली कैरी में चीनी रखकर, उसे कसूमल कपड़े में बाँधकर रखते हैं।
- गाड़ी में बैठने से पहले बेटी के हाथमें(आधागट चीनी और गिन्नी का) देते हैं जो उतरते समय बेटी सास के पाँव लगकर देती है। बेटी का पर्स भी साथ में देते हैं।

बेटी की ससुराल की गाड़ी में सामान रखना

- सीट के पीछे गणगौर रखते हैं।
- कार में बेटी का बक्सा, डाला, बटेरी, पेई- ७ बुगची में ४ भाण्ड जिसमें ब्लाउज पीस सुहाली पेठा आदि रखते हैं। बहू की विदाई से पहले लड़के की माँ व घर की अन्य महिलाएँ वापस अपने घर आ जाती है। वहाँ टूटिये का नेग होता है। पहले भाभी जो काजल डालती है वह चूड़ी पहनती है फिर घर की सब महिलाएँ चूड़ी पहनती है व नेग देती है। तैयारी एक टोकरी में थोड़ा गेहूँ डालकर चूड़ियाँ व बेलन रखा जाता है।

बहू आगमन - संबंधी नेग (वर पक्ष)

तैयारी

- दरवाजे पर बाड़ रूकाई के लिए फूल की बंदनवार बाँधते हैं।
- तलवार
- २ चौकी
- आरते की थाली
- आरते का रुपया
- ६ थाली या छोटी छन्नी, और एक कचोला (कचोले में ब्लाउज व ६ छन्नी में मूँग चावल रखते हैं) हर थाली में हिरमच से स्वास्तिक बनाते हैं।
- गुड़ की भेली का नेग
- घी का नेग (घी कटोरी में)
- नेवगी की बधाई
- ड्राइवर का नेग
- बाड़ रूकाई का नेग
- रुपयों की थैली का नेग (बहु का)

नेग

- नाई बारात के पहले आकर बहू आने का समाचार बेटे की माँ/दादी को देता है। बधाई देता है उसे नेग देते हैं।
- जो ड्राइवर बेटा-बहू की गाड़ी चलाकर उन्हें घर लाता है उसको नेग देते हैं।
- बेटे को पिता गाड़ी से उतारता है व उसके हाथ में तलवार देता है।
- बहू को सास उतारती है, बहू गट देकर सासू के पाँव लगती है।
- बहन/बुआ नवजोड़ी का आरता करती हैं।
- लड़का घर के दरवाजे के सीधी तरफ रोली से सथिया करता है।
- बहू दरवाजे के बायीं तरफ रोली से छाबड़ी बनाती है।
- बाडरुकाई का नेग बहन/बेटी को देते हैं।
- वर-वधू थापे के कमरे पर जाते हैं। वहाँ ६ छन्नी व एक कचोले में ब्लाउज पीस लाइन से रखते हैं। (६ छन्नी में हिरमच से सथिया बनाकर मूँग चावल रखते हैं व एक कचोले में ब्लाउज पीस रखा जाता है)।
- लड़का तलवार से एक-एक छन्नी को दायें-बायें खिसकाता है।
- बहू धीरे-धीरे बिना आवाज के छन्नी को एक के ऊपर एक रखकर सास को देती है (कहते हैं कि छन्नी उठाकर रखने पर आवाज नहीं होनी चाहिए, इससे घर में क्लेश नहीं होता है)।

- ❖ गुड़ की भेली और कटोरी में घी को छूकर बहू नेग करती है।
- ❖ रुपये की थैली में दादा जी/ससुर बहू के हाथ लगवाते हैं कि लक्ष्मी घर आई है।
- ❖ थापे के सामने दोनों बेटा-बहू धोख खाते हैं।
- ❖ दीपक जलाते हैं।
- ❖ बेटे व बहू दोनों का मुख मीठा कराते हैं।
- ❖ बेटे बहू दोनों का सेवरा खोलते हैं।

देवी देवता पूजना (वर पक्ष)

अगले दिन सुबह पहले बेटा व बहू देवी-देवता पूजने जाते हैं।

तैयारी

- ♦ ४ ईंट
- ♦ ७ नारियल
- ♦ झोल की तैयारी (कच्चा दूध, मूँग दाल, चाँदी का सिक्का)
- ♦ आसन
- ♦ कच्चा दूध
- ♦ १ पीली धोती गंगा जी पर चढ़ाने के लिए
- ♦ पहली रात चना भिगवाना है
- ♦ आरते की थाली
- ♦ बताशा
- ♦ १ डाब
- ♦ १ बाल्टी
- ♦ रुपये की थैली

विधान

- ♦ गेट के बाहर ४ ईंट लगाकर, बैठकर उसकी पूजा करते हैं, चिरचते हैं, नारियल पधारकर (गिरी) चढ़ाते हैं।
- ♦ फिर हनुमानजी के मंदिर जाते हैं। पूजा करके नारियल चढ़ाते हैं।
- ♦ गंगाजी की पूजा के लिए जाते हैं।

तैयारी

१ नारियल, १ लाल पाड़ की पीली साड़ी, कच्चा दूध, बताशा, भीगा चना और रुपया गंगाजी में चढ़ाते हैं।

नोट : आजकल एक बाल्टी में गंगाजल लाकर उसमें पूजा करके उस जल को गंगाजी में प्रवाहित करा देते हैं।

विधान

- ■ गंगाजी से आकर वर-वधू घर के गेट पर स्वास्तिक करते हैं।
- ■ घर आकर रसोई में जहाँ पानी का मटका रखते हैं वहाँ पितरों की धोख खिलाते हैं, नारियल पधार कर, रुपया चढ़ाते हैं।
- ■ वर व वधू दोनों झोल डालकर नहाते हैं। (झोल कटोरी में कच्चा दूध, मूँग दाल, चांदी का सिक्का)। इसके बाद सुहाग थाल होता है।

सुहागथाल (वर पक्ष)

तैयारी

- ■ थाली, कटोरी, ७ ग्लास, ७ चम्मच
- ■ नेपकिन, टॉवल
- ■ मूंग भात की कच्ची रसोई
- ■ सुहागनों का नेग
- ■ फुलका (मंगोड़ी)
- ■ महाराज का नेग
- ■ चौकी, बिछावत
- ■ पाँव लगनी

नेग

- ❖ वधू के साथ ६ सुहागनें बैठती हैं (कुल में ७

की गिनती होती है)। बीच में चौकी रखते हैं उस पर थाली रखी जाती है।

- ❖ महाराज जी थाली लाते हैं। उनको नेग देते हैं।
- ❖ सब सुहागनों को भोजन के बाद नेग रुपया दिया जाता है।

<u>चूड़ा पहनाना</u>

तैयारी

- ■ तवा
- ■ अंगार
- ■ गोटे की राखी
- ■ थाली में गेहूँ
- ■ रुपया
- ■ पाँव लगनी

नेग

- ❖ बहू को शगुन की मेहंदी लगाते हैं।
- ❖ पहले एक सीख की चूड़ी बुआ/बहन पहनाती है, फिर बहू को चूड़ा पहनाते हैं।
- ❖ तवे में आग लाकर अँगारे में लाख की चूड़ी को गर्म करके पहनाते हैं।
- ❖ चूड़े में गोटे की राखी बाँधती है।
- ❖ एक ग्लास में पानी लेकर चूड़े पर छिड़कते हैं।
- ❖ एक थाली में गेहूँ, रुपया रखकर बहू चूड़ा पहनाने वाले को देती है।
- ❖ बहू सबको पाँव लगनी देती हैं।

<u>सिरगूथी</u>

तैयारी

- ■ पीढ़ा, गद्दी
- ■ वाराफेरी के लिफाफे
- ■ नीम की डाली सजाकर
- ■ आरते की थाली
- ■ दोघड़

नेग

- ❖ २ पीढ़े लगाते हैं, गद्दी बिछाते हैं, गमछे रखते हैं।
- ❖ डाले की दूसरी कंघी को सुहागी के साथ कल्पाते हैं। (एक कंघी बिन्नी के घर कल्पाई थी) (बोर साकली टीका को दुबारा नहीं कल्पाते)।

- ❖ थाली में रोली, मेहंदी, मैन घोलकर बहू की माँग में दोनों तरफ लगाते हैं।
- ❖ जुआ खेलते हैं।
- ❖ कांगन डोरा खोलते हैं।
- ❖ वधू की गोद भरते हैं।
- ❖ बहन/बुआ आरता करती हैं।
- ❖ मुँह दिखाई- बहू की मुँह दिखाई घर के सब लोग करते हैं।
- ❖ पग पकड़ाई- घर के बड़े पगपकड़ाई करके, पल्ले में गोद देते हैं (डाले से)।
- ❖ सब बहू की वाराफेरी करते हैं।
- ❖ सास बहू को नचाती हैं।
- ❖ नीम की डाली से देवर भाभी खेलते हैं।
- ❖ देहली की पूजा कराकर, मेवा व रुपया से पल्ला भरकर, दोघड़ की पूजा कराकर बहू की विदाई करते हैं।

विवाह के बाद बेटी का घर आना (पुठ मोड़ा)

बेटी पीहर आती है

तैयारी

- ■ पगाधुलाई के लिए जग में पानी, गमछा
- ■ गोद-थैली में ५ तरह का मेवा व रुपया
- ■ पाँव लगनी के रुपये

नेग

- ❖ बेटी को पीढ़े पर बिठाकर नेवगन उसकी पगाधुलाई का नेग करती है। नेवगन को नेग देते हैं।
- ❖ बेटी का पल्ला भरते हैं (गोद में पाँच तरह का मेवा और रुपया डालते हैं)
- ❖ ससुराल वालों के लिए पाँवागानी भेजते हैं।
- ❖ बेटी तुरंत कुछ खाकर ससुराल चली जाती है।

पुठमोड़ा

तैयारी

- ■ दो मिठाई की टोकरी
- ■ थाली का नेग
- ■ पान व नेग
- ■ जँवाई के तिलक का रुपया
- ■ सासू की तीयल – नेवगन की तीयल

विधान

पुठमोड़े के दिन बहू का छोटा भाई उसे बुलाने के लिए बहन के ससुराल जाता है।

लड़की वाले उसके भाई के साथ दो मिठाई टोकरी (चोलिए) भेजते हैं : एक सासूजी के लिए एक नेवगन के लिए।

- ❖ बहन के ससुराल वाले बहू के भाई को उपहार देते हैं।
- ❖ पुठमोड़ा के दिन शाम को जँवाई व उसके छोटे भाई-बहन बहू के पीहर खाने पर जाते है।
- ■ अच्छा दिन देखकर सुंदर से संदूक/डब्बे में सुहाग का सामान डालते हैं।

पहले डाले में सुपारी व मूँग डालते हैं फिर बाकी सामान डालते हैं।

- ■ १ ब्यावली चूनड़ी उस पर गोटा लगता है (४ झाबी व १७ घूँघरू बनाते हैं चांदी के)
- ■ २ झाबी ११ घुँघरू ब्यावली चुनड़ी में बाँधती है,-१ झाबी व बाकी घुँघरू घर में रह जाती है।
- ■ १ चुनरिया ११/२ गज की
- ■ १ गठजोड़ा ५१ ।४ गज बढ़िया गुलाबी मलमल का
- ■ काचरी का कपड़ा (नीलगरनी से रँगाते हैं) सरगूथी के लिये
- ■ २ सेवरा
- ■ ५ गोद (जरी की सुन्दर थैली), ४ में गट व १ में नारियल रखते हैं और ५ तरह के मेवा (गट, मिश्री, बादाम, किशमिश, छुआरी, (काजू व नमकीन मेवा नहीं) व साथ में १०१ रुपया या गिन्नी रखते हैं :

  १ फेरे में दी जाती है

  १ सिरगूथी में दी जाती है

  १ जुआ में दी जाती है

  १ पहरावनी में दी जाती है

  १ घर में रह जाती है इच्छानुसार उसे वधू आगमन में दे देते हैं।
- ■ ४ थैली में मेहंदी, मखाना, हल्दहात का रंगा पीला चावल, साबुत कच्ची सुपारी रखते हैं।
- ■ ४ छोटी डब्बी/या थैली में- २ में रोली, १ में केशर, १ में बाद में सिंदूर भरेंगे, पहले खाली रहेगी।
- ■ चाँदी का झालरा (ॐ लिखकर चांदी का बनता है), झालरे की ११ टिकड़ी को नाल जोड़ी में बांधते हैं।
- ■ २ कंघी
- ■ चांदी के खिलौने
- ■ सतनाला (नाल तानने के नेग के समय बनाते हैं)
- ■ १ छोटी थैली में (लाल थैली हरी गोट के साथ)

हल्दी की गाँठ, ताँबे का पैसा, चांदी का छल्ला, कौड़ी रखते हैं।

- १ शीशी गुलाब का इत्र
- मैण की डब्बी
- तीन चावरी लाल हरे सूते की
- सुहाग पूड़ा
- छेड़ छड़ेली की पुड़िया
- ४ सुहागी के पैकेट एक-एक में ७ सुहागी (सुहागी-१ नाल जोड़ी, १ साबुत बादाम, ३ छुआरी, मखाना, (रुपया) सैलोफेन में पैक कर चारों तरफ गोटा लगाते हैं।
- थाली कल्पाने के लिए
- एक ग्लास, एक चम्मच
- १ गमछा मुँह पोछने के लिए

<u>नीलगरनी को वस्त्र रँगने देना (वर पक्ष)</u>

अच्छा दिन देखकर नीलगरनी को रँगने के लिए वस्त्र देते हैं।

- ४ पीला निकासी के समय के लिए
- ११/४ गज गठजोड़ा गुलाबी कपड़ा का
- ५१/४ गज कसूमल (लाल) कपड़ा इसमें से
- ११/४ गज सगों में जाता है कुँवारा माण्डे के लिए
- ११/४ गज नाना के लिए (भात में)
- ११/४ गज पीहर के लिए
- ११/४ गज डाले के लिए
- ११/४ गज काचरी रँगाते हैं- शक्करपारा के डिजाइन की बहू की चूनरी के लिए डाले में रखते हैं।
- घोड़ी की साड़ियाँ घर की सब सुहागनों के लिए (आजकल दुकान में प्रिन्ट करवा लेते हैं)।

समाज के विवाह से जुड़ी कुछ नेग की परंपराएं

संक्रांति के नेग – जँवाई के यहाँ

यह 14 जनवरी को मनाया जाता है। सगों के यहाँ, लड़के के नाना के यहाँ दोनों जगह यह नेग भेजा जाता है। लड्डू–बूंदी के, घेवर, नाश्ता, फल, शगून के रुपये आदि।

चौंक चाँदनी का सिंधारा – जँवाई का :

जँवाई के कपड़े, 2 चाँदी के डंडे , शगून रुपये, सासूजी की तिल, 2 साड़ियाँ, कुँवारे देवर, ननद के लिए कपड़े एवं परिवार के अन्य सदस्यों के लिए भी इच्छानुसार सामान भेजते हैं। मिठाई, फल, जँवाई के साथ जो सेवक आता है उसे भी सगून दिया जाता है।

ंसिंधारा – बहू का :

बहू के दो सिंधारे मनाये जाते हैं। एक सावन में (जुलाई/अगस्त), दूसरा चैत्र (मार्च) में। बहू को शगुन की मेंहदी लगवाते हैं। सुविधानुसार गहना, कपड़ा, रुपया देते हैं। बहू के साथ यदि छोटा भाई या बहन आते हैं, तो उन्हें भी कुछ उपहार देते हैं। साथ में मिठाई एवं फल देते हैं। भोजन कराते हैं।

होली का नेग – जँवाई को भेजते हैं :

पिचकारी, छोटी सी डिब्बी में केसर, जँवाई का कुर्त्ता पजामा, सास की तील (2 साड़ी ब्लाउज), होली के रंग, ठण्डई, शर्बत, फल, मिठाई।

होली का नेग, – बहू को भेजते हैं :

बहू के लिए खुसारंग के कपड़े (लाल, पीले, केसरिया), कुछ श्रृंगार का समान, गहना सुविधानुसार, होली के रंग, मिठाई।

दीपावली (जँवाई का नेग)

कुर्ता पायजामा, कुर्ते के बटन (सुविधानुसार), चाँदी का सामान, सास की साड़ी, मेवा, मिठाई, पटाखे।

दीपावली (बहू का नेग)

बहू के कपड़े (घाघरा), गहना (सुविधानुसार), श्रृंगार का समान, मिठाई, पटाखे आदि।

शादी-विवाह संबंधी कुछ रोचक जिज्ञासाएँ

विवाह एक पवित्र संस्कार क्यों ?

श्रुति का वचन है - दो शरीर, दो मन और बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं का समन्वय करके अगाध प्रेम के व्रत को पालन करने वाले दम्पत्ति उमा-महेश्वर के प्रेमादर्श को धारण करते हैं, यही विवाह का स्वरूप हैं।

हिन्दू संस्कृति में विवाह कभी न टूटने वाला एवं पवित्र धार्मिक संस्कार है, यज्ञ है। विवाह में दो प्राणी (वर-वधू) अपने अलग अस्तित्वों को समाप्त कर एक सम्मिलित ईकाई का निर्माण करते हैं और एक-दूसरे को अपनी योग्यताओं एवं भावनाओं का लाभ पहुँचाते हुए गाड़ी में लगे दो पहियों की तरह प्रगति पथ पर बढ़ते हैं। यानी विवाह दो आत्माओं का पवित्र बंधन हैं, जिसका उद्देश्य मात्र इंद्रियसुख भोग नहीं, बल्कि एक परिवार की नीव डालना हैं।

ऋषि श्वेतकेतु का एक संदर्भ वैदिक साहित्य में आया है कि उन्होंने मर्यादा की रक्षा के लिये विवाह प्रणाली की स्थापना की और तभी से कुटुम्ब व्यवस्था का श्री गणेश हुआ।

आजकल बहुप्रचलित और वेदमंत्रों द्वारा संपन्न होने वाले विवाहों को ब्रह्म विवाह कहते हैं। इस विवाह की धार्मिक महत्ता मनु ने इस प्रकार लिखी हैं :

दश पूर्वान् परान्वश्यान् आत्मनं चैकविंशाकम्।

ब्राह्मीपुत्रः सुकुतकून मोचये देनसः पितून्।।

अर्थात् ब्रह्मा विवाह से उत्पन्न पुत्र अपने कुल की २१ पीढ़ियों को पाप मुक्त करता है १० अपने आगे के, १० अपने पीछे और एक स्वयं अपनी।

भविष्यपुराण में लिखा है कि जो लड़की को अलंकृत कर ब्राह्मविधि से विवाह करते हैं, वे निश्चय ही अपने सात पूर्वजों और सात वंशजों को नरक भोग से बचा लेते हैं।

अश्वलायन में तो यहाँ तक लिखा है कि इस विवाह से उत्पन्न पुत्र बारह पूर्वजों और बारह अवरणों को पवित्र करता है :

तस्यां जातों द्वादशवरान् द्वादश पूर्वान् पुनाति।

भारतीय संस्कृति में अनेक प्रकार के विवाह प्रचलित रहे हैं मनुस्मृति ३ या ४ के अनुसार विवाह- ब्राह्म, देव, आर्ष, प्राजात्त्य, असुर, संधर्व, राक्षस और पैशाव ४ प्रकार के होते हैं। उनमें से प्रथम ४ श्रेष्ठ और अंतिम ४ क्रमशः निकृष्ट माने जाते हैं।

विवाह के लाभों में यौन तृप्ति, वंशवृद्धि, मैत्रीलाभ, साहचर्य सुख, मानसिक रूप से परिपक्वता, दीर्घायु, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति प्रमुख है। इसके अलावा समस्याओं से जूझने की शक्ति और प्रगाढ़ प्रेम संबंध से परिवार में सुख-शान्ति मिलती है। इस प्रकार देखें, तो ज्ञात होगा कि विवाह संस्कार सारे समाज के एक सुव्यवस्थित तंत्र का मेरुदण्ड हैं।

विवाह में गठबंधन का विधान क्यों ?

गठबंधन विवाह संस्कार का प्रतिकात्मक स्वरूप है पाणिग्रहण के बाद वर के कंधे पर डाले सफेद दुपट्टे में वधू की साड़ी के एक कोने में गांठ बांध

दी जाती हैं, इसे आम बोलचाल की भाषा में गठबंधन बोलते हैं। इस बंधन का प्रतीक अर्थ है – दोनों के शरीर और मन का एक संयुक्त इकाई के रूप नई सत्ता की शुरुआत। अब दोनों एक–दूसरे के साथ पूरी तरह से बंधे हुए हैं और उनसे यह आशा की जाती है उन्हें आजीवन निरंतर याद रखेंगे। जीवन लक्ष्य की यात्रा में वे एक–दूसरे के पूरक बनकर चलेंगे। इसलिये गठबंधन को अटूट अर्थात् कभी न टूटने वाला अजर और अमर माना गया हैं।

गठबंधन करते समय वधू के पल्ले और वर के दूपट्टे के बीच सिक्का (पैसा), पुष्प, हल्दी, दूर्वा और अक्षत (चावल) ये पाँच चीजें भी बांधते हैं, जिनका अपना–अपना महत्व हैं। विवाह पद्धति के अनुसार यह महत्त्व इस प्रकार हैं :

सिक्का (पैसा) : धन पर किसी एक का पूर्ण अधिकार नहीं होगा, बल्कि समान अधिकार रहेगा।

पुष्प : प्रतीक है, प्रसन्नता और शुभकामनाओं का सदैव हंसते–खिलखिलाते रहें। एक दूसरे को देखकर प्रसन्न हो। एक–दूसरे की प्रशंसा करें। अपमान न करें।

हल्दी : आरोग्य और गुरु का प्रतीक हैं। एक दूसरे के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को विकसित रखने के लिये प्रयत्नशील रहे। मन में कभी लघुता व्याप्त न होने दे।

दुर्वा : कभी प्रेम भावना न मुरझाने का प्रतीक है। उल्लेखनीय है कि दुर्वा का जीवन तत्व कभी नष्ट नहीं होता, सुखी, दिखने पर भरी यह पानी में डालने पर हरी हो जाती है। दोनों के मन में इसी प्रकार से एक–दूसरे के लिये अटूट प्रेम और आत्मीयता बनी रहे। चंद्र–चकोर की भांति वे एक–दूसरे पर निछावर होते रहें।

अक्षत : (चावल) अन्नपूर्णा का प्रतीक हैं। जो अन्न कमाएं, उसे अकेले नहीं, बल्कि मिल–जुलकर खाएँ। परिवार, समाज के प्रति सेवा एवं उत्तरदायित्व का लक्ष्य भी ध्यान में रखें। इसी की प्रेरणा के लिये अक्षत रखे जाते हैं।

विवाह के मांग में सिन्दूर क्यों ?

विवाह के अवसर पर एक संस्कार के रूप में वर–वधू की मांग में सिन्दूर भरता है। इसे ही सुमंगली क्रिया कहते हैं। इसके पश्चात विवाहित स्त्री अपने पति की दुर्घायु की कामना करते हुए जीवन भर मांग में सिन्दूर लगाए रखती है, क्योंकि मांग में सिन्दूर भरना हिन्दू धर्म की परम्परा के अनुसार सुहागिन होने का प्रतीक माना जाता हैं।

हमारे शास्त्रों में मांग में सिन्दूर भरने का प्रावधान इसलिये किया, क्योंकि यह स्थान ब्रह्मरंध्र और अघ्मि नामक मर्म के ठीक ऊपर हैं, जो पुरुष की अपेक्षा स्त्री में अधिक कोमल होती है। सिन्दूर में पारा जैसा अलभ्य धातु अधिकता में होने का कारण स्त्री के शरीर में वैद्युतिक उत्तेजना को नियन्त्रित रखती है तथा बाहरी दुष्प्रभाव से बचाता है।

सामद्रिक शास्त्र के अनुसार जिन स्त्रियों के सीमंत या भुकुटी केन्द्र में यदि नागिन रेखा पड़ी हो, तो इसे दुर्भाग्य का सूचक माना गया हैं। अतः उसके इस दोष के निवारण के लिये भी मांग में सिन्दूर भरने की सलाह दी जाती है।

स्त्रियों के बाल लम्बे रहने तथा काम–काज और बच्चों की देख–भाल में व्यस्त रहने के कारण नित्य सिर ना धो सकने से प्रायः जू–लीख आदि जीव भी पड़ जाते हैं। उनको हटाने की अमेध औषधि भी पारद है जो कि सिन्दूर में पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

शास्त्रों में सगोत्र विवाह वर्जित क्यों ?

हमारी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार विवाह अपने कुल में नहीं करना चाहिए। एक ही गौत्र मं

विवाह करने से पति–पत्नी में रक्त की अति समान जातीयता होने से संतान का उचित विकास नहीं होता। मनु महाराज के अनुसार:

असपिण्डा च या मातुर सगोत्रा च या पितुः।

सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्ममि मैथुने।।

अर्थात जो माता की छह पीढ़ी में न हो तथा पिता के गौत्र में न हो ऐसी कन्या द्विजातियों में विवाह के लिये प्रशस्त हैं।

चिकित्सा–शास्त्रीयों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि सगोत्री यानी निकट सम्बन्धियों के बीच विवाह करने से उत्पन्न संतानों में आनुवंशिक दोष अधिक होते हैं। ऐसे दम्पत्तियों में प्राथमिक बंध्यता, सन्तानों में जन्मजात विकलांगता और मानसिक जड़ता जैसे दोषों की दर बहुत अधिक है। साथ ही मृत शिशुओं का जन्म, गर्भपात एवं गर्भकाल में या जन्म के बाद शिशुओं की मृत्यु जैसे मामले भी अधिक देखने में आए हैं।

वैवाहिक की तैयारी में विशेष ध्यान देने योग्य बातें

१. वर–कन्या के माता–पिता, मामा आदि को फेरे के समय हाजिर रहना चाहिए।

२. प्रत्येक रस्म/दस्तूर/नेग का समय पहले से ही बता देना चाहिए।

३. सभी रस्में वंश की परम्परानुसार करनी चाहिए। अतः अपने परिवार के बुजुर्गों से सलाह करके ही रस्मों का पालन करें।

४. हर रस्म को समय की पाबन्दी में ही पूरा करे / एक नेग की देरी से सारे विवाह के कार्यक्रमों में देर होती चली जाती हैं।

५. विवाह में प्रयोग होने वाले सामानों को पर्याप्त मात्रा में पहले से ही इकट्ठा करले ताकि नेग के समय दिक्कत ना हो।

६. विवाह के दौर सभी को धीरज से काम लेना चाहिए। छोटी–मोटी बातों को नजर अन्दाज कर देना चाहिए। इस दौरान गुस्से को भूल जाना चाहिए।

७. विवाह में आये सभी मेहमानों का विशेष ध्यान रखना चाहिए एवं उनको उचित सम्मान देना चाहिए।

८. बहन–बेटियों द्वारा जो भी नेग दिये जाते हैं, उनको उसका कम से कम दुगुना या अपने सामर्थ अनुसार लौटा देना चाहिए।

९. विवाह की तैयारियों के दौरान विशेष रूप से ध्यान रखें की अपने परिवार/सगे–संबंधी / यार–दोस्त /अड़ोस–पड़ोस तथा अन्य को निमंत्रण जरुर दें। अपनो की नाराजगी दूर करने का यह सबसे अच्छा मौका है। अगर कोई रिश्तेदार नाराज हो तो उसे विशेष रूप से निमंत्रण देना चाहिए।

१०. विवाह में देन–लेन के विषयों पर वर–कन्या पक्ष को पहले से ही बात कर लेनी चाहिए ताकि विवाह के समय / बाद आपस मन–मुटाव न हो।

११. कन्या पक्ष को विवाह से पहले अपना बजट तैयार कर लेना चाहिए जिसे वर पक्ष के साथ सलाह करके बनाना चाहिए।

१२. कन्या की विदाई के बाद कन्या पक्ष के महिला /पुरुषों को कन्या के निजी मामलों में कभी भी दखल–अन्दाजी नहीं करनी चाहिए।

१३. सगाई और विवाह के बीच अगर कोई भी त्योहार (होली/दिवाली/चोक/चान्दनी सिंधारा /करवा चौथ/सकरात/जन्मदिन आदि) आये तो कन्या /वर का नेग अपनी परम्परानुसार करना चाहिए।

१४. विवाह के पश्चात् कन्या पक्ष वालों को विवाह के बाद के नेग–चार वर पक्ष के परम्परानुसार करने चाहिए।

१५. आज के जमाने की सबसे अहम् बात–अपने पुत्र या पुत्री की सगाई करने से पहले वर–कन्या की जन्म कुण्डली अवश्य मिला लेनी चाहिए।

शादी-ब्याह के अवसर पर गाये जाने वाले कुछ लोकगीत...

विनायक

गढ़ रणत भवन से आवो विनायक करो ए नचीती बिड़दड़ी।

बिड़द बिनायक दोंनुजी आया आय पवास्यां सिल बड़ तलै॥

बूझत-बूझत नगर पवास्यां पोल बताओ दशरथराय की।

ऊँची सी मेडी लाल किंवाड़ी कैलाज भर राजीड़ार बारन॥

पैतो तो बासो सरवर बसियो सरवर भसीयो ठण्ड़ा निर जूँ।

दूजो तो बासो बाड़ी जी बसियो बाड़ी मे भरीयो बिझोबस।

फल-फूल बाड़ी सुपल कलिया कुंजासी मरवा के बड़ा।

अगणो तो बासो बड़तल बसियो बड़ नारेलारी छईजुँ॥

चोथो तो बासो नगरी जी बसीयो नगरी में बैठया बामण बाणीया।

पंचवो तो बासो तोरण बसियो तोरण छाई रुड़ी चिड़कली॥

एवड़ छवड़ सात चिड़कली बीच हरियाली सूवटो।

व तो चुग-चुग बोल सात चिड़कली अमृत बोल हरियो सूवटो॥

छटो तो बासो फेंरा जी बसियो फेरा में बैठया लाड़ो लाड़ली।

म्हारी लाड़ली को चीर बधज्यो राईवर को बागो बींटली।

बधज्यो बधज्यो ए लाड़ी गोत तुम्हारो एक पिहर दूजो सासरो।

सतवो ता बासो ओवर बसियो ओवर गुड़ घी बस॥

एक चून चावल किणक मैदा बरकत करो ए विनायक।

एक कोथलड़ी जस देईयो बिनायक लाडलै कै बाप ने॥

ब तो खाय खर्चे सो धन बिल सै जस खै परवार मैं।

एक जीभड़ली जस देईयो बिनायक लाडले की माय नै।

बातो मीठीसी बालै नकर चालै जस खै व क ब्वाव में।

एक बांहड़ली बल देईयो बनायक लाडली कै बिरा नै।

एक भार में जस देईयो बिनायक लाठली की भूवाभेण न।

एक गाजत धाोरत आये बिनायक सावणियाँ के माह ज्यूं।

एक भरयो भतोलो आवो बिनायक बिणजार के बैल ज्यूं।

एक मांडेय चुणडयो आवो बिनायक सरब सुहागण क शीश ज्यूं।

एक तीन बस्त निभाइयो बिनायक पून पाणी बसुन्दरा।

म तो अली ए गली मत जाईयो बिनायक सिधो ए आयोसामी साल में।

एक आवगी मूगल की बांस सूगन्धी कुण रै सुहागन गणपत पुजिया।

गणपत पुजे लाडल की मांय सुहागण ज्यूँ घर बिड़द उतावली॥

विनायक गीत -

तर्ज - अपने पिया की मैं तो बनी....

चालो गणेश आपां खुरसाणा* क चालां

आच्छा-आच्छा घुड़ला मुलावा ओर राज, म्हारै विरद विनायक।

सुंड-सुंडालो बाबो दुंद-दुंदालो

ओछी सी पिंड कामणगारो ओ राज, म्हारें विरद विनायक।

चालो गणेश आपां बाबाजी क चालां,

जोड़ी, रा जानीड़ा सिणगारा ओ राज म्हारै विरद विनायक।

चालो गणेश आपां सोनी र चालां,

आछा-आछा गहणा घड़ावा ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चालो गणेश आपां पुरबियां र चालां,

आछा-आछा पडला मुलावां ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चालो विनायक आपां कनोई र चालां,

आछा-आछा लाडुडा संधावा ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चालो विनायक आपां पनवाड़ी र चालां,

आछा-आछा बिड़ला मुलावा ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चलो गणेश आपां सजना र चालां

जोड़ी री बनड़ी परणीजै ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

बालाजी गीत -

सुसरो जी म्हारा थे छो धरम का मायतजी थारी मोटर गाड़ी जुड़ाद्यो

म्हे बालाजी न धोकस्यां।

कांई र कारण भवड़ बोली छ'जात जी,

क्याँ रै खातिर जात पधारिया।

जेठजी म्हारा थे तो धरम का मायत जी,

आदर रा बंटावतजी थारी बैलड़ीया र जुड़ाद्यो

म्हे बालाजी न धोकस्यां।

कांई र कारण....

देवरिया म्हारा थे छो धरम का देवरजी थारी मोटर गाड़ी जुड़ाद्यो

म्हे बालाजी न धोकस्यां।

क्याँ रै कारण भावज बोली छ जात जी

क्याँ रै खातिर जात पधारीया।

मारूजी म्हारा सेजां रा सिणगाराजी भोली बाईजी रा बीराजी

थारी मोटर गाड़ी जाड़ाद्यो म्हे बालाजी न धोकस्यां।

क्याँ रै कारण गौरी बोली छ जात जी

क्याँ रै खातिर बजरंग धोकस्यां।

कंवरा रै कारण म्हे तो बोली छ जात जी

थारे जीवड़े रै कारण बजरंग धोकस्यां।

कहता तो सुणता मारूजी मोटर गाड़ी मंगाया जी

म्हारे हुक्मा रै कारण जात पधारया।

दीन्ही सैला मारू गठ जोड़ेरी जातजी,
कोई रोक रुपयो बालाजी की भेंट न।
दीन्हों बजरंग सरब सुहाग जी,
कोई घीरता न दीन्हों बजरंग गीगलो जी।

पित्तरजी-पित्तराणीजी गीत

उत्तर दिखणस जीवो गांधी को जाआ,
आया पवास्यो शील बड़तळे।
आव गांधी का जीवो बैठ गांधी का,
तोळे गांधी को बेटो किस्तूरी॥
कायेरी डांडी जीवो कायेरो तो,
तोल गांधी का बेटा किस्तूरी॥
सोना री डांडी जीवो रुपारो तोलो,
लूंगारी तोल गांधी किस्तूरी॥
अ कुण मुलावै जीवो ये कुण तुलावै,
साचां पित्तर थारै अंग चढ़ै॥
(श्रीराम) मुलावै जीवो (वासुदेव) तुलावै,
(सांवरमल) पित्तरा थारै अंग चढ़ै॥
छोटी सी तळाई, जाम पाणीड़ो घनेरो,
आयो पित्तरा रो लश्कर न्हायल्यो॥
न्हाया देई-देवता, म्हारा पित्तर सन्तोख्या,
ओजुं तळाई में पाणी अन्त घणो।
छोटी सी बाटकड़ी, जामै केसर घोळी,
आयो पित्तरा रो लश्कर चिरचँ ल्यो।
चिरच्या देई-देवता, म्हारा पित्तर संतोख्या,
ओजुं बाटकड़ी म केसर मोकळी।

पित्तराणीजी गीत

कंठोड़ सुं दल उमड़ा पितराणीजी, कंठोड़
लियोजी मुकाम,
ओ पितराणीजी साचा सायबाणीजी, गैरो जी
फूल गुलाब रो।
हिवड़ सुं दल उमड़ा पितराणीजी, नाडे लिया र
मुकाम, नाडे
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी चंदन चौकी बैठणो, पितराणी दूध
पखारा थारै पांव
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी चावळ राध्यां थानै उजळा, पितराणी
हर्‍या रे मूंगा री धोवा दाल,
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी घी बरतानां थानै टोकणा, पितराणी
असल जालापुर री खांड,
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी पुड़ी तो पोवा थानै लड़छड़ी, पितराणी
तीवण तीस
बत्तीस ओ पितराणी जी सांचा...।
पितराणी केर करेला थानै स तळा पितराणी
पापड़ तळा ओ पचास
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी चन्दन चौकी बैठगा, पितरागी फूलड़ा
जड्यो बाजोट
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी थाळ परोसे थारी कुल बहु जी,
पितराणी कोई नेवर रो झनकर,

ओ पितराणीजी सांचा...।

पितराणी जिम्या जुठया रस भरा, पितराणी अमृत चळु ये कराय

ओ पितराणी जी सांचा...।

पितराणी बेटा तो पोता थानै धोकसी, पितराणी कुल बहुआं रुल लाग थारै

पावै ओ पितराणीजी

सांचा सायबाणी जी, गैरो जी फूल गुलाब रो।

कामाख्या मैया को गीत

कोठे ऐ बाजा बाजीया ऐ।

कामाख्या मैया कोठे गोरया छ निशाण॥

चलो ऐ संईयो आज मैया न धोकस्या।

लग्या ये गुलजार मैया न धोकस्या।

पर्वत बाजा बाजीया ऐ कामाख्या मैया।

गुवाहाटी में गोरया छ निशाण॥ चलो ऐ सईयो...

भोग लाग्या थारे पेड़ा को ए।

कामाख्या मैया और चोटारा नारियल॥ चलो ऐ॥...

दानी तो आवै थाने परण वा ऐ।

कामाख्या मैया करो संकट में साथ॥ चलो ऐ....

थारे भवन में बसे ऐ,

कामाख्या मैया जोगीड़ा धरे थारो ध्यान॥ चलो ऐ...

तीन पहर के बीच में ऐ।

कामाख्या मैया सड़क तीन बनाओ॥ चलो ऐ...

चार पहर के बीच में ए।

कामाख्या मैया बनी कुकड़ो आप॥ चलो ऐ...

जाती तो अव थारे दूर से ऐ।

कामाख्या मैया सांवरिया सिरदार सिरदार॥ चलो ऐ...

जातन आवैथारे कुल बहुआ ए।

कामाख्या मैइया गठ जोड़ारी जात,

कामाख्या मैया गोदज डोल पूत॥

चलो ए....

सगळां देवता को गीत

पांच पताशा पाना का बिड़ला ले विनायक घर जाज्योजी।

पांच पताशा पाना का बिड़ला ले हनुमत घर जाज्योजी।

जिस डाळी पर विनायक बाबो बैठ्या, बा डाळी झुक जाज्योजी।

जिस डाळी पर हनुमानजी बैठ्या, बा डाळी झुक जाज्योजी।

झुक भी जाइयो, रुल भी जाइयो ठंडा झोला देज्योजी।

(नोट : इस तरह सभी देवी-देवता का ना नाम लेवें।)

स्वागत गीत

तर्ज- फूल तुम्हे भेजा है खत में

अभिनन्दन करते हैं हम सब, हाथ में रोळी चावल ले,

उर में आनन्द हमारे, श्रीमान आपका स्वागत है।

अभिनन्दन...

आप आये तो फूल खिले हैं,
बगिया में महक रही खुशबू - 2
फूलों का हम हार बनाये
माला से स्वागत करते हैं॥

अभिनन्दन....

गीतों का यह प्रिय उत्सव है,
आप आये खुशियाँ छाई - 2
बेला और गुलाब खिले हैं
धरती पर नवरंग लाये॥

अभिनन्दन....

आप बिना सुनी थी महफिल
आप आये तो बहार आई - 2
आओ बिराजो बैठो आसन
हम सब करते स्वागत है॥

अभिनन्दन...

बधाँवो

मगनी सो हाथी ऊपर अम्बा बाड़ी जी राज
जहाँ जढ़ आल हारी कन्थ हाजरिजी राज
अबरी घड़ी म्हारी बधावो जी राज
सुबरी घड़ी म्हारो रजन घर आयाजी राज
अुबर अुबा कर वा बायण मांग जी राज
बायण दीरावो दशरथ राछावा जी राज
तामा की तोला में भात पसाया जी राज
चढ़ती भवर जी न नुत जी मायाजी राज
कोरी कोरी कुलड़ा मे दही ड़ो जीमायो जी राज
चढ़ता भवर जी सुगन मनायाजी राज
साड़ी क पल्ल दाय हीरा जी राज,
रामचन्द्र लक्ष्मण दोय बिराजी राज,
साड़ी क पल्लु गुड़ धानी जी राज,
सीता दे उर्मीला दे दोर जीठाणी जी राज,
साड़ी र पल्ल दोये राई जी राज
बाई-बाई दानो बदना जी राज,
अबरी घड़ी अमर बड़ावो जी राज
सुभरी घड़ी म्हार मर बधावोजी राज।

बधावा

पैल बधायो ये सैयो मोरी म्हे गया राज।
गया म्हारा बाबो जीरो पोल
बाबाजी सोस्या ये सैयो मोरी अपनै राज।
म्हाने दीन्यो छै दिखणी चीर
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होय राज।
लाड जंवाई नै सुण भला होया राज।
दुजे बधावे ये सैची मोरी म्हे गया राज
गया म्हारा बीरांजीरी पाल
बीरांजी संतोस्या ये सैयो मोरी आपनै राज।
म्हाने दीन्ये छै चूनड़ी रो बेस
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होया राज।
लाड जवाई नै ये सुण भला होया राज।
अगणे बधावै ये सैचो मोरी म्हे गया राज
गया म्हारा सुसरां जीरो पोल
सुसरो जी संतोस्या ये सैचो मोरी आपने राज
ल्याया छे दोय रथ जोड़
चढ़ती बाई पै ये सुण भला होया राज।
लाड जवाई न सुण भला होया राज।
चोथ बधावै ये सैयो मोरी म्हे गया राज
गया म्हारे जेठ बड़ांरी पोल

जेठ जो संतोस्या ये सैया मोरी आप न राज
म्हाने दीन्यो छे आधो धन बांट
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होया राज।
पंचवै बधावै ये सैयों मोरी म्हे गया राज।
गया म्हारैं माखजीरा पोल
मारुजी संतोस्या ये सैयो मोरी आप नै राज।
म्हाने दीन्यो छै सब सुहाग
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होया राज।
लाड जंवाई न सुण भला होया राज।

बधावा

सूनो जी भंवर म्हान सुपनो सो आयो जी राज
सुपनो रो अरथ बताओ जी राज
कवो ए गोरी थाने के बिद आयो जीराज
सुपना रो अरथ बतावा जी राज।
हंस सर बर ढोला गाजत देख्या जी राज।
मानसड़ा दोये जल भर राज।
बांगा माला चपल्या म्हे फूलत देख्या जी राज
फूल बीण दोए कामणी राज
पोली माला हंसती म्हे हीसत देख्या जी राज
हरी-हरी दुब घोड़ा चर राज।
आंगनियांरो चोक म्हे पुरत देख्या जी राज
ऊपर कुम कलश धर्यों राज
महला मालो दिवलो म्हे जगतो सो देख्यो जी राज
दीवलां का जोत सवाई जीराज
हंस सर वर गोरी पीर तुम्हारो जी राज
मानसड़ी थारो सासरो राज
बागां माल्या चपल्या व बीर तुम्हारा जी राज
फूल बीण थारी भावजां राज।
पोली माला हंसती देवर जेठ तुम्हारा जी राज
हरि-हरि दूब सवासणी राज।
आंगणियांरो चोक व कंवर तुम्हारा जी राज
कुंभ कलश थारी कुल बहु राज
महलां मालो दिवलो व कंथ तुम्हारो जी राज
दिवलांगरी जोत साएवाणी जी राज।
धन-धन जी (दशरथ) जीरा छावा जी राज
सुपनांरो अरथ भलो दियो राज।
धन-धन जी (रामचन्द्र) जीरा छावा जी राज
सुपनांरो अरथ भलो दियो राज।
धन धन ए साजनियांरी जाई जी राज
बंश बढ़ाओ म्हार बाप को राज।
रूपा की रूड़ी सुहागां की पूरी जी राज
पूत जन म्हारो घर भर राज

बत्तीसी-भात के गीत

गुड़ की भेली लीन्ही छ हाथ, भतीयां न नुतणा निसरी जी।

काका रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली

म्हारै ये बाई दुकाना रो काम, थारा भुवा रो बेटो झालसी जी।

भुवा रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।

म्हारै ये बाई मीला रो काम, थारा बाबा रा बेटा झालसी जी।

बाबा रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।

म्हारै ये बाई भोत घणेरो काम, थारा मामा रा बेटा झालसी जी।

मामा रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।

म्हार ये बाई भोत घणेरो काम, थार माँ का जाया झालसी जी।

माँ का रे जाया बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।

म्हे तो ये बाई ऊबा जोवां बाट, थे घर-घर लिया क्यूं फिर्‌या जी।

कदरो ये बाई मंडियो छ ब्याव, कदरां आवां भातवी जी।

आखा तीजां रा बीरा मंडिया छ ब्याव, थे जद ही आबो भातवी जी।

॥ भात ॥

तूं क्यूरै म्हारा हरिया पीपल उन मुणोजी।

येक पान पतूरां बिन सोभ्या नहीं आवै॥

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं।

गजराज ओ भरभात ओ मेरी माका जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यू रे मेरी राम रसोई उण मणी।

एक मूंग भात बिना सोम्या न आव।

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यू रे म्हारा रतन परींडा उनमणा।

एक कुम्भं कलस बिना सोम्या न आव।

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यूं रे म्हारा रामचन्द्र बिरा उनमणा।

एक भात भरयां बिना सौभ्यान आव।

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यूं ए म्हारी थाई उणमणी।

एक भात नुत्यां बिना सोम्या न आवै,

बरस माई जाया इन्द्र ज्युं॥

भात

तूं क्या म्हारा हरिया पीपल उन मुरोजी।

येक पान पतूरां बिन सोभ्या न आवै।

बरस माँ का जायाइन्दर ज्यूँ।

गजराज ओ भरभात ओ मेरी माँ मा जायां इन्दर ज्यूं॥ 1॥

तूं क्यू रै म्हारी राम रसोई उन मुर्णी,

येक मूंग भात बिन सोभ्या न आवै,

बरस माई जाया इन्दर ज्यूं॥ 2॥

तूं क्यों रै म्हारा रतन परींडा उन भुणा,

एक कुम्य कलश बिन सोभ्या न आवै।

बरस माई जाया इन्दर ज्यूँ॥ 3॥

तूँ क्यों रै म्हारा (रघुनाथ) बीरा उन मुणो।

एक भात भरयां बिन सोभ्या न आवै।

बरस माई जाया इन्दर ज्यूँ॥ 4॥

तूँ क्यों रै म्हारी बाइ न मुणी एक भात

नुत्यां बिन सोभ्या न आवै

बरस माई जाया इन्दर ज्यूँ॥ 5॥

भात

गंगा के छोर रे बीरा जमना के छोरे जमना के छोरे पार बसै मेरा भतई

बेगो सोई और रै मेरी मांका रै जाया जामरा का रै जाय

हम घर बिड़व उतावली

किस विध आऊंए मेरी माकी एक जाई जामण की ए जाई
बीच जमना अथाह भवै।
चनरा कटाऊ रै वीरा नांव धड़ाऊ जै चढ़ आवे मेरा भतई
बेगो सो आई रे मेरी माका है जाया।
किरा विध आऊ ए मेरी माकी ए जाई जामरा की ए जाई
हम घर मण्डी बाई साकड़ी।
राज बुलाऊँ रै बीरा चैजारा बुलाऊँ मण्ड़ी चिणाऊँ मेरे बीर की
बेगो सो आई रे मेरी माका रै जाया।
कण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई जामण की ये जाई
हम घ भैंस दुहावणी
गुजर लगाघूं बीरा हाली लगाघूं भैस दूहाघूं मेरे बीर की
बेगो सो आई रे मेरी माँ का रै जाया
किण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई जामण की ये जाई
हम घर टाबर बाई रोवणा।
दाई रखा धूं रे बीराधाय बुलाधूं कंवर खिलावे मेरे बीर को
बेगो सो आई रे मेरी माका रे जाया
किण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई जामण की ये जाई
हम घर नार कुटे बड़ी।
सास खिनाऊँ रे बिरा नणद खिनाऊं मैं आप ही आऊं
नार समझाऊँ मैरे बीर की
बैगो सो आई रे मेरा माका ई जाया
कीण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई
हम घर आई बाई हाकमी।
हाकीम हाज्यो रै बीरा घुड़ला पर चढ़ज्यो जै चढ़ आओ मेरा भतई
सिर सुलतानी रै बीरा पाग बिराजै सोई म्हारी (श्रीराम) आइयो
हाथ गुड़ावत बिरा सेल बिराजे सोई (श्री गोपाल) आईयो
इब दल आयो रे बीरा सब दल आयो लोमरा मायड़ मेरी चित रही
इब दल भेजूं ए बार्स सब दल भेजूं घर रखवाली ए बाई मा रही
लोमरा मायड़ मेरी लोम न करिये जायांरो फल ली जीये।

(भात के गीत)

आज म्हारो विरोजी कांकड्या बस रहया,
निरख रहया ग्वालिया, उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।
निरख रही पणिहारी, उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।
ओढु तो हीरा र बीरा झड़ पड़े, मेलु तो तरसे बाई रो जीव
उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।
तालु तो तोला र वीर डोढ़ स, नापु तो हाथ पचास,
उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।
आज म्हारो वीरोजी पोल्या बस रहया,
मिल्या छ देवर-जेठ उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।
आज म्हारो वीरोजी आंगणै बस रह्या,

मिल्या छ बहन र वीर उढ़ाई गणेवा चुंदड़ी।
ओढ़ूं तो हीरा र बीरा झड़ पड़,
ओढ़ु म्हार लाडलड़ी र ब्याव उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।
(भात के गीत)

चंदा की शोभा चांदनी, बहन की शोभा भैया,
चुंदड़ की शोभा जाल, जिसमें घल रहे मोर पपीहा।
सुसरोजी बरज ए बहू मत नू तो अपना भईया,
सासुजी बरज ए बहू मत नू तो अपना भैया,
तेरी पांच रुपए की भेली जासी, क्या लाएगा तेरा भैया।
सुसराजी की बरजी ना रहूं मैं नूतु मेरा भैया,
पांच मोहर री भेली जासी, लाख मोहर रा मेरा भैया।

(भात का गीत)

एक उजला सा चावल, हल्दी रा पीला,
जां घर जाइये म्हारा भंवरा नुतणा।
एक गांव न जाणूँ, नाम न जाणूँ,
किस घर जाऊँ म्हारा सईयां नुतणा।
अ तो गांव है (दिल्ली), नाम (श्रीरामजी)
जां घर जाईये म्हारा भंवरा नुतणा।
अ तो गद्दी पर बैठ्या (बाबाजी) ओ नुत्या,
राव रसोइया गौरीधण नुतीया।
अ तो गाँव (कलकत्ता) नाम (सीतारामजी)
जां घर जाइए म्हारा भंवरा नुतणा।
अ तो दुकानं म बैठ्या (काकाजी) ओ नुत्या
राव रसोइया गौरीघण नुतीया।
अ तो गाँव (बम्बई) नाम (गोविन्दजी)
जां घर जाइये म्हारा भंवरा नुतणा।
अ तो आफीस में बैठया (जंवाईजी) ओ नुत्या
पीढ़ पर बैठी बाई नुतीया।

गीत बनड़ा और बनड़ी का

नवल बना जयपुर तो ज्याजो जी।
आता तो ल्याजो तारा की चुनड़ी।
नवल बनी किस बिध ल्यावा ओ।
कीसीक रंग की तारा की चुनड़ी
नवल बना हरा-हरा पल्ला ओ
केसरिया रंग की तारा की चुनड़ी
नवल बनी कुणक देखी ओ
कुणजी ल्याया तारा की चुनड़ी
नवल बना भाभी जी क देखी ओ
भाई जी कल्याया तारा की चुनड़ी
नवल बनी ओढ़ दिखा ओ जी
किसीक सोव तारा की चुनड़ी
नवल बना किस विध ओढ़ो ओ
नजर थारी दादी की पुरी
नजर थारी ताई की बुरी
नवल बनी महलो में ओढ़ो जी
बैठ तो निरखा तारा की चुनड़ी

बनी

श्यामल-श्यामल बरन कोमल-कोमल चरण
बनी के मुखड़े पे चन्दा गगन का जड़ा
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा
श्याम-श्याम बरन कोमल-कोमल चरण
बनी के बालों में सिमटी सावन की धारा
बनी के गालो में छिटकी पुनम की छटा
तीखे-तीखे नयन मीठे-मीठे बयन

बनी के अंगो पे चम्पा का रंग चढ़ा
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा
हो यह उमर करम सो बल खा रही है।
बनी की तीरछी नजर तीर बरसाय रहीं है।
नाजुक-नाजुक बदन धीमे-धीमे चलन
बनी के बाकी लटक में है जादू बड़ा
किसी पारस में सोना टकरा गया
बनी को देखकर बना का दिल चकरा गया न
इधर जा सका न ऊधर जा रह गया
देख तो वह खड़ा-खड़ा।
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा
श्याम-श्याम बरन कोमल-कोमल चरण
बनी के मुखड़े पे चन्दा गगन का जड़ा
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा

सगाजी-सगीजी

जाण सगीजी का कान जैसे भागलपुर का पान
पान चाब लीजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगीजी का माथा जैसे सगा जी का छाता
छाता ताण लीजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगी जी की बोली जैसे सगाजी
जाण सगीजी का दाँत जैसे चाँदी कासा भात
भात जीम लीजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगीजी की पीठ जैसे बम्बई की सी छींट
कुरतो सिमाय लिजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगीजी का होठ जैसे आगरे का दाल
मोठ
दाल मोठ का स्वाद लीजो म्हारा लाड़ला
सगाजी
जाण सगीजी का पैट जैसे सगाजी सौ सेठ
सेठ स सौदो कराय लीजीजो म्हारा लाड़ला
सगाजी

नणंद

कठसै आई सूँठ कठे सै आयो जीरो
कढे सैं आयो ये भोली बाई थारो बीरो।
जैपुर सै आई सूँठ दिल्ली सै आयो जीरो,
काशी सै आयो भोली भावज म्हारो बीरो॥
क्या मैं आई सूँठ यो क्या में आयो जीरो
यो क्या मैं आयो ये भोली बाई थारो बोरो।
या ऊँट मैं आई सूठ यो गाडा मैं आयो जीरो
रेला मा आयो ये भोली भावज म्हारो बीरो।
क्या मैं चाये या सूँठ क्या मैं चाये जीरो।
यो क्या मैं चायें य भोली बाई थारो बीरो
या जापा मैं चाये सूँठ यो सागां मैं चाये जीरो
यो सेंजा मैं चाये भोली भावज म्हारो बीरो।
या खिण्ड गई सूंठ यो बिखर गयो जीरो
यो रुस गयो ये भोली भावज म्हारो बीरो।
या चुग लेस्या सूंठ यो पिछोड़ लेस्यां जीरो
मनाय लेस्यां ये भोली नन्दन थारो बीरो।

बहू

म्हारी बहू महल से उतरी
बहू कर सोला सिंगार
आज म्हारी अमली पडलियो॥
म्हार सासूजी पूछ ए बवड

थार गहणारो अरथ बताय॥ आज म्हारी...
सासु गहणा जी गहणा के करे
गहणा म्हारा से परिवा॥ आज म्हारी...
म्हारा सुसराजी गढ़रा राजरी
सासुजी म्हारा रतन भण्डार॥ आज म्हारी...
म्हारा जेठ बाजू बन्द बाँकडा
जीठाणी म्हारी बाजूबन्द री लूंग॥ आज म्हारी....

मेंहदी गीत

नार नवलगढ़ जावो लश्करिया, धण न मेंहदी ल्याज्योजी।
मेंहदी हाळा हाथ भंवरजी घेवर परोसोजी, मेंहदी लाला री।
मेंहदी लाला री ओ सासु सुगणी रा जाया री सैनाणी,
ओ बाईजी रा बीरा री सैनाणी, मेंहदी लाला री।
बीकाणे थे जाओ लश्करिया, घण न टीकी ल्याज्योजी,
टीकी चेप बराबर बैठ्या, टीकी निरखोजी, मेंहदी लाला री।

मेंहदी लाला री ओ...।

दातीड़ा र जाओ लश्करिया, धण न चुड़लो ल्याज्योजी,
चुड़ळै वाळी बांय ए गौरी सिरहाण राखोजी मेंहदी लाला री।
सोनीड़ा र जाओ लश्करिया, धण न बेसर ल्याज योजी,
बेसर हाठो रंग भंवरजी, सदा ही सुरंगोजी, मेंहदी लाला री।
कन्दोई र जाओ लश्करिया, धन न घेवर ल्याज योजी,
मेंहदी हाळा हाथ भंवरजी, घेवर परोसोजी, मेंहदी लाला री।
सोनीड़े र जाओ लश्करिया, धण न पायल ल्याज्योजी,
पायल बाजना पांव गौरी ए ठमक सुं मेलो ए,

मेंहदी लाला री।

मेंहदी गीत

झटकण मेंहदी पटकण पान,
मेंहदी गई हे राज दिवान।
थे सुरजजी मेंहदी ल्यो,
मेंहदी ले रेणादेन द्यो।
थे गजानन्दजी मेंहदी ल्यो,
साग साग गोरी न द्यो,
ब्याज बटो नणदल बाई न द्यो।
म्हे तो आला लीला बांस बढ़ायस्यां रुड़ी बायनर कोड्चा, बाजी रे मादळ रंग रयो।
चित चाखो रे चावळिया थारो रे शबद सुबावणो।
म्हे तो रूठा जी गोत मनायस्यां रुड़ी बिड़द्या रा कोड्या, बाजी रे मादळ रंग...
म्हें तो सूत्यो जी सायबो जगायस्यां, म्हारी कुखां र कोड्या, बाजी रे....
म्हे तो काचो जी दहिड़ो बिलोयस्यां, म्हारै

माखण र कोड्या, बाजी रे...

म्हे तो छोटासा कंवर परणायस्यां, म्हारी बह्वां र कोड्या, बाजी रे...

म्हे तो छोटी सी धिवड्यां परणायस्यां, म्हार जवायां र कोड्या, बाजी रे...

म्हे तो पीळो रंगायो मोती चूर रो, म्हे तो चुड़लो चिरावां हंसती दांत रो

म्हारै सायब रो कोड्या, बाजी रके मादळ रंग भर्‌यो, चित चोखो...

म्हेतो लाडू संधावां सठवा सूंठ रा, म्हारी कूखां र कोड्या, बाजी के मादळ रं भर्‌यो,

चित चाखो रे चावळिया थारो रे शबद सुहावणो।

हल्दी

म्हारी हलदीरो रंग सुरंग
निपजै मालवा॥
आ लागे बनडी रा दादोसा
दादस्या रा मन रवै
वो लाग्ये बनडीरा बाबोसा
मा या र मन रवै॥
बाँकी दादया मा य
चतर सुजान केसर केवटे
वो लग बनडीरा काकोसा
काक्या रा मन रै व
वो लाग बनडीरा मामोसा
माम्यार मन रै व
बांकी काक्या माम्या चतर सुजान
केसर केवटे

हल्दी हाथ-1

ऊखल डोरो मूसल डोरो, डोरो सात सुहागण्यां।
एक ऊखल डोरो, डोरो सात सुहागण्यां।

धान सोवण का गीत

धानै सोवै धान सोवै धाना रो फटको
गेहूं सोवै गेंहू सोवै गेंवा रो फटको
दशरथजी री कुल बहू धानज सोवै
जनकजी री धीवड़ धानज सोवै
जनकजी री धीवड़ धानज सोवै
श्री रामजी गोरी धानज सोवै
वनड़ो म्हारो अंखीय जरावण होयसी
वनड़ी म्हारी सरब सुहागण होयसी
मूंग सोवै मूंग सोवै मूंगा रो फटको
चावल सोवै चावल सोवै चावला रो फटको
लूण सोवै लूण सोवै लूणा रो फटको

इसी तरह सात ध्यान तथा धान सोणे वालों का नाम लेते हैं

पीठी का गीत

म्हारी हल्दी रो रंग सुरंग निपजै मालवा,
मुलाव लाड़लड़ी रा दादाजी, दादीजी र मन रल।
बांकी दादीजी र मन कोड, कोड घणा करै,
बनड़ी पीठड़ली दिन चार मुलमुल मसलल्यो,
बनड़ी काजलियो दिन चार, नैण घुलायज्यो,
बनड़ी मेंहदड़ली दिन चार, हाथ रचायल्यो,
बनड़ी चावलिया दिन चार, रुच रुच जीमल्यो,
बनड़ी न्हाय-धोय बैठी बाजोट, सदा ए सवावणी।

लाड़ली कांई मांगै गलहार, काई दांत्यो चुड़लो।
म्हे तो मांगु साजनीया रा जोध, ब म्हारै सींग चढ़ै।
वनड़ो न्हाय धोय बैठयो बाजोट, सदा ए सवावणी।
लाडला कांई मांगा सिर पाग, कांई सिर रो सेवरो
म्हे तो भल मांगु सिर पाग, भल सिर रो सेवरो
बनड़ा तोरण तारा री छांव, क्यू कर बांधस्यो
म्हारा सिमरथ दादाजी साथ, भल भल बांधस्यो
म्हारा गेणां रो डब्बो जी हाथ, भल भल निरखस्यां
बनड़ा सासु है इदक स्वरूप, क्यूं कर भेंटस्यो
म्हारी सासु न सात सलाम, भल भल भेंटस्या

उबटणो

गेहुं र चणा रो उबट्णो, माय चमेली रो तेल,
राईजादो बैठयो उबटणों।
आवो म्हारा दादाजी निरख्ल्यो,
आवो म्हारा बाबजी निरखल्यो,
थां निरख्या सुख होय, राईजादो बैठ्यो उबटणो।

तेल

सुण-सुण ओ जोधाणा रा तेली,
घाणी पीड़ो केसर माय किस्तुरी,
माय घालो मरुवो माय जावित्री,
ओ तेल लाड़लड़ा र अंग चढ़सी,
दमड़ा बाँरा दादाजी कर लेसी।

तेल

तेली ये तेलण तोलो, राई चम्पा के रेलो,
(दशरथजी) घर कुलबहु, बहु (श्रीरामजी) तेल चढ़ाइयो।

काजल

काजल रो करवो भरयो
सूरमेरी लागी रे कटार
गोरी रो काजलीयो॥
पालर माटी चिकनी
चुल्या घाल्या दोयर चार
गोरी को काजनीयो॥
गोरी गोरी हथल्या मांड द्यो
काजलीया रा उपडाला कोर
गोरी रे काजलीयो॥
दोराण्या जीठाण्या रल सारेला
नणद भोजाया रल सारेला
काजलीया रा करेला बखान
गोरी रो काजलीयो॥

चुड़ो

आज नगर के बाजार में म्हारी मन हट माड़ीछै हाट
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
छज्जां तो बैठी छरा को मन गयो म्हारो मनहट उरै तो बुलाय,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
कैरे टकांरो थारो चुड़लो जी बो कैरे टकाँ गज भाँत,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
यो कुण चुड़लाँरो गाय की जी जो कुण खरचगो दाम,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥

श्रीराम चुड़लाँरो गाय की जी वो खरचगो दाम
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
बीच में कै (सीताराम) ले गयो म्हारी साई धण जायो छ पुत
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
कहो ना पंडित जी सायाँ म्हारै चुड़लाँरो बार दिखाय
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
आठै तो नोमी चर्तुदशी थे तो पैरो ना बार दीतवार,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
कहो ना नणद सवाँसणी म्हारै चुड़ालारै राखी बान्ध
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥

कांगना बान्ध

कांगनो कांगनो सोनी क धड़ियो कांगनो
पटव क जड़ीयो कांगनो।
कांगनो तेरी भुवाबाई बान्धो कांगनो।
तेरी भैणड़ बान्ध्यो कांगनो
मोत्यां की लड़ झड़ कांगनो
हीरा की लड़ झड़ कांगनो।

सेवरा

ऊँची तो चोवटो मालीको सोवै ये नचीत
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
म्हारी मालन जाय जगाइयो माली तूँ क्यो सोवै ये नचीत,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
नगरी कँवारा परणसी आछा सेवरा गून्थ
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
सोनो तो लाग्यो सोवणो रूपो तो अजलदंत
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
मोती तो लाग्या बाटला हर लाल लगी लखचार
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
उड़ती तो लागी चिड़कली गढ़ लगी लखचार,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
पंखो तो लाग्योखिजूर को हर पार अठारा टंक,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
कागज लाग्यो मुड़ा हर रंग लाग्यो ये सुरंग
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
हरख्यां रा गोरा आच्छा लाडा सेवरा लाग्यो है भोत विनांण
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
सिर घर मालण निसरी हर भर हरवारवां र मांय
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
लोग महाजन बूझियो हर तूं मालण किया जाय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
म्हारै(सीताराम) का है सेवरा म्हें तो घर दशरथजी कै जाय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
पूत सपूती आगंण बहु दुर्गा लियोये बुलाय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
ल्याय धरंया धर्मसाल मैं म्हारी साल पवासा लेय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
हर थारै गोरै इच्छा लाडा सेवराहर चार जणी

रखवाल

लाडलरंग बनड़ारा सेवरा॥

दादीतो भूवा मांवसी तेरी जणोयो सहोदया माय,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

हर थारै गारै आच्छा लाडा सेवरा अडिया तो च्यारूं राव,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।

दिल्ली को अड़ियो बादश्या जैपर को जगत सिंह राव

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

बून्दी को बुद्धसिंह अड़ रयो सीकर को यो माधोसिंह राव,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

च्यांरू तो जुहारिया अड़िया है सागला भाँड

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

साजन को यो (श्रीगोपाल) अड़रयो भाँड

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

इन भाँड़ा को नेग चुकाय

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

थोथा चना एक पवाली इन भांड़ाको यो ही उनमान,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

सवासणियांनै पौमाचा धन भांड़ानै कूला एक घाण,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

सवासर्णियांनै राखल्यों इन भांड़ने सीख दिवाय

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

संगला तो भांड़ जुहारिया मस्तक बान्ध्यो है दीना नाथ के नन्द

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

चूनड़ी

आज म्हारा बीरोजी कांकड़ बस रह्या हरख्या छै ग्याल्याजी लोग।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माको जायो बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी॥

ओढूंतो हीरा झड़ झड़ पढ़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी बागा बस रह्या हरख्या छै मालीजी लोग।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

ओढूंतो हीरा झड़ झड़ पढ़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी सहरां बस रह्या हरख्या छै म्हाजण लोग।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माँको जाये बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी।

ओढूंतो हीरा झड़ झड़ पड़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी पोल्यां बस रह्या हरख्या छै देवर जैव।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माँको जाये बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी।

ओंढूतो हीरा झड़ झड़ पड़ मैलूँ तो तरसे बाई

रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी चौक्यां बस रह्या हरखी छै माँकी जाई भैण।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माँको जाये बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी।

ओंढूतो हीरा झड़ झड़ पड़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

चुनड़ी गीत

राताँ फूलाँ रिंगणी, कोई धोळाजी जायल रा फूल,

रातडल्या रँग चून्दड़ी।

घर जाया सुरजजी पूछ, घर आया गजानन्दजी पूछ,

घर आया देवी-देवता पूछ,

गोरी ए तन भालो कूण रातड़ल्या रँग चून्दड़ी-

बाल पण म्हारी माता प्यारी पूछजी जनमरा बापर-

रातड़ल्या रँग चून्दड़ी।

वर जोड़ी केशरियो प्यारो कड्या जी झड़ूलो पूत-

रातड़ल्या रँग चून्दड़ी।

तोरण

कांकड़ आयो राईबर थर-हर कांप्यों राज,

बूझो सिरदार बनी न कुण कामण गारा ओ राज।

म्हे नहीं जणां म्हारा ग्वाल्या कामण गारा ओ राज।

ग्वाल्या रो नेग चुकास्यां कामण ढीला छोड़ो राज।

छोड्या न छूटै राईबर जोर घुल्या छ राज।

बागां में आयो राईबर, थर हर कांप्यों राज,

बूझो सिरदार बनी न कुण कामण गारा ओ राज।

म्हें नहीं जाणां म्हारा माली कामण गारा ओ राज।

माली को नेग चुकास्यां कामण ढीला छोड़ो ओ राज।

छोड्या न छुटै राईबर गैरा घुल्या छ राज।

घोड़ी

बागा में घोड़ी ब्याही ओजी बनड़ा जी

थारा दादो जी मुलाई थारा ताऊजी मुलाई

गिरवर धारी कृष्णा मुरारी

राधा रूकमण प्यारी लाग हर प्यारी

बागां में घोड़ी ब्याही ओजी बनड़ा जी

थारो बापु जी मुलाई थारो चाचो जी मोल मुलाई ओजी बनड़ा जी

गिरवर धारी कृष्णा मुरारी राधा रुकमण नारी लाग हर न प्यारी

बागो मे बनड़ी ब्याहि ओजी बनड़ा जी

थारा बिराजी मुलाई थारा मामा जी मुलाई ओजी बनड़ा जी

गीर वर धारी कृष्णा मुरारी राधा रुकमण नारी लगा हर न प्यारी

थारा फुफा जी मुलाई थारा जीजाजी मुलाई ओजी बनड़ा जी

गीरवर धारी कृष्ण मुरारी राधा रुकमण नारी लाग हर न प्यारी।

थाम

खाती को बन खंड़ निसरो कांदे धरी कुआड़

माडलड़ो (श्रीराम) को श्रीराम मड़े यह वाड़ीयो

सुरज बाबो दि नड़ी डोर।

महादेव जी मड़ पढ़ वाड़ीयो इसरदास दिनड़ी डोर

बिन याक बाबो दि नड़ी डोर॥

थाम

खाती को वन खंड निसरो कांधे धरी कुंहाड़,

माडलड़ो (श्रीराम) को श्रीराम मड़ यह बाड़ीयो,

सूरज बाबा दिन्ही नड़ी डोर।

महादेवजी मड़ पढ़ बाड़ीयो, इसरदास दीनड़ी डोर,

विनायक बाबो दीन्ही नाड़ी डोर।

चाक

ऊँच खेड़ ए बसे ए कुम्हारी नीच बसे ये कुम्हार,

ये राय जादी ये कुम्हारी।

मांथाने मैमद हद बनो कुम्हारी रखड़ी को सर्व सुहाग,

ये राय जादी ये कुम्हारी।

गले नै हारज हद बनो कुम्हारी थारी चुड़लारो सर्वसुहाग

ये राय जादी ये कुम्हारी।

पगल्यानै पायल हद बनो कुम्हारी थार बिछीया रो पड़ी समझोल

ये राय जादी ये कुम्हारी।

कड़ी यानै दानव हद बनो कुम्हारी थार पील को सर्व सुहाग

ये राय जादी ये कुम्हारी।

मैं तो न्यारो लूं न्यारो खिड़की पर रै दोय म्हारा भावरीया।

मैं तो रोटू लूं रोटी कोटी मैं रे दोय म्हारा भावरीया।

जाय म्हारा भावरीया।

मैं तो बीनणी लूं बिनणी (कन्हैयालाल) के रै बीनणी बाबो कै रै दाय म्हारा भावरीया।

(चाक)

ऊँच खेड़ बस ए कुम्हारी, नीच बस ए कुम्हार

ये रायजादी ये कुम्हारी।

मांथा न मैंमद हद बनो कुम्हारी।

गलै न हारज हद बनो कुम्हारी थारे चुड़ला रों सर्वसुहाग,

ये रायजादी ये कुम्हारी।

पगल्यांन पायल हद बनो कुम्हारी थारी बिछिया रो पड़ो रमझोल,

ये राय्जादी ये कुम्हारी।

कड़ियां न दावण हद बनी कुम्हारी थारे पीलेको सर्व सुहाग,

यो राजजादी ये कुम्हारी।

मैं तो न्याणों लूं न्याणों खिड़की पर रे, दोय म्हारा भावरिया,

मैं तो रोटी लूं रोटी कोटी मैं रे, दोय म्हारा भावरिया।

मैं स्याणी लूं स्याणी (श्री गोपालजी) क जी,

जाय म्हारा भावरिया,

मैं तो बीणी लूं बीनणी (श्रीगोपालजी) क रे,
बीनणी बाबाजी क रे, दाय म्हारा भावरिया।

झोल

पहल मंगल सोम धई ए नूहाईया मेवा बरसन लाग्या।

अच्छा आड़ा तेरा बाबोजी झोल धलाईया मेवा बरसन लाग्या।

अच्छा लाड़ा तेरी मायेड़ मसल नूहाईया मेवा बरसन लाग्या।

घर चंदोवा छाईया तमोलड़ राच्या मेवाबरसन लाग्या।

दूजंड़ मंगल सोम नी नूहाईया मेवा बरसन लाग्या।

दाखरिया मन भाईया तमोलड़ राच्या मेवा बरसन लाग्या।

फेरों का गीत

पेलै तो फेरा लाडली दादाजी न प्यारी।
दूजै तो फेरा लाडली बाबाजी न प्यारी।
दूजै तो फेरा डाली जामीजी न प्यारी।
अगुआं तो फेरा लाडली काकाजी न प्यारी।
अगआं तो फेरा लाडली बीराजी न प्यारी।
अगुआं तो फेरा लाडली बीराजी न प्यारी।
चौथे तो फेरा लाडली होयी परायी॥

फेरों का गीत

धीमी धीमी चाल म्हारी रतन कंवरी,
रतन कंवरी म्हारी राजदुलारी।
पेलै तो फेरा बनड़ी दादाजी री पोती,
दूजै तो फेरा लाडली बाबाजी री बेटी।
दादाजी री पोती बनड़ी दादी जी री प्यारी।

आरतो

कूं कूं गार धुलाओ जी लीयो घण आँगणो।
मोत्या चौक पुरा ओ जी सिंधासन बैठगी॥
जहाँ लाडे लड़ो बढ़ाओ जी भुवाकर आखो।
मैं तो कर ये न जानू ये आरती लाड़ेलड़ारो आरती॥

सीढना

पानी गहरा सोना है आज राते के साढ़े बारह बजे बरातियों की लूटी लिलाम हो रही है।
जो किसी व्यक्ति को लेना हो सड़क पर आकर
हाजिर हो जाये एक टका दो टका साढ़े तीन टका।

पहरावाणी

थान माला पुवाय द्या जी सगाजी राम भजो,
हर लाडु की हर पेड़ा की हर बीच-बीच सांख जलेबी की,
गटकाय मती जाज्योजी माला मीठी छ।
माल लेर सिहराजा सुत्या सपनो आयो भूता को र पलीता को,
हर डाकण को, हर स्याली को,
थे डर मत जाज्यो जी माला सांची छ।
थान माला पुवाय द्या जी सगाजी माला जपो।

बिदाई गीत

जी मेहं थान बुझां म्हारी कंवर बाई ए,

म्हें थान बुझां म्हारी चतर बाई ए

इतरो दादाजी रो हेत, छोड़ र बाई सीध चाली ए।

इतरो बाबजी रो हेत, छोड़ र बाई सीध चाली ए।

आयो सगा रो सुवतो जी,

लेन्यो तोली म सुं टाल, कोयलड़ी अध मोलीए।

आयो सगा रो सुबटो जी,

लेम्यो लाडो न परणाय, कोयलड़ी अध भोली ए।

विदाई गीत

म्हार आंगण चिरमटड़ी से रुख म्हारा पिवजी

कोई समधी र आंगण केवड़ोजी।

फूल्यो फूल्यो चिरमठड़ी रो रुख म्हारा पिवजी

कोई महकण लान्यो केवड़ोजी।

दोनुं समधी बैठ्या जाजम ढाल म्हार पिवजी

कोई चौपड़ पासा ढलियाजी।

खेल्या खेल्या सारोड़ी रात म्हार पिवजी,

कोई चौपड़ पासा दालियाजी।

पूछे पूछे राजकंवर री माय म्हारा पिपवजी,

कोई कुण हार्‌या राजकंवर रा बाप धण गौरी

कोई कोटल समधी जीतियाजी।

हंसन्या मायला हसती क्यूं न हार्‌या म्हारा पिवजी,

म्हारी राजकंवर क्यूं हारियाजी।

हंसती देस्यां राजकंवर री दात धण गौरी

कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।

घुड़ला मायला घुड़ला क्यूं न हार्‌या म्हारा पिवजी,

म्हारी राजकंवर क्यूं हारियाजी।

घुड़ला देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी,

कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।

बुगचा मायला कपड़ा क्यूं हारियाजी।

कपड़ो देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी

कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।

डब्बा मायलो महणो क्यूं न हार्‌या म्हारा पिवजी,

म्हारी राजकंवर क्यूं हारियाजी।

महाणां देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी,

कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।

राजकंवर क्यूं हारियाजी।

महणां देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी,

कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।

राजकंवर है मोत्यां बिचली लाल म्हारा पिवजी,

कोई आंगण सोवे लाडलीजी।

पायो-पायो काचो तो दूध म्हारा पिवजी,

कोई मांय पताशा घोलणाजी।

उठ म्हारी बाई पहर पटोलो, कर गठजोड़ो

थांर बाबुजी वचनां हारियाजी।

कोट तल कर म्हारी बाई जावे पिवजी,

म्हारी कायर जीवड़ो होय रहुयोजी।

तुं म्हारा जीवड़ा कायर मतना हो म्हारा जीवड़ा

कोई आ ही सकल म होय रही जी।

विभिन्न गीत

घुँघटीयो

बनडी थार घुंघटीय र कारन

कजली देशा रा हस्ती लाया..... म्हारी रजवण

घुँघटीयो हीरा जडयो..... म्हारी रजवण

घुँघटीयो मोत्या जडयो॥

बनड़ी हीरा ये जडयो मोत्यां जडयो

थार घुँघटीयो म चाँद छुपस्या..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
बनड़ी थार घुँघटीय र कारन
लंका पारा रा सोनो ल्याया..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
दरिया पारां रा हीरा मोती....म्हारी रजवण
घुँघटीयो मोत्या जडयो॥
बनडी हीरा ये जडयो मोत्यां जडयो
थार घुंघटीयो म सोला सूरज उग्या..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो मोत्यां जडयो
बनडी थार घुँघटीय र कारन
दूरां देशा रा चाल्या आया.....म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
बनडी थार घुँघटीय र कारन
अपणी जोडी रा जानी ल्याया.... म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
चतरशाल बैठी बनड़ी पान चाब
कर ये बाबोसा स बिनती
बाबोसा देश देता परदेश दिज्यो
म्हारी जोडी रो बर हेरज्यो॥
कालो मत हेरो बाबोसा
कुल न लजाव
गरो मत हेरो बाबोसा
अंग पसीज
म्हारी जोड़ी रो बर हेरज्यो॥
लामोमत हेरो बाबोसा
साँगड छूट
ओछो मत हेरो बाबोसा
गीगलो बताव
म्हारी जोडी रो बर हेरज्यो॥
ऐसे बर हेरो बाबोसा
काशी रो बासी
बाईर मन भासी बाबोसा
हस्ती चढ आसी
म्हारी जोडी रो बर हेरज्यो॥
म्हे नहीं देख्यों म्हारी दादीसा नहीं देख्यो
दादीसा कैव बर हैं साँवलो
हँस खेल ये बाबोसारी प्यारी बनडी
हेरो छ फूल गुलाब रो॥

चिडकली

मैं तो बाबुल रे बागा की चिडकली
परदेशी सुवटीय र लार
बाबुल गँठ जोडो करयो॥
दादाजी खूब रूखाली म्हारी कोटरिया
दादीजी खूब खिलाया म्हान गोद
बाबुल गठ जोडो करयो॥
मैं तो संगरी सहेल्या रल खेलती
बीरोजी घणी तो पूजाई गणगौर
बाबुल गठ जोडो करयो॥
मैं तो मामे एक कंधोल्ये ले घुमती
मामीजी सुलझाया उलझेडा केश
बाबुल गठजोडो करयो॥
भावज खूब रचाई हाथा राचणी
भुवाजी घणां तो लडाया म्हारा लाड
बाबुल गठ जोडो करयो॥

बाबुल छोड चली थारो आँगणियों
मायड छोड चली थारो चूण
बाबुल गठजोडो करयो॥
बीरा नित ही जोऊँली थारी बाटलडी
लेवण आई रे सावणीय री तीज
बाबुल गठ जोडो करयो॥

चिरमटडी

म्हार आँगण चिरमटडी रो
रुप म्हार पीवजी
कोई समधीर आँगण केवडो जी
फूल्यो फूल्यो चिरमटड़ी रो
रुप म्हारा पीवजी
कोई अबकरणा रो केवडो जी॥
दोन्यूँ समधी बैठया जाजम बिछाय
म्हारा पीवजी कोई चोपड पासा घालीया जी।
बूझ बूझ राजकँवर रा बाबो घणघोरी
कोई पोडण समधी जीतीया जी।
म्हारी लाडो मोत्यां बीचली लाल
म्हारा पीवजी तोला बाई रा हँसती क्यूना हारया
म्हारा पीवजी म्हारी राजकँवर क्यूँ हारिया जी
पहली हारया तीन भवन नाथ घणघोरी
दूज हारया थान थारा बाबो घण घोरी
कोई पीछ म्हे भी हारिया जी।
उठ म्हारी बाई कर सोला सिणगार म्हारी कँवरी
पहर पटोलो ओढ़ दूरंगो जावो म्हारी कँवरी
थार बाबोजी बचन हारिया जी॥
घर सुनो कर चाली म्हारी बनड़ी
जीवडो ऊजल
रोयरोय जीवडा कायर मत ना
होया म्हारा मनडा
कोई आय सकलम रीत है।

आमली

जी आम्बा पाक्याना दोय आम्बली
जी पाक्यों आमलडा रो रुप
कोयल बाई सीद चाल्या।
जी माऊसा लहरा लेय
लाडल बाई सीद चाल्या॥
जी छोड दादोसारी आँगली
जी छोड दादीसारो हेत
कोयल बाई सिद चाल्या॥
जी म्हे थान पूछा म्हारी कँवर बाई
जी छोड सहेल्यां रो साथ
सोनल बाई सिद चाल्या॥
जी आयो सगारो सुवटे
जी ले गयो डोली म उठाय
कोयलडी अद बोली॥
जी रमती बाबोसार आँगण
जी छोड भाई बहनारो साथ
सुगन बाई सिद चाल्या॥

ओल्यूँ

ऊँची तो खीव ढोला बिजली
नीची को खीव खेनी वाली जी ढोला॥

ओजीवो गोरी रा लशकरीया
घडी दोय लशकर थामोजी ढोला
पलक दोय लशकर थामोजी ढोला॥
म्हारो तो थाम्यो लशकर नाथम
थार बाबासारो थाम्यो लशकर
थमसी ए गोरी॥
चढ़ो ये तो ओढ़ा चुनडी
रवौ ये तो दिखणी रो चीर जी ढोलां
नीरख चढांगा गोरी क चूनडी
आय नीरखाला दिखणी रो चीर ए गोरी
चढो ये चढावो ढोला के करो
क्यूँ तरसावो म्हारो जीव जी ढोला
थारी तो ओल्यू ढोला म्हे करा
म्हारी तो करे ना कोय जी ढोला॥
म्हारी तो ओल्यू गोरी थे करो
थारी तो करसी थारी माय जी गोरी॥

कामण

बन्ना बागा आय बिराज्याजी
रस कामणीया,
म्हारो माली बीन्द सरायोजी
रस कामणीया।
चालता की चाल बान्धू
देखता की नैन का बान्धू
घोड़ी चढ़ायो बीन्द वान्धू।
बीन्द को बड बीन्द बान्धू
बान्धू थारो कुटुम कबीलो ये
रस कामणीया॥
बन्ना शहरा आय बिराजाजी
रस कामणीया।
बन्ना तोरण आय बिराज्यारी
रस कामणीया।
म्हारा सगला बीन्द सरायोजी
रस कामणीया।
बन्ना फेरा आय बिराज्या जी
रस कामणीया।
म्हारा जोशी बिन्द सरायोजी
रस कामणीया।

चंवरी

तू चंवरी क्यू डगमगी थारा आला गीला बांसजी।
तू क्यूं डरपे लाडली थारा दादाजी बैठ्या पास जी।
तू क्यूं डरपे लाडली थारा बाबाजी बैठ्या पासजी।
डरपे नाचण रो लाडलो बांकै कोई ये न आयो साथजी।
डरपे हरमल रो लाडलो बां कै कोई ये न आयो साथजी।

कन्यादान

बाई रा बाबाजी कर कन्यादान, बडीयाणी बाई रा अरज कर,
बाई रा बापुजी देव कन्यादान, मायड़ बाई री अरज कर,
मती देवो जी कन्यादान, बाई म्हारी दो दिन री
मती बरजो ए घर री नार, आ रीत ह सार जग री,
बाई न राख जीयां ही रह जाय बेटी बाबुल री।
बाई न भेज जठ ही उड़ जाय, चिड़ीया बागां री।

बाई न बान्ध जठ ही बन्ध जाय, गइयाँ खुंटे री।
बाई रा काकाजी...।

बिड़ला

आमोल्या तो छाई सुख सेज, ऊपर छायो नीमड़ो जी।
ज्याँ चढ़ बेठ्या श्री राम तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।
आमोल्या तो छाई सुख से ऊपर छायो निमड़ो जी।
ज्यां चढ़ बेठ्यो लक्ष्मण बीर, तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।

फल सड़ो

म्हारा फलसड़ो कुणकुण काईया जी
म्हार बाबा जीरा (रमेश कुमार) आईया जी।
म्हार असरयो सारण आईया जी
म्हे तो उबड़ला जोव छा बाटड़ी जी

बिड़ला

आमोल्या तो छाई सुख सेज, ऊपर छायो नीमड़ो जी।
ज्याँ चढ़ बेठ्या श्री राम तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।
आमोल्या तो छाई सुख से ऊपर छायो निमड़ो जी।
ज्यां चढ़ बेठ्यो लक्ष्मण बीर, तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।

SINCE 1945
BHARTIYA JALPAN
• MITHAI • NAMKEEN • MEWA
1138, 100 Feet Road, 13th Main
Indiranagar, Bangalore - 560003
Ph : 080 2520 0055, 2520 0088

Where Quality is a Tradition.....
Bhartiya Jalpan
RENOWNED HOUSE OF TRADITIONAL INDIAN SWEETS
S. R. C. B. ROAD, GUWAHATI-781001
DIAL : 2514656, 2605368

Gangor GROUP

CROMA PLY

solid. versatile. powerful !

GANGOR

• MARBLE •

• MARKETING •

• INDUSTRIES •

F. A. Road, Kumarpara Panchali, Guwahati - 781001

Mob. 94351-06550